Publication date- 5th October 2025, Posting date- 9/10th October 2025. Place of posting- Naraina
संख्या No. U (W)-11/2024-26 PRGI No.DELBIL/2005/16236 | Postal Regn. No. DL (W) 10/2129/24-26

PRGI No. DELBIL/2005/16236

श्रद्धा सबूरी

श्री साई सुमिरन टाइम्स

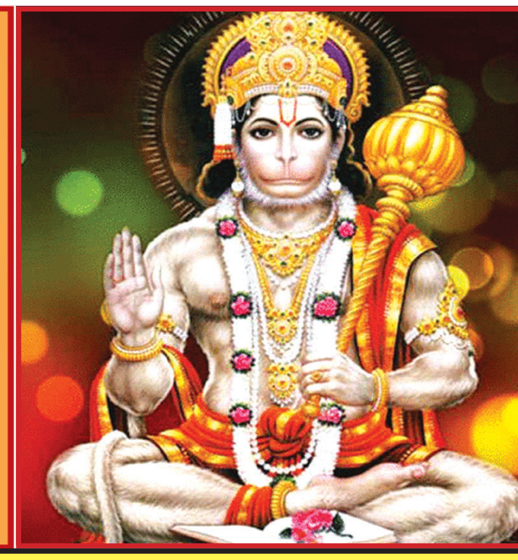

मासिक समाचार पत्र

वर्ष-22 अंक-1 नई दिल्ली अक्टूबर 2025 वार्षिक मूल्य 700 रू. (प्रति कॉपी 60 रू.) पृष्ठ-16

महिंद्रा एंड महिंद्रा कम्पनी द्वारा शिरडी संस्थान को इलैक्ट्रिक कार भेंट

शिरडी: श्री साई बाबा के दर्शन के लिए देश-विदेश से लाखों भक्त आते हैं। कई भक्त अपनी आस्था और भक्ति के अनुसार संस्थान को विभिन्न प्रकार का दान देते हैं। महिंद्रा एंड महिंद्रा कम्पनी पिछले कई वर्षों से अपने नए लॉन्च किए वाहन बाबा को दान करती आ रही है। इसी परम्परा को निभाते हुए कम्पनी ने अपनी हाल ही में लांच की गई EV9 इलेक्ट्रिक कार श्री साई बाबा संस्थान को दान दी जिसकी कीमत 28 लाख रूपये है। इस इलेक्ट्रिक कार की पूजा संस्थान के CEO श्री गोरक्ष गाडिलकर जी, महिंद्रा एंड महिंद्रा कम्पनी के CFO श्री राजीव गोयल और एरिया सेल्स मैनेजर श्री गणेश उसकुले द्वारा की गई। इस अवसर पर संस्थान के वाहन विभाग के प्रमुख श्री अतुल वाघ और PRO श्री दीपक लोखंडे मौजूद थे। पूजा के बाद कंपनी के अधिकारियों ने श्री गडिलकर जी को कार की चाबी सौंपी। श्री गडिलकर जी ने कम्पनी के अधिकारियों को संस्थान की तरफ से सम्मानित किया।

इससे पहले महिंद्रा एंड महिंद्रा कम्पनी संस्थान को कुल 23 वाहन दान कर चुकी है जिसमें 16 यात्री वाहन, 2 Two Wheelers, 2 ट्रैक्टर्स और 3 माल वाहन शामिल हैं।

मेरी शरण आ खाली जाये हो तो कोई मुझे बताये

सभी साई भक्तों को साई राम। बाबा का चौथा वचन, मन में रखना दृढ़ विश्वास, करे समाधि पूरी आस, को चरितार्थ करती एक सच्ची दास्तान मैं आप साई भक्तों से साँझा करना चाहता हूं। मेरी पत्नी का जन्मदिन 4 सितम्बर को होता है इस बार उसकी इच्छा थी कि ये जन्मदिन बाबा के साथ शिरडी में मनाया जाये। हम दोनों गाज़ियाबाद से 4 सितम्बर को सकुशल शिरडी पहुंच गए। इस बार हम सबसे पहले द्वारकामाई गए। बाबा के दर्शन किए और कुछ समय द्वारकामाई में ही बैठे रहे। ना जाने क्यों मैं मन ही मन बाबा से प्रार्थना करने लगा कि बाबा आप बहुत से भक्तों को अपने होने का एहसास दिलाते हो आज हमारे लिए भी एक चमत्कार करो। आज मेरी पत्नी का जन्मदिन है और वो बहुत श्रद्धा के साथ और आपके बुलाने पर ही आपके पावन दर्शन के लिए यहां आई है, कृपा कर या तो आप उसे अपने दर्शन दें या उसे अपने साथ होने का एहसास करायें। मैं बार-बार यही प्रार्थना कर रहा था। फिर कुछ समय बैठने के बाद हम द्वारकामाई से बाहर आने लगे तो मेरी पत्नी बाहर खड़े Security Guard से पूछना चाहती थी कि क्या हम रात को द्वारकामाई में बैठ सकते हैं, इतने में ही एक पंडित जी जो पहले द्वारकामाई में ही थे, बाहर से अन्दर आते हुऐ नज़र आए। मेरी पत्नी ने उनसे रात को द्वारकामाई में बैठने के लिए पूछा, तो उन्होंने कहा कि आप आ सकते हैं। ये कह कर जैसे ही वो आगे बढ़े, फिर पीछे मुड़ कर कहा, आप मेरे साथ दोबारा दर्शन के लिए अभी आओ। हम उनके साथ द्वारकामाई के अंदर चले गए। उन्होंने बाबा की धूनि के पास जाकर एक बोरी में से नारियल निकाला और बाबा के चरणों से एक छोटी सफेद मोगरे के फूलों की माला लेकर बाबा के चरणों से लगाकर मेरी पत्नी की झोली में डाल दिया और कहा यह बाबा की तरफ से, घर जाकर परिवार सहित ये नारियल प्रसाद खाना। यह देखकर हमारी आंखों में खुशी के आंसू आ गए। बाबा ने अपने होने का एहसास करा दिया और ये साबित कर दिया कि वह केवल सुनते ही नही हैं बल्कि बहुत जल्दी सुनते हैं। बाबा ने साई सच्चरित्र में भी कहा है कि मैं कभी उधार नहीं रखता, मेरे सब व्यवहार नकद ही होते हैं। द्वारकामाई दर्शन के बाद हम समाधि मंदिर गए वहां पर भी शेष पृष्ठ 14 पर

साई मंदिर रोहिणी में माता की चौकी

दिल्ली: शिरडी साई बाबा मंदिर रोहिणी में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी दिनांक 22 सितम्बर 2025 से 1 अक्टूबर तक नवरात्रों का त्यौहार श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस दौरान मंदिर को रंगबिरंगी लाइटों, गुब्बारों एवं फूलों से अति सुन्दर सजाया गया। मंदिर में पूरे 9 दिन तक भक्तों का मेला लगा रहा। नवरात्रों के दौरान 30 सितम्बर 2025 को मंदिर में माता की चौकी का आयोजन किया गया। बाबा के दरबार के सामने मंदिर के हॉल में मैय्या का अति सुन्दर दरबार सजाया गया। शाम 7 बजे से माता के भजनों का गुणगान श्री आद्य कात्यायनी सेवक सभा के कलाकारों द्वारा किया गया। सभी कलाकारों ने बारी-बारी से माता रानी की भेंटे सुनाकर अपनी-अपनी हाज़री लगाई। उनके भजनों ने शेष पृष्ठ 4 पर

साई धाम स्कूल फरीदाबाद में नवरात्र उत्सव

फरीदाबाद: दिनांक 22 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2025 तक साई धाम मंदिर में नवरात्रों को त्यौहार हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मंदिर को फूलों से अति सुन्दर सजाया गया। नवरात्रों के दौरान शिरडी साई बाबा स्कूल के बच्चों ने भी नवरात्रों का त्यौहार मनाया और केजी कक्षा के बच्चों ने रामलीला नाटक किया और छोटे-छोटे बच्चों ने श्रीराम, सीता, लक्ष्मण और हनुमान जी की भूमिकाऐं निभाई। सबने उनकी प्रस्तुति की बहुत सराहना की।

श्रद्धेय मोतीलाल गुप्ता जी गरीब बच्चों के लिए साई धाम स्कूल का संचालन कर रहे हैं जहां हज़ारों बच्चे नि:शुल्क शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। इस स्कूल में बच्चों को कॉपियां, किताबें यूनिफार्म आदि भी नि:शुल्क दिया जाता है। यहां हज़ारों बच्चे शिक्षा ग्रहण कर अपना भविष्य संवार रहे हैं जिसका श्रेय श्रद्धय श्रीमोती लाल गुप्ता जी को जाता है।

-के.ए. पिल्ले

सम्पादकीय

सभी दोस्तों को दीपावली की शुभकामनाऐं देते हुए हम दुआ करते हैं कि आप सबके जीवन में खुशियों के दीप सदा जगमगाते रहें। साथ ही हम दुआ करते हैं कि आप सबके मन में साई भक्ति का दीप सदा प्रज्वलित रहे। दोस्तों, इसी उद्देश्य से श्री साई सुमिरन टाइम्स अखबार की शुरूआत हुई। हमारा उद्देश्य घर घर में साई भक्ति का दीप जलाना है। बाबा की कृपा से श्री साई सुमिरन टाइम्स का सफर 21वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। हम अपने सभी विज्ञापनदाताओं के, सभी सदस्यों के और उन सभी भक्तों के शुक्रगुज़ार हैं जिनके सहयोग से हम इतना लम्बा सफर तय कर पाये। हम उन सभी साई मंदिरों के भी शुक्रगुज़ार हैं जो श्री साई सुमिरन टाइम्स लेकर अपनी तरफ से इसका वितरण करके बाबा के संदेशों को जन–जन तक पंहुचाते हैं। आप सबके सहयोग से हमारा हौंसला बढ़ता है और हम आगे बढ़ पाते हैं। मैं आप सबका तहेदिल से शुक्रिया अदा करती हूं। श्री साई सुमिरन टाइम्स में हम दुनियां भर के साई भक्तों के बाबा के साथ हुए अनुभव प्रकाशित करते हैं क्योंकि बाबा के चमत्कार पढ़कर बाबा के प्रति विश्वास बढ़ता है और साथ ही हमें अंधेरे में रोशनी की एक किरण नज़र आती है। दुख के दिनों में हमारे अपने रिश्तेदार या दोस्त हमसे चाहे मुंह फेर लें, लेकिन बाबा को श्रद्धापूर्वक याद करो तो बाबा अपने भक्तों की पुकार तुरन्त सुनते हैं और किसी न किसी रूप में आकर अपने भक्तों की मदद करते हैं। यही कारण है कि साई भक्तों की संख्या बढ़ती जा रही है जितनी भीड़ साई मन्दिरों में नज़र आती है उतनी कहीं और नज़र नहीं आती। दोस्तों, बाबा से दुआ करती हूं कि आप सबका का सहयोग हमें भविष्य में भी मिलता रहे और बाबा की कृपा हम पर बनी रहे ताकि श्री साई सुमिरन टाइम्स का यह सफर जारी रहे और घर बैठे नित नई खबरें और बाबा के लेख व चमत्कार आप तक पंहुचते रहें। **–अंजु टंडन**

श्री साई सुमिरन टाइम्स परिवार की तरफ से आप सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाऐं

राधा कुंड पर साई बाबा का कृपामय आशीर्वाद

रविवार, 31 अगस्त 2025, मैं गौरी ओबराय और मेरे पति दिल्ली से राधा कुंड गए। हमें बिल्कुल पता नहीं था कि आज राधा अष्टमी है। राधा रानी का जन्मदिन है। यह सचमुच दिव्य आश्चर्य था। चलने से पहले हमने मौसम का हाल देखा। उसमें 85 प्रतिशत बारिश की संभावना थी और दिल्ली में कई दिनों से तेज़ बारिश हो रही थी। फिर भी भीतर से मुझे विश्वास था कि जब ईश्वरीय बुलावा आता है तो प्रकृति भी सहयोग करती है। और ऐसा ही हुआ। हमारे पूरे 12 घंटे के सफर में कहीं भारी बारिश नहीं हुई, केवल हल्की फुहारें हुई जो आशीर्वाद सी लगीं।

कुछ दिन पहले मैंने साई बाबा से एक विशेष प्रार्थना की थी। बाबा, कृपया मानव रूप में आकर मेरे सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दीजिए। पाँच दिन बीत गए, मैं शांत प्रतीक्षा करती रही पर भीतर से जानती थी कि बाबा अपने दिव्य समय पर अवश्य कृपा करेंगे।

राधा कुंड पर प्रार्थना और आरती के बाद जैसे ही मैं बाहर निकली और सीढ़ियाँ चढ़ने लगी, तो देखा एक वृद्धा वहाँ बैठी भिक्षा माँग रही थी। मैंने उन्हें 20 रूपये दिए और आगे बढ़ गई। तभी थोड़ी दूरी पर एक और वृद्धा, श्वेत साड़ी में, जिनके मुखमंडल पर दिव्य आभा झलक रही थी, उन्होंने मुझे पास बुलाया। उन्होंने हथेली फैलाई और मैंने प्रसन्न मन से पर्स खोला। जो नोट मेरे हाथ में आया वह 50 रूपये का था, और मैंने हर्षपूर्वक उन्हें अर्पित कर दिया। मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उन्होंने कहा, 'रूको' और फिर मेरे सिर पर अपना हाथ रखकर आशीर्वाद दिया। 'सदा खुश रहो।'

उस क्षण मेरे हृदय ने जान लिया, यह स्वयं बाबा ही थे, राधा माँ के रूप में, उस वृद्धा के द्वारा मेरे लिए वही आशीर्वाद पूर्ण कर रहे थे, जिसकी प्रार्थना मैंने की थी और उसी पल हल्की बूंदाबांदी शुरू हो गई, मानो सम्पूर्ण सृष्टि भी इस कृपा का उत्सव मना रही हो। सचमुच, बाबा की लीलाएँ अद्भुत हैं। वे हमसे केवल श्रद्धा और सबुरी माँगते हैं और फिर अपने सही समय और अपनी अद्वितीय रीति से उत्तर देते हैं, हमारी कल्पना से भी परे।

–गौरी ओबराय, दिल्ली

वो मेरे साई की ही कृपा थी

मेरे जीवन में बाबा के अनेक अनुभव हुए हैं। एक बार हमारे साथ बाबा ने जो चमत्कार किया वो मैं आप सबको बताना चाहती हूं। हम हर साल बाबा के दर्शन करने शिरडी जाते हैं। एक बार 5 जनवरी को हम शिरडी गए। हमारी जाने के लिए टिकटें कन्फर्म थी लेकिन आने वाली टिकटें वेटिंग में थी। हमने सोचा कि बाबा ने जब बुलाया है तो वो वापस भी अपने आप भेजेंगे। हम शिरडी पहुंचे बाबा ने हमें बहुत अच्छे दर्शन दिए। हमने 7 तारीख को वहां से वापस आना था। हमारी वापस आने की टिकटें कन्फर्म नहीं हुई। हमारे पास ई–टिकट थी जो कि कन्फर्म ना हो तो कैंसिल मानी जाती है। वापस घर तो जाना ही था अत: हम बाबा का नाम लेकर मनमाड स्टेशन पर आ गए। वहां पर टी.टी. खड़ा था। लेकिन ट्रेन अभी नहीं आई थी। मेरे पति ने टी.टी. से बात की कि हमारी टिकटें कन्फर्म नहीं हुई हैं तो उसने बोला कि तुम ऐसे नहीं चढ़ सकते। इतने में ट्रेन आ गई। लोग चढ़ने लगे लेकिन हम लोग नीचे खड़े ट्रेन को देख रहे थे। मैंने बोला, बाबा जब तक हम इस ट्रेन में नहीं बैठेंगे आप आज ये ट्रेन नहीं चलाओगे। जो ट्रेन मनमाड में 10 मिनट रूकती है वो आधा घंटा रूकी रही फिर मेरे पति ने टी.टी. से दोबारा बात की तो उसने बोला कि तुम 3rd A.C. में बैठ जाओ। जैसे ही हम ट्रेन में चढ़े तो ट्रेन चल पड़ी और उस टी.टी. को जब मेरे पति 2nd A.C. की टिकटों के लिए पैसे देने लगे तो उसने कहा कि नहीं मैं 3rd A.C. में ही तुम्हारे लिए सीटें देखता हूं थोड़ी देर बाद उसने हमें 3rd A.C. की टिकटें बना कर दी। ये मेरे साईनाथ की कृपा नहीं तो और क्या है? ऐसी ही साईनाथ की कृपा अपने भक्तों पर बनी रहे।

–साई भक्त

साई कृपा

श्री साई बाबा संस्थान द्वारा संचालित शिरडी स्थित श्री साई बाबा सुपरस्पेशलिटी अस्पताल में हाल ही में चिकित्सा जगत

में एक दुर्लभ और अद्भुत संयोग घटित हुआ। बुलढाणा ज़िले के शेगांव तालुका के नागज़ारी (महाराष्ट्र) की रहने वाली 42 वर्षीय एक जैसी जुड़वां बहनों– सुनीता सावे और दुर्गा उगले में एक जैसे ब्रेन ट्यूमर का निदान किया गया। आश्चर्यजनक रूप से, दोनों बहनों में टयूमर का आकर, स्थान, पक्ष और रूप (हिस्टोपैथोलॉजी) बिल्कुल एक जैसा था। श्री साई बाबा सुपरस्पेशलिटी अस्पताल के न्यूरोसर्जन डॉ. मुकुंद चौधरी ने आधुनिक तकनीक और न्यूरो माइक्रोस्कोप की मदद से दोनों बहनों के ब्रेन टयूमर की सफलतापूर्वक सर्जरी की और दोनों मरीज़ अब पूरी तरह स्वस्थ हैं।

दुर्गा उगले को लगातार सिरदर्द की समस्या थी और आठ महीने पहले डॉ. चौधरी ने उनकी जांच की थी। MRI में मस्तिष्क के बाई ओर 5X5 सेमी आकार का ट्यूमर (लेफ्ट फ्रंटल एस.ओ.एल.) पाया गया। सर्जरी सफल रही। अगली जांच के दौरान, उसकी जुड़वां बहन सुनीता सावे ने भी सिरदर्द की शिकायत की। MRI स्कैन के दौरान उसके मस्तिष्क में एक ही आकार और स्थान का ट्यूमर पाकर मेडिकल टीम हैरान रह गई। जब दोनों बहनों के ट्यूमर के टुकड़ों की माइक्रोस्कोप से जांच की गई, तो पता चला कि वे बिल्कुल एक जैसे थे। डॉ. मुकुंद चौधरी ने कहा, 'हालांकि जुड़वां बच्चों में एक ही बीमारी होना आम बात है, लेकिन एक ही जगह, एक ही तरफ, एक ही आकर और रूप का होना और एक ही न्यूरोसर्जन द्वारा सफल सर्जरी होना बहुत दुर्लभ है।' ये दोनों सर्जरीयां महात्मा ज्योतिबा फुले जन आरोग्य योजना के तहत पूरी तरह से नि:शुल्क की गई। न्यूरोसर्जन डॉ. मुकुंद चौधरी, न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. संतोष सुरवसे, डॉ. निहार जोशी और पूरी न्यूरो ओ.टी. टीम ने इस सफल उपचार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। मरीज़ और उनके परिवारों ने श्री साईबाबा संस्थान का हार्दिक आभार व्यक्त किया। संस्थान के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री गोरक्ष गाडिलकर उपमुख्य अधिकारी श्री भीमराज दराडे, चिकित्सा निर्देशक लेफ्टिनेंट कर्नल डॉ. शैलेश ओक, चिकित्सा निर्देशक डॉ. प्रीतम वडगवे ने इस सफल कार्य के लिए पूरी मेडिकल टीम को बधाई दी। **–निलेश संकलेचा**

साई एक रक्षक

अपने पिछले कर्मों का फल–अच्छा या बुरा–अवश्य भोगना चाहिए, अगर आनंद अधूरा है, तो आत्महत्या आपकी मदद नहीं करेगी। तुम्हें एक और जन्म लेना होगा और फिर से कष्ट उठाना होगा, तो क्यों न स्वयं को मारने के बजाय, क्यों न कुछ समय के लिए पीड़ित होकर अपने पिछले कर्मों के फल के भंडार को समाप्त कर दिया जाए और हमेशा के लिए उसका उपयोग किया जाए?' अध्याय 16 –श्री साई सच्चरित्र

2017 तक दीप साई बाबा से काफी अनजान थे और उन्हें केवल अपने दोस्त के माध्यम से जानते थे जो अपनी पत्नी के साथ शिरडी आया करता था। उन्होंने अपने मित्र से बिना किसी अपेक्षा या योजना के शिरडी से साई की एक तस्वीर लाने की प्रार्थना की। उनके मित्र ने उन्हें बाबा की एक खूबसूरत तस्वीर दी, जिसे फिर दीप ने अपने घर में सजाया। इस तरह साई बाबा बिना किसी साज–सामान के दीप के घर में प्रकट हुए। और आज दीप को लगता है कि उनकी हर सांस भगवान साई का आशीर्वाद है और साई ही सुख और शांति का एकमात्र रास्ता है। वह अपने जीवन के प्रत्येक क्षण में उनकी दया और कृपा को महसूस करते हैं।

कुछ वर्ष बीत गए और 2019 में, दीप अचानक एक गंभीर न्यूरोलॉजिकल डिसऑर्डर से ग्रस्त हो गए, जिसे क्रॉनिक न्यूरोपैथी का मामला कहा जाता है, उससे वह एक विशेष परिस्थिति में थे जिससे उनकी गतिशीलता नष्ट हो गई थी। दोस्त और परिवार उनके साथ थे लेकिन नौकरी छूट जाने से एक साइलेंट किलर की भूमिका निभाई और वह मानसिक तनाव की स्थिति में चले गए।

2020 में कोविड के खतरे ने पूरी दुनिया को प्रभावित किया और भारत भी लंबे समय तक लॉक डाउन में रहा जिसने चिकित्सा जगत के पूरे लॉजिस्टिक्स को परेशान कर दिया और इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती होने के लिए नए प्रोटोकॉल भी लागू हो गए। ऐसे परिदृश्य में मई के पहले सप्ताह के आसपास दीप गंभीर रूप से बीमार पड़ गए, जिससे उन्हें तत्काल अस्पताल में भर्ती करने की आवश्यकता पड़ी और 48 घंटे तक एक आइसोलेशन रूम में रहने के बाद उनका वास्तविक इलाज शुरू हुआ और उन्हें एक कमरे में स्थानांतरित कर दिया गया, जहां वह दिन में एक बार अपने परिवार से मिल सकते थे। उनके संक्रमण का इलाज हो गया था और वह बेहतर हो रहे थे लेकिन चौथी सुबह उन्हें उल्टी होने लगी जिससे शरीर के अन्य आवश्यक मापदण्ड बिगड़ गए। उसके बाद लगभग 3 घंटे में उन्हें लगने लगा कि वह अपनी आवाज़ खो रहा है और उनका जबड़ा टेढ़ा हो रहा है और मुट्ठी व हथेलियां खुलने से इनकार कर रही है। डॉक्टर ने उन्हें एक आपातकालीन इंजेक्शन दिया और एम.आर.आई. स्कैन के लिए भेजा और फिर तुरंत आई.सी.यू. में स्थानांतरित कर दिया गया।

वह सोच रहे थे कि उन्हें लकवा का दौरा पड़ा है और निचले अंगों की गतिशीलता खोने के बाद, वह अपने हाथ भी खोने जा रहे थे। एम.आर.आई. स्कैन के लिए जाते समय स्ट्रेचर पर उन्हें नींद आ रही थी, लेकिन वह साई से प्रार्थना कर रहे थे कि वह उन्हें बचा लें और उन्हें पूरी तरह से विकलांग न बना दें। वह सो गए और अपनी बेहोशी में उन्होंने महसूस किया कि वह बहुत तेज़ी से एक गहरी अंधेरी सुरंग में जा रहे हैं और सुरंग का कोई अंत नहीं है। वह डर गए और उन्होंने सोचा कि उनका अंत आ गया है...उन्हें एक उज्जवल प्रकाश दिखाई दिया और उनका तेज़ी से सुरंग में गिरना बंद हो गया और जैसे ही उन्होंने सोचा कि वह सुरंग के अंत तक पहुंच गए हैं, अचानक उन्होंने साई बाबा को अपने आशीर्वाद मुद्रा में देखा जैसे उनके घर की तस्वीर में थे, उन्हें गिरने का अहसास बंद हुआ और अंधेरा गायब हो गया और श्री साई बाबा एक सूर्यदर्श के साथ उभरे। इसके बाद उन्हें कुछ भी याद नहीं..

6 घंटे की गहरी नींद के बाद जब वह उठे तो उन्होंने खुद को आई.सी.यू. में चिकित्सा उपकरणों और नर्सों से घिरा पाया। उन्हें याद आया कि कुछ घंटे पहले उनके साथ क्या हुआ था और उन्होंने बात करने की कोशिश की और अपनी आवाज़ सुन सके। उन्होंने अपनी मुटठी खोलने की कोशिश की और धीरे–धीरे साई की कृपा से वह अपने हाथों को फैलाने और हिलाने में सक्षम हो गए, जो कुछ घंटे पहले जाम हो गए थे। साई की कृपा से दीप को नया जीवन मिला।

उस दिन से साई ही उनके लिए जीवन का मार्ग हैं, वह साई, साई, साई और साई में रहते और सांस लेते हैं और साई उनके जीवन में लगभग हर दिन चमत्कारों से उन्हें विस्मित करना बंद नहीं करते।

–दीप खेमका, कोलकाता
आभार: मिरेकल्स ऑफ साई फॉरएवर एंड बियॉन्ड

श्री साई सुमिरन टाइम्स
की सदस्यता लेने के लिए जानकारी

भारत में वार्षिक मूल्य डाक द्वारा 700 रू. व कोरियर द्वारा 1000 रू. आजीवन सदस्यता 11000 रू., विदेशों में वार्षिक मूल्य 2500 रू.

आप अपना सदस्यता शुल्क Paytm, M.O. या QR Code द्वारा या श्री साई सुमिरन टाइम्स के HDFC बैंक, खाता संख्या 01292000015826, IFSC: HDFC0000129 में Net banking या चैक से जमा कर सकते हैं। अथवा State Bank of India, खाता संख्या 35247638760, IFSC: SBIN0017413 में जमा कर सकते हैं। Ch/DD in F/o Shri Sai Sumiran Times. कृपया राशि जमा करने की सूचना अवश्य दें। आप अपना पता व फोन न. हमें email/whatsapp/sms या डाक द्वारा भेज सकते हैं। हमारा पता है: श्री साई सुमिरन टाइम्स, F-44-D, MIG Flats, Hari Kunj Society, Hari Nagar, New Delhi - 110064.
Ph: 9212395615, 9818023070, Email: saisumirantimes@gmail.com

नोट: इसमें विज्ञापन देने के लिए भी सम्पर्क कर सकते हैं।

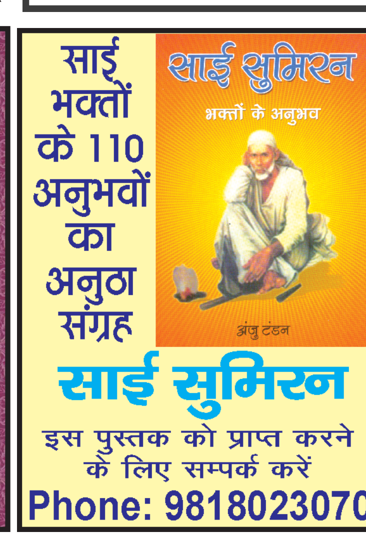

श्रद्धांजली

दिनांक 23 सितम्बर 2025 को बाबा के अनन्य भक्त और शिरडी साई बाबा मंदिर, प्रति शिरडी, पुणे के संस्थापक ट्रस्टी श्री प्रकाश देवले जी के अचानक व असामयिक निधन की खबर ने सबको चौंका दिया। श्री साई सुमिरन टाइम्स परिवार की तरफ से बाबा से दुआ करते हैं कि बाबा उनकी पावन आत्मा को शान्ति प्रदान करें व उनके परिवार के सदस्यों को इस सदमे को सहने की शक्ति दें। –अंजु टंडन

हमारी सोच से परे हैं बाबा की लीलाऐं

जब हमें बाबा पर पूरा विश्वास होता है तो बाबा अपने भक्तों के विश्वास को और भी दृढ़ कर देते हैं। ऐसा ही अपना एक अनुभव मैं आप सबको बताना चाहती हूं। यह बात एक साल पहले की है। मैं जिस कम्पनी में काम करती थी उसके CEO ने कहा कि हमें अपनी वेबसाइट में सुधार करना है। कोई भी अगर हमारी वेबसाइट देखे तो उसे वो मज़ेदार लगे। ऐसा प्रोजेक्ट भारत में थोड़े कम पैसों में हो जाता है इसलिए उन्होंने भारत के साथ कनैक्शन बनाए और मुझे भी उस टीम में शामिल कर लिया क्योंकि मैं भारत की कई भाषाऐं जानती हूं। मैंने कई मीटिंग की पर जो मेरी पहली मीटिंग थी उसमें मैंने जिस व्यक्ति से बात की वो मुझे दूसरों की मदद करने वाले लगे। बात करते समय मुझे पता चला कि ये वही कम्पनी है जिसमें मेरी सहेली उर्मिला काम करती है और मैं जिनसे बात कर रही थी उनका नाम राहुल है। राहुल ने बताया कि मेरी सहेली उर्मिला उसकी दोस्त है। मुझे यह जानकर बहुत हैरानी हुई कि भारत में इतनी सारी कम्पनियां हैं लेकिन मुझे मेरी सहेली की कम्पनी में ही बात करने का मौका मिला। मुझे लगा कि मैं सात समुन्दर पार बैठी हूं ये दुनिया कितनी छोटी है।

समय बीतता गया वेबसाइट का काम चलता रहा। एक दिन मेरी सहेली का मैसेज आया कि राहुल मुझसे शादी करना चाहता है। यह सुनकर मैं हैरान हो गई। मैंने उसे बधाई दी और बाबा से प्रार्थना की कि वो अपना आशीर्वाद उर्मिला पर बनाए रखें। तब उर्मिला का मैसेज आया कि मुझे तुम पर पूरा विश्वास है और उसने कहा कि काश तुम शिरडी जाकर बाबा से मेरे लिए बात करती। वो साई भक्त नहीं है पर उसने बाबा के बारे में सुना है और वो जानती है कि मैं साई भक्त हूं और मुझे बाबा में बहुत विश्वास है और मैं बाबा से पूछे बिना कोई काम नहीं करती। शायद इसलिए वो चाहती थी कि मैं बाबा से उसके बारे में बात करूं। मैंने उसके लिए प्रार्थना तो की पर साथ ही उसको थोड़ा फटकारा कि मेरे में विश्वास रखने की जगह तुम्हें बाबा में पूरा विश्वास रखना चाहिए, मैं सात-समुन्दर पार रहती हूं, बाबा की शिरडी से दूर रहती हूं, पर बाबा हमेशा मेरे साथ ही रहते हैं। उर्मिला ने कहा कि मैं जानती हूं कि आपको बाबा पर विश्वास है इसलिए मुझे आपकी मदद की ज़रूरत है। मैंने कहा कि मैंने सब कुछ बाबा के चरणों में समर्पित किया हुआ है। मैं दूर रहती हूं पर मेरी आत्मा बाबा के चरणों में रहती है। कुछ समय बाद उर्मिला का फोन आया कि वो राहुल के साथ सगाई करने जा रही है। मैं ये सुनकर खुश हुई पर पता नहीं मुझे ये सब अन्दर से कुछ अटपटा सा लगा। मैंने बाबा से उसके लिए प्रार्थना की। समय बीतता गया उर्मिला के फोन आते रहते थे। उसकी बातों से लगता था कि राहुल एक सभ्य और अच्छा इंसान है। धीरे-धीरे उर्मिला, राहुल के बारे में कुछ अजीब बातें भी बताने लगी। मैं उसे कहती थी कि तुम सब कुछ बाबा पर छोड़ दो। उसकी बातों से मुझे भी राहुल के बारे में कुछ अजीब लगता था लेकिन मैं चुप रही। मैं बाबा से उसके लिए प्रार्थना करने लगी कि बाबा आप उसकी सहायता करें और उसका ध्यान रखें।

एक दिन ऑफिस से आकर शाम को मैं पूजा करने बैठी। मैं श्री साई सच्चरित्र पढ़ने बैठी पर मन इतना विचलित था कि कई बार कोशिश करने पर भी मैं पारायण नहीं कर पाई। तब मैंने सोचा कि पहले शिरडी संस्थान का ऐप खोलकर बाबा के लाईव दर्शन ही कर लेती हूं, इससे मेरा मन शांत हो जायेगा और फिर मैं श्री साई सच्चरित्र का पारायण कर पाऊंगी। मैंने पहले कभी ऐप के द्वारा बाबा के लाइव दर्शन नहीं किए थे। मैंने स्क्रीन पर बाबा के दर्शन किए, उनका मुस्कुराता हुआ चेहरा देखकर मन को कुछ शान्ति मिली। उसी क्षण मैंने देखा कि वहां राहुल बाबा के दर्शन कर रहा है, मैं हैरान हो गई। मैंने देखा कि उसके साथ एक औरत भी है जिसने लाल चूड़ियां पहनी हैं और उसकी मांग में सिन्दूर भी लगाया हुआ है। राहुल उसके कंधे पर हाथ रखे हुए था, दोनों ने बाबा के सामने माथा टेका। मुझे यह देखकर बड़ी हैरानी हुई। मैंने सोचा कि क्या ये सब बाबा की लीला है कि मेरा मन इतना विचलित हो गया कि मैं ऐप खोलकर दर्शन करने लगी जो मैंने पहले कभी नहीं किए थे। शायद बाबा मुझे राहुल की सच्चाई दिखाना चाहते थे कि वो पहले से ही शादीशुदा है और मेरी सहेली को धोखा दे रहा है। बाबा ने ही उस समय मुझे बुद्धि दी और मैंने उस दृश्य का स्क्रीन शॉट ले लिया। बाबा ने मुझे राहुल की सच्चाई दिखा दी थी। मैंने वो स्क्रीन शॉट उर्मिला को भेज दिया। उसने पता लगाया तो उसे पता चला कि राहुल पहले से ही शादीशुदा है और वो चालकी से उससे भी शादी करना चाह रहा था। बाबा की ये अद्भुत लीला देखकर मैं बहुत हैरान थी। क्यों मैं इतनी विचलित थी? क्यों मैं पारायण नहीं कर पा रही थी? क्यों बाबा ने मुझसे संस्थान का ऐप खुलवाया, दर्शन करवाए और राहुल को उसी क्षण भेजा ताकि मैं उसकी सच्चाई देख पाऊं। मैंने उर्मिल को बाबा के हाथ में सौंप दिया था और बाबा ने मुझे सच्चाई दिखा दी। बाबा केवल मेरी ही मदद नहीं करते बल्कि बाबा उनकी भी मदद करते हैं जिनका बाबा पर विश्वास नहीं है। फिर मैं बाबा के पास बैठ गई और बहुत रोई। मैंने बाबा का आभार प्रकट किया। मुझे ये एहसास होने लगा कि बाबा अपने कहे वचन आज भी निभाते हैं। बाबा का ये वचन 'त्याग शरीर चला जाऊगा, भक्त हेतु दौड़ा आऊंगा', बिल्कुल सत्य साबित हुआ। बाबा सच में आ गए और उन्होंने उर्मिला की ज़िंदगी बर्बाद होने से बचा ली। बाबा हर समय अपने भक्तों के, अपने बच्चों के साथ खड़े रहते हैं। बाबा ने मुझे उस वेबसाइट की टीम में इसलिए शामिल नहीं किया गया था कि मुझे कई भारतीय भाषा आती है बल्कि ये सब बाबा की बनाई हुई पहले की योजना थी कि मुझे उर्मिला से मिलना था और बाबा ने मेरे द्वारा उसकी मदद करनी थी। हम बाबा की योजनाओं को कभी जान नहीं पाऐंगे कि कब, क्यों और कहां सब कुछ हो रहा है। हम बाबा की कृपा का कर्ज़ कभी चुका नहीं सकते। हमें बाबा पर पूर्ण श्रद्धा और विश्वास रखना चाहिए। ओम साई राम। –उर्वशी

जन्मदिन मुबारक

2 अक्टूबर भीम आनंद | 2 अक्टूबर अनुपमा देशपांडे | 5 अक्टूबर कमला वर्मा
5 अक्टूबर विजया आर्य | 5 अक्टूबर परेश पटेल | 6 अक्टूबर वेंकेटरमन
8 अक्टूबर नवीन ग्रोवर | 10 अक्टूबर जय शंकर वर्मा | 13 अक्टूबर राजेश अरोड़ा
15 अक्टूबर प्रमोद मेढ़ी | 17 अक्टूबर भारती रावल | 18 अक्टूबर आशा गांधी
19 अक्टूबर नरेन्द्र नाशिरकर | 24 अक्टूबर साहिल कोहली | 26 अक्टूबर पंकज महाजन
29 अक्टूबर विजय मैंगी | 30 अक्टूबर आर.के. सक्सैना | 30 अक्टूबर संगीता ग्रोवर

बधाईयां

31 अक्टूबर को संजय उप्पल एवं मोनिका उप्पल को शादी की सालगिरह की हार्दिक बधाई।

हमें ये बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि अब आप सब साई बाबा की देश विदेश की खबरें, भक्तों के अनुभव, बाबा के अनूठे चमत्कार व बाबा के विभिन्न live कार्यक्रम, श्री साई सुमिरन टाइम्स की YouTube Channel पर भी निःशुल्क देख सकते हैं। इसके लिए आप सबसे अनुरोध है कि आप सब अपने फोन पर Shri Sai Sumiran Times की YouTube Channel को subscribe करें।

Parmhans Enterprises
Disposable & Safety Items
Disposable Bed Sheet, Dispo Panty, Dispo Gown, Letex Gloves, Gillette Razor, Dispo Towell, Dispo Tissue, Dispo Face Mask, Dispo Bra, Dispo Cap, Dispo Shoes Natral Gloves, Dispo Hair Band, Cover Surgi Care Gloves M Fold C Fold, Tissue Box,

Customer Care No.
08700652184
E-mail : parmhans.kedar@gmail.com

श्रद्धांजली

दिनांक 25 सितम्बर 2025 को बाबा के परम भक्त श्री ओंकार नाथ अस्थाना जी सदा के लिए बाबा के चरणों में लीन हो गए। उनकी निधन की दुखद खबर ने सबको सदमें में डाल दिया। श्री ओंकार नाथ अस्थाना जी ने अपना जीवन बाबा को समर्पित कर दिया था। उन्होंने राजपार्क, नांगलोई में गौरी शंकर मन्दिर में श्री साई बाबा की मूर्ति स्थापना करवायी जहां वो स्वयं बाबा की सेवा करते थे। उन्होंने साई माऊली ट्रस्ट का गठन किया। इस ट्रस्ट के अन्तर्गत वो अनेक समाज सेवा के कार्य, साई भजन संध्या, शिरडी यात्रा व अन्य मानव सेवा के कार्य करते रहे। उन्होंने अपना पूरा जीवन बाबा और बाबा के भक्तों की सेवा में व्यतीत किया। श्री साई सुमिरन टाइम्स परिवार की तरफ से बाबा से दुआ करते हैं कि बाबा उनकी पावन आत्मा को शान्ति प्रदान करें और उनकी पत्नी श्रीमती अस्थाना, बेटियां श्रीमति पूनम व सुश्री हिमांशी अस्थाना और परिवार के सभी सदस्यों को इस गहरे सदमे को सहने की शक्ति दें। –अंजु टंडन

स्वयं बुलाते हैं बाबा

मैं आपके साथ अपनी कुछ बातें और किस तरह मैं बाबा से जुड़ा यह मैं बताना चाहता हूं। मैं इंडिगो में एक उच्च पद पर काम करता हूं। मैं दिन में 16-17 घंटे काम करता हूं। जिससे मैं थक जाता हूं और मेरे पास इतना समय भी नहीं होता कि मैं कुछ और कर सकूं। मेरी पत्नी गौरी मेरे साथ कॉलेज में पढ़ती थी। वो साई बाबा को बहुत मानती है। वो मुझे कॉलेज से कई बार साई बाबा के मंदिर ले जाती थी। उसको बाबा में 100 प्रतिशत विश्वास था और मुझे 100 प्रतिशत विश्वास नहीं था। शादी के बाद मैं कई बार गौरी के साथ शिरडी गया पर मुझे बाबा के प्रति कोई श्रद्धा या विश्वास उत्पन्न नहीं हुआ। गौरी कई बार मुझे बताती थी कि देखो यह मेरे साथ चमत्कार हुआ है। जबकि कई बार चमत्कार मेरे सामने ही होता था, लेकिन बाबा पर मेरी आस्था बिल्कुल नहीं हो रही थी।

आज से डेढ़ दो साल पहले की बात है, मैं कोई वीडियो देख रहा था उसमें बताया गया था कि ओम नमः शिवाय का क्या मतलब है। उसके अनुसार ओम नमः शिवाय का मतलब है, मेरे अंदर बैठे शिव को मैं नमन करता हूं। मैंने सोचा शिव मेरे अंदर हैं? फिर मैंने अपने अन्दर बैठे शिव को ढूंढना शुरू कर दिया। इसके लिए मैंने कई वीडियो देखे, कई किताबें भी पड़ी। मैं कुछ समझ नहीं पा रहा था, बाबा कहते हैं कि सबका मालिक एक, गुरू नानक जी कहते हैं एक ओंकार, उसके बाद मैंने कई कई घंटे इस पर रिसर्च किया तो मुझे लगा कि ओम नमः शिवाय, सबका मालिक एक और एक ओंकार सभी एक दूसरे से जुड़े हैं। फिर मैंने ध्यान लगाना शुरू कर दिया। तब मुझे पता चल गया कि सबका मालिक एक हैं और वो आपके अन्दर हैं। कण कण में ईश्वर का वास है। चाहे आप उसे राम, रहीम, साई बाबा, ईश्वर, अल्लाह कुछ भी कहें, वो आपके अंदर ही है। कण-कण में ईश्वर निवास करते हैं, पत्ते में, फूल में, मूर्ति में, सबमें भगवान हैं। भगवान ने ही वो मुर्ति बनवाई है और जिसने ये मूर्ति बनाई है उसमें भी भगवान हैं। हमारे अंदर भी ईश्वर निवास करते हैं।

अब मैं बताता हूं कि मेरा विश्वास बाबा में कैसे हुआ। दो महिने पहले की बात है, मैं त्रियम्बकेश्वर जाने वाला था। मैं शिव जी का भक्त बन चुका था। मेरे घर में एक दीवार है जिसे मैं डिवाईन टीवी कहता हूं। उसमें मुझे कई बार भगवान के दर्शन हुए हैं। मैंने वहां कई बार शिवजी को देखा, कृष्ण जी को देखा। उस दिन शाम को मैं बैठकर उस दीवार की तरफ देख रहा था। तभी मुझे वहां साई बाबा दिखे। बाबा ने कहा कि अगर तू मानता है कि सबका मालिक एक है तो तू शिरडी आ। तब मैं त्रियम्बकेश्वर तो जा ही रहा था, फिर त्रियम्बकेश्वर से मैं शिरडी चला गया। शिरडी में जब मैंने बाबा की तरफ देखा तो बाबा की आंखें बड़े शरारती ढंग से मुझे देख रही थी, जैसे कह रही हों लो आ ही गया आखिरकार। मैंने वापस आकर गौरी को ये सब बताया तो उसने कहा अब विश्वास हुआ आपको। मैंने कहा कि मुझे विश्वास है कि सबका मालिक एक है। हम सब में जो शक्ति आ रही है वो एक जगह से ही आ रही है। चाहे आप उसे साई बाबा कहो, शिव कहो, कृष्णा कहो या कुछ भी कहो। अगर हम सब ये बात समझ जायें कि बाबा सबके अंदर हैं तो हमारे आपसी झगड़े, एक दूसरे से बैर आदि सब खत्म हो जायेगा फिर हम किसी की निंदा नही करेंगे और धरती पर ही स्वर्ग बन जाएगा। हमें ये बात बच्चों को अवश्य बतानी चाहिये कि सबका मालिक एक है और वो आपके अन्दर है। वो आपको बहुत प्यार करते हैं कभी-कभी हम चलते हुए लड़खड़ा जाते हैं और गिरते-गिरते बच जाते हैं, वो ईश्वर ही है जो हमें गिरने से बचा लेते हैं पर हम उसे महसूस नहीं कर पाते। एक दिन गौरी ने कहा कि मैं शिरडी जाना चाहती हूं मैंने कहा कि ठीक है तुम शिरडी जाओ और मैं धर्मशाला जाऊंगा। धर्मशाला में एक शिव मंदिर है, मैं वहां जाना चाहता था। तभी अचानक मुझे सामने दीवार पर साई बाबा सफेद कफनी में दिखाई दिये। उन्हें देखकर मैंने अपनी पत्नी गौरी से कहा कि अपना फोन दो। मैंने उनके फोन से बाबा की फोटो खींची और गौरी को दिखाई। गौरी घर की दीवार पर बाबा की फोटो देख कर हैरान हो गई। मैंने उसे कहा कि मैं धर्मशाला नही जा रहा मैं तुम्हारे साथ शिरडी जाऊंगा, बाबा मुझे बुला रहे हैं। मैं समझ गया था कि अगर आप थोड़ी कोशिश करेंगे तो भगवान आपको ज़रूर मिलेंगे, बस आपको विश्वास रखना है। हम सब में एक ही शक्ति है बस नाम अलग-अलग हैं। हम उन शक्तियों का सही इस्तेमाल करके परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं। –संजीव ओबरॉय

जब उदार हृदय से दान दिया जाए तब वह ईश्वरीय अनुकम्पा से प्रेरित माना जाता है, जब यह इच्छा रहित भावना से परिपूर्ण हो तो उसे ही सर्वोच्च श्रेणी में रखा जाता है। अन्न दान ही सर्वश्रेष्ठ समझा गया है। यह मानव व अन्य जीवों के उदर को तृप्त करता है, उन्हें प्रसन्न रखता है तथा सन्तोषप्रद निद्रा का आनन्द देता है। अन्न ही परिवारों को संसाधन प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुआ है। इसकी उपयोगिता वही जान पाया है जो रात में खाली पेट करवटें बदलता है। अन्न का अनावश्यक भण्डारण अथवा झूठन को फेंकना इसका अनादर है। यदि अन्न के प्रति सच्ची भावना है तो केवल उतना ही ग्रहण करें जितना आवश्यक है। यह ईश्वर का सर्वश्रेष्ठ प्रसाद है।

बाबा के चरणों में

सा रे गा
सरगम स्टूडियो
Producer of Films, Radio & TV Serials
E-23-B, Lajpat Nagar-2, New Delhi - 110024 Ph. No. 2981-5747

श्रद्धा सबूरी
LEKH RAJ & SONS JEWELLERS
For Exclusive
Gold, Diamond, Kundan, Silver Jewellery
Shop No. 3, B-33, Kalkaji New Delhi-19
Phone 26438272

AMBICA PROPERTIES
Om Sai Ram
Sale, Purchase & Renting
Deals in: Pahar Ganj, Patel Nagar, Rajender Nagar, Karol Bagh, Inderpuri,
RAMA BUILDERS
Construction, Collaboration & All Types of Building Materials
HOTEL SAI MIRACLE
Luxury Living

Aditya Nagpal
Aditya Nagpal-9811175340,
2532/11, Chuna Mandi, Paharganj, (Behind Hotel Anand), New Delhi-110055

गुप्ता परिवार द्वारा साई भजन संध्या

दिल्ली: दिनांक 17 सितम्बर 2025 को श्री प्रमिल गुप्ता एवं उनकी पत्नी श्रीमती साधना गुप्ता ने अपनी स्वर्गीय माता जी श्रीमती सावित्री देवी जी की पुन्यतिथि के अवसर पर उन्हें भजनों के माध्यम से श्रद्धांजली अर्पित की। उन्होंने अपने निवास स्थान जनकपुरी में साई भजन संध्या का आयोजन किया। भजनों का गुणगान करने के लिए सुप्रसिद्ध गायक श्री राजन जी एवं उनके साथी कलाकारों को आमंत्रित किया गया। राजन जी, देवेन्द्र कपूर जी, रवि जी व हिमांशु जी ने अपनी मीठी वाणी से अनेक मधुर भजन प्रस्तुत किए। वहां आए हुए सभी भक्तों एवं मेहमानों ने भजनों का भरपूर आनन्द लिया। भजनों के अंत में पंडाल में बाबा की पालकी निकाली गई। इस अवसर पर श्री प्रमिल गुप्ता एवं श्रीमती साधना गुप्ता ने अपने बेटे डाक्टर विपुल गुप्ता की नवम्बर में शादी से पूर्व बाबा का आशीर्वाद पाने हेतु प्रार्थना की। आरती से कार्यक्रम का समापन हुआ। उसके बाद सभी भक्तों को फल प्रसाद दिया गया। तत्पश्चात् सभी भक्तों ने भंडारा प्रसाद ग्रहण कर अपने-अपने घरों को प्रस्थान किया। इस भक्तिमय कार्यक्रम में श्रीमती अकांक्षा, श्रीमती अनिशा, श्री आकाश, श्री विनय, डाक्टर विपुल गुप्ता व नन्हें बच्चे अयाना, अव्यान एवं विआन भी उपस्थित रहे। **–पूनम धवन**

हर्ष साई द्वारा रोहिणी में माता की चौकी

दिल्ली: दिनांक 24 सितम्बर 2025 को पॉकेट ई-16 सैक्टर-8, रोहिणी में माता रानी की चौकी का आयोजन किया गया। महंत श्री सचिन जी ने माता रानी की ज्योति प्रचंड की तथा माता की पक्की भेंटें गाकर चौकी की शुरुआत की। उनके बाद सुप्रसिद्ध भजन गायक हर्ष साई जी ने अपने निराले अंदाज़ में माता रानी की मधुर-मधुर भेंटें गाकर वहां पर उपस्थित सभी भक्तों को भाव विभोर कर दिया। सबने उनके भजनों का आनंद लिया और कई भक्तों ने हर्ष जी के भजनों पर नृत्य भी किया। श्री दिनेश दिवान जी ने अपने चिरपरिचित अंदाज़ में मंच संचालन किया। अंत में मैया रानी नौरातें गाकर माता की चौकी का समापन किया गया। आरती के बाद सभी भक्तों को प्रसाद वितरण किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन आर.डब्लू.ए. के पूर्व महासचिव धनी राम जी ने किया जिसमें श्री योगेश कौशिक, प्रधान श्री मिलिंद शर्मा जी, श्री सागर कौशिक जी, श्री जी गोस्वामी जी, नव निर्वाचित प्रधान श्री सुभाष गुप्ता जी का विशेष सहयोग रहा। **–कृष्णा**

ग्रोवर परिवार द्वारा माता की चौकी

दिल्ली: दिनांक 27 सितम्बर 2025 को श्री नवीन ग्रोवर एवं श्रीमती प्रिया ग्रोवर द्वारा नवरात्रों के उपलक्ष्य में उनके निवास स्थान पर माता की चौकी का आयोजन किया गया। घर के बाहर पंडाल में माता का अति सुंदर दरबार सजाया गया। माता के भजनों का गुणगान करने के लिए सुप्रसिद्ध गायिका रश्मी भारद्वाज जी को आमंत्रित किया गया। सांय 4:30 बजे ज्योति प्रचंड करने के बाद कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। रश्मी जी ने अपनी मधुर आवाज़ में एक के बाद एक मीठे-मीठे भजन और माता की भेंटे सुनाकर पूरे माहौल को भक्तिमय बना दिया। सभी भक्तों ने रश्मि जी के भजनों का भरपूर आनन्द लिया और कई भक्तों ने उनके भजनों पर खूब नृत्य भी किया। उन्होंने भक्तों की फरमाईश पर भी कई भजन सुनाए। भजनों के अंत में आरती की गई। तत्पश्चात् कार्यक्रम का समापन हुआ। सभी भक्तों को प्रसाद वितरित किया गया। कार्यक्रम के आयोजन में साहिल, सान्या व खुशी का विशेष सहयोग रहा।

पृष्ठ 1 से आगे

साई मंदिर रोहिणी में ...

सभी को भावविभोर कर दिया। भक्तों ने भजनों के साथ तालियां बजाकर और नृत्य करके भजनों का आनन्द लिया। मंदिर का पूरा हॉल भक्तों से भरा था। रात 10:30 बजे आरती से कार्यक्रम का समापन हुआ। तत्पश्चात् सभी भक्तों को फल प्रसाद बांटा गया। सभी भक्तों ने माता एवं साई बाबा का आशीर्वाद लेकर प्रस्थान किया।

कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के प्रधान श्री के. एल. महाजन, उपप्रधान श्री संजीव अरोड़ा, महासचिव श्री रमेश कोहली, कोषाध्यक्ष श्री अशोक रेखी, सचिव श्रीमती प्रोमिला मखीजा एवं सदस्य श्री पी.डी. गुप्ता व श्री विमल शर्मा की देख-रेख में किया गया। मंदिर में होने वाले हरेक कार्यक्रम का संचालन मंदिर समिति के सदस्य अत्यन्त सुचारू रूप से एवं पूर्ण श्रद्धा से करते हैं। **–कृष्णा पुरी**

श्री कृष्णा जी द्वारा श्री साई सत्संग

सभी धर्म अच्छे गर हम अपने धर्म के सच्चे

दिल्ली: दिनांक 16 सितम्बर को साई लीला रहस्य ग्रुप एवं श्रीमती रमा लूथरा द्वारा आन्ध्रा ऑडिटोरियम, लोधी रोड, दिल्ली में श्री साई सत्संग का आयोजन किया गया जिसमें सुप्रसिद्ध कथाकार श्री कृष्णा जी ने आजकल चल रहे साई विवादों पर चर्चा की। सांय 4:30 बजे कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ सर्वप्रथम भजन गायिका गौरी रंधावा जी ने अपनी मधुर वाणी में कुछ भजनों की प्रस्तुति दी। तत्पश्चात् 5 बजे से श्री कृष्णा जी का सत्संग आरंभ हुआ। उन्होंने आजकल हो रहे साई विवादों पर चर्चा करते हुए बताया कि इस विषय पर कई बातें होगी और कई लोग को गुमराह करते रहेंगे लेकिन हमें डगमगाना नहीं चाहिए। कई असामाजिक तत्व साई बाबा की मूर्तियां मंदिर से हटा रहे हैं लेकिन दुनिया की कोई ताकत साई बाबा को हमारे दिलों से नहीं निकाल सकती।

श्री कृष्णा जी ने श्री साई सच्चरित्र ग्रंथ का महत्व बताते हुए कहा कि हमें साई सच्चरित्र का अध्ययन करते हुए उसे समझना है तभी हम बाबा के बारे में जान पायेंगे। उन्होंने सबसे अनुरोध किया कि प्रतिदिन साई सच्चरित्र अवश्य पढ़ें। कई भक्तों ने अपनी-अपनी शंकाऐं दूर करने के लिए उनसे सवाल पूछे जिसको उन्होंने विस्तार से समझाया। भक्तों ने भिन्न-भिन्न विषयों पर उनसे सवाल किये। उन्होंने सभी को अपने जवाब से संतुष्ट किया। सभी भक्तों ने उनके द्वारा दिये ज्ञान का लाभ उठाया। उन्होनें सभी भक्तों से अनुरोध किया कि हमें अपने गुरू को दृढ़ता से और पूर्ण विश्वास से पकड़े रहना चाहिए और इधर-उधर नहीं भटकना चाहिए और साथ ही अन्य सभी धर्मों का भी सम्मान करना चाहिए।

दूर-दूर से भक्तगण उनकी कथा सुनने के लिए आए। रात 8 बजे कथा का समापन हुआ उसके बाद सभी भक्तों ने स्वादिष्ट लंगर प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम के आयोजन में सोनीपत के श्री राहुल ग्रोवर एवं श्री साई समर्पण समिति सोनीपत के सभी सदस्यों का विशेष सहयोग रहा। **–गायत्री सिंह**

साई धाम मंदिर हौज़ खास में नवरात्र उत्सव

दिल्ली: साई धाम मंदिर में नवरात्रों के दौरान दिनांक 22 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2025 तक मंदिर में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मंदिर को फूलों से अति सुन्दर सजाया गया। पूरे नौ दिन मंदिर में भक्तों का आना-जाना लगा रहा।

दिनांक 2 अक्टूबर 2025 को बाबा के समाधि दिवस के उपलक्ष्य में साई धाम मंदिर में विशाल साई भजन संध्या का आयोजन किया गया जिसमें भजनों का गुणगान करने के लिए सुप्रसिद्ध भजन सम्राट सुरेन्द्र सक्सैना एवं अमित सक्सैना जी को आमंत्रित किया गया जिसका विवरण अगले अंक में दिया जायेगा।

इस मंदिर में हर त्यौहार हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। मंदिर में होने वाले कार्यक्रमों का आयोजन मंदिर के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी श्री नरेन्द्र मिश्रा जी के मार्गदर्शन में बखूबी किया जाता है। **–कृष्णा पुरी**

साई धाम सोहना रोड गुड़गांव में शारदीय नवरात्र महोत्सव

गुड़गांव: दिनांक 22 सितम्बर 2025 को साई धाम, उप्पल साऊथएंड, सोहना रोड, गुड़गांव में शारदीय नवरात्री के पावन पर्व का शुभारंभ किया गया। यह उत्सव 2 अक्टूबर 2025 तक चला। इस अवसर पर दिनांक 1 अक्टूबर को नवचंडी यज्ञ की पूर्ण आहूति दी गई। दोपहर 12:30 बजे से भक्तों के लिए भंडारे का वितरण आरंभ किया गया, जिसमें हज़ारों भक्तों ने भण्डारा प्रसाद ग्रहण किया। दिनांक 1 अक्टूबर को ही नवमी के दिन माता की चौकी का भी भव्य आयोजन किया गया जिसमें सांय 7 बजे से रात 9 बजे तक स्वर कोकिला राधा राठौर द्वारा भजनों की मधुर प्रस्तुति दी गई। राधा राठौर जी ने अनेक मनभावन भजन सुनाकर समां बांध दिया। मंदिर में आए सभी भक्तों ने उनके भजनों का आनन्द लिया।

दिनांक 2 अक्टूबर को विजयदशमी के दिन बाबा के महासमाधि दिवस के अवसर पर सांय 7 बजे से श्री साई अमृतवाणी का पाठ किया गया। जिसमें मंदिर के समस्त ट्रस्टी व अनेक भक्त उपस्थित रहे। **–भीम आनंद**

हरीश चन्द्र प्रकाशवंती चैरिटेबल ट्रस्ट की तरफ से सभी भक्तों को दीपावली एवं छठ महापर्व की हार्दिक शुभकामनायें।
-नरेन्द्र मिश्रा

साई धाम हौज़ खास, साई धाम प्रसाद नगर, दिल्ली
साई धाम साऊथएण्ड उप्पल रोड, गुरूग्राम

श्री साई समिति नोयडा द्वारा संचालित साई विद्या निकेतन स्कूल में शिक्षक दिवस

नोयडा: शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में साई मंदिर, सैक्टर-40, नोयडा के प्रांगण में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर समिति के पूर्व अध्यक्ष श्री वी.आर. राघवन जी अपनी धर्मपत्नी सहित उपस्थित रहे। साथ ही समिति के उपाध्यक्ष डॉ. नीरज कुमार जी, महासचिव देवराज

गोयल जी, श्रीमती मृदु प्रकाश जी, सदस्य श्री सुनील भान जी, विद्यालय प्रभारी श्री ए.एम. त्रिपाठी जी तथा साई विद्या निकेतन की प्रधानाचार्या श्रीमती कनक लता गौड़ जी और सभी शिक्षिकाएँ उपस्थित रहीं। विशेष आमंत्रित साई सुमिरन टाइम्स से सुश्री अंजु टंडन जी भी उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के दौरान श्रीमती मृदु प्रकाश जी ने विद्यालय की सभी शिक्षिकाओं को साड़ी भेंट की। इस अवसर पर उपस्थित सदस्यों एवं सभी शिक्षिकाओं ने मिलकर डॉ. सर्वपल्ली राधा कृष्णन जी को पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित की। विद्यालय के बच्चों ने शिक्षक के महत्व पर अपने विचार प्रस्तुत किए और कुछ बच्चों ने गीत व नाटक भी प्रस्तुत किये। अंत में सभी बच्चों एवं शिक्षिकाओं को प्रसाद वितरित किया गया।

श्री साई समिति, नोयडा द्वारा मंदिर के प्रांगण में साई विद्या निकेतन स्कूल चलाया जाता है जहां गरीब बच्चों को निशुल्क शिक्षा दी जाती है और साथ ही बच्चों को स्कूल यूनिफार्म, कापीयां, किताबें, स्टेशनरी, बस्ते, जूते, जुराबें और सुबह और दोपहर का भोजन भी निशुल्क दिया जाता है। बहुत से बच्चे इस स्कूल से शिक्षा लेकर अपना भविष्य संवार रहे हैं।

देव राज गोयल, महासचिव
श्री साई समिति, नोयडा

साई धाम महावीर नगर में गणपति महोत्सव एवं स्थापना दिवस

दिल्ली: साई धाम मंदिर, गली न. 2, ओल्ड महावीर नगर में दिनांक 27 अगस्त 2025 को गणपति जी को हर्षोल्लास के साथ विराजित किया गया और दिनांक 4 सितम्बर 2025 को बैंड-बाजे के साथ धूमधाम से गणपति जी का विसर्जन किया गया। इन दिनों रोज़ गणपति जी की विधिवत् पूजा अर्चना एवं भजन कीर्तन भी किया गया।

इस दौरान दिनांक 3 सितम्बर को मंदिर का वार्षिक महोत्सव बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास से

मनाया गया। पूरे मंदिर को गुब्बारों एवं लाइटों से अति सुंदर सजाया गया। मंदिर में विराजित साई बाबा का अति सुंदर श्रृंगार किया गया। बाबा बहुत खूबसूरत लग रहे थे। सांय 7 बजे से रात 10 बजे तक साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। सुप्रसिद्ध भजन गायिका राधा राठौर जी ने अपनी मधुर आवाज़ में भजनों का गुणगान किया। भक्तों ने उनके भजनों का भरपूर आनंद लिया। कई भक्तों ने उनके भजनों पर बाबा की मस्ती में नृत्य भी किया। आरती के बाद सभी भक्तों को अत्यन्त स्वादिष्ट लंगर प्रसाद वितरित किया गया।

कार्यक्रम का आयोजन साई धाम मंदिर समिति के सभी सदस्यों, शर्मा जी, राहुल सैनी जी, टोनी जी, सुनील सचदेवा जी, लूथरा जी, निर्मल वर्मा जी, मंजुला शर्मा जी, अंजली लूथरा जी, मनमीत सैनी जी, चन्द्रशेखर सोंधी जी एवं सीमा सोंधी जी द्वारा अति सुचारू रूप से किया गया। **-कृष्णा**

साई मंदिर आदर्श नगर में माता की चौकी

दिल्ली: दिनांक 22 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2025 तक शिरडी साई बाबा मंदिर, ए प न - 1, अशोका रोड, आदर्श नगर

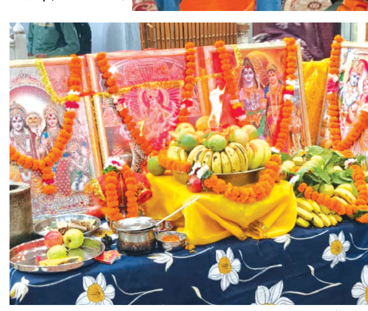

एक्सटेंशन, दिल्ली में नवरात्रों का त्यौहार हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। नवरात्रों में पूरे 9 दिन तक मंदिर में भक्तों का आना-जाना लगा रहा। इस दौरान दिनांक 25 सितम्बर 2025 को माता की चौकी का आयोजन किया गया। मंदिर के हॉल में माता का अति सुंदर दरबार सजाया गया। मंदिर को फूलों से सजाया गया। सांय 6 बजे से सुप्रसिद्ध गायक बूम बूम सैंडी एवं के.के. अंजाना जी ने अपने अपने निराले अंदाज़ में मैय्या के भजनों का गुणगान किया। सभी भक्तों ने उनके भजनों का भरपूर आनंद लिया। पूरा मंदिर भक्तों से भरा था। भजनों के बाद आरती की गई। तत्पश्चात् सभी भक्तों को प्रसाद वितरित किया गया।

कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के संस्थापक एवं बाबा के परम भक्त स्वर्गीय श्री बी.पी. मखीजा जी के बताए हुए मार्गदर्शन में सुपरवाईज़र शमशेर सिंह, सभी पंडित जी, सेवादार व स्थानीय भक्तों के सहयोग से किया गया। **-कृष्णा पुरी**

लाल साई मंदिर जनकपुरी में स्थापना दिवस पर भजन व भंडारा

दिल्ली: दिनांक 13 सितम्बर 2025 को सिंधी जनरल पंचायत जनकपुरी द्वारा लाल साई मंदिर, C-1, जनकपुरी में 18वें साई बाबा की मूर्ति के स्थापना दिवस के पावन अवसर पर साई भजन संध्या का आयोजन किया

गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सांय 7 बजे किया गया जो देर रात तक चला। मंदिर के हॉल को रंग-बिरंगे फूलों से अति सुंदर सजाया गया। बाबा के भजनों का गुणगान करने के लिए सुप्रसिद्ध भजन गायक श्री गौतम अरोड़ा जी को आमंत्रित किया गया। उन्होंने अनेक मधुर भजन सुनाकर सभी भक्तों को बाबा की भक्ति में सराबोर कर दिया। कई भक्तों ने भावविभोर होकर बाबा की मस्ती में नृत्य भी किया। मंदिर का पूरा हॉल भक्तों से खचाखन भरा था। जब गौतम जी ने पालकी भजन सुनाया तो भक्तों ने नाचते-गाते हुए हॉल में बाबा की पालकी निकाली। अंत में आरती की गई। सभी भक्तों ने भंडारा ग्रहण कर प्रस्थान किया।

कार्यक्रम का आयोजन मंदिर प्रबंधक कमेटी के सदस्यों द्वारा सभी सेवादारों के सहयोग से किया गया। मंदिर समिति के प्रधान श्री सुनील ममतानी, मुख्य सचिव अनूप मूलचंदानी, कोषाध्यक्ष श्री हरीश भम्भानी, उप-प्रधान दीपक हेमराजानी, लाल चंद बबानी व जे.के. जेतवानी, सचिव अनिल हेमराजानी, इंद्र लाल पंजवानी व सचिव आर.के. जेठवानी, सहायक कोषाध्यक्ष सी. जी. हीरानंदानी, गोपाल सवनानी व एच. के. नवानी, कल्चर सचिव रीना चांदवानी, कोर्डिनेटर मुकेश भम्भानी व राज ममतानी ने पूरे कार्यक्रम की व्यवस्था अत्यंत सुचारू रूप से की। **-हरीश भम्भानी**

साई मंदिर सरोजनी नगर में नवरात्र महोत्सव

दिल्ली: दिनांक 22 सितम्बर से 1 अक्टूबर 2025 तक सरोजनी नगर में बाबू मार्केट के पास स्थित साई बाबा मंदिर में नवरात्रों का त्यौहार हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस दौरान दिनांक 25 सितम्बर 2025 को मंदिर में भजनों का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर मंदिर को फूलों से अति सुंदर सजाया गया। मंदिर में विराजित बाबा बहुत सुन्दर लग रहे थे।

मंदिर में स्थापित माता का दरबार भी सुंदर सजाया गया। सर्वप्रथम दोपहर 1 बजे सभी भक्तों को भण्डारा प्रसाद वितरित किया गया। 2 बजे से सुप्रसिद्ध भजन गायक दया भाई ने अनेक भजन और माता की भेंटें सुनाई। उनके गाये भजनों का सभी ने खूब आनन्द लिया और कुछ भजनों पर कई महिलाओं ने नृत्य भी किया। प्रकाश जी ने भी कुछ मधुर भजन सुनाकर सबका मन मोह लिया। दोपहर 2 बजे से 5 बजे तक भजनों का कार्यक्रम चलता रहा। नवरात्र के उपलक्ष्य में सभी भक्तों के लिए व्रत वाले भोजन का भंडारा किया गया और शाम को भजनों के बाद सबको चाय का प्रसाद, फल प्रसाद, मिल्क केक और लड्डू का प्रसाद वितरित किया गया। मंदिर की संस्थापिका प्रीति भाटिया जी द्वारा मंदिर में सभी त्यौहारों पर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। **-कृष्णा पुरी**

प्राचीन साई धाम मंदिर में गणेश महोत्सव

दिल्ली: प्राचीन साई धाम मंदिर, देव नगर, करोल बाग में दिनांक 27 अगस्त से 6 सितम्बर 2025 तक गणेश महोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया। दिनांक 27 अगस्त

2025 को प्रातः गणेश जी की प्रतिमा स्थापित की गई, प्रतिदिन श्री गणेश जी को भांति-भांति के भोग अर्पित किये गये, प्रतिदिन पंडित जी द्वारा उनकी मंगल आरती और संध्या आरती भी की गई। इसके साथ ही मंदिर की महिला मण्डल की सदस्यों ने भी प्रतिदिन भजन-कीर्तन और गणेश जी की कथाओं का गुणगान किया जिसका मंदिर में दर्शन के लिये आने वाले सभी भक्तों ने भी पूरा आनन्द लिया। **-मंजु पालीवाल**

दिनांक 6 सितम्बर को पूरे विधि-विधान के साथ गणेश जी का विसर्जन किया गया। विसर्जन से पहले सब भक्तों को गुलाल भी लगाया गया। इस प्रकार पूरा माहौल ही भक्तिमय हो गया। **-मंजू पालीवाल**

समकालीन संतो के साथ बाबा के मधुर सम्बंध

वर्ष 1838 से 1918 तक के लगभग 80 वर्ष के अपने जीवनकाल में शिरडी साई बाबा भारत के संत शिरोमणी के रूप में लोकप्रिय हुए। इस अवधि में भारत में अनेक संत हुए। परन्तु उनकी ख्याति स्थानीय स्तर पर थी, परन्तु साई बाबा जी की ख्याति उस समय भी दूर दूर तक थी। कहा जाता है कि बाबा श्री के सदेह समय में नाथ पंचायत थी जिसमें श्री माधवनाथ, श्री साईनाथ, झुण्डी राज पालूसी, शेगांव के गजानन महाराज और नासिक के गोपालदास थे। ये सब संत आंतरिक निमन्त्रण या शक्ति से मिलकर कार्य करते थे। साई बाबा जी का इस पंचायत में बहुत आदर था और माधवनाथ और त्रिलोकीनाथ उनको कोहिनूर कहते थे। बाबा का अपने समकालीन संतो से सदा सम्बंध रहा। श्री साई चरित्र अध्याय 50 में जब पुंडलीकराव द्वारा टेंबे स्वामी जी ने एक श्रीफल बाबा को भेजा तो कहा कि हालांकि एक स्वामी दूसरे को प्रणाम नहीं करता परन्तु यहां विशेष रूप से ऐसा किया गया है। जब पुंडलीकराव द्वारकामाई गये तो खाली हाथ गये, क्योंकि वही श्रीफल उन्होंने रास्ते में तोड़कर चिवड़े के साथ सेवन कर लिया था। बाबा ने कहा, 'मेरी वह वस्तु लाओ जो तुम मेरे भाई से लाए हो।' इस बाबत श्री हेमाडपंत जी ने बहुत ही सुंदर लिखा है– बाबा को स्वामी से बेतार के तार द्वारा संदेश मिल गया था। उपरोक्त लीला से स्पष्ट ज्ञात होता है कि यह महान आत्मा बाबा श्री से संबंधित थी।

श्री वासुदेवानंद सरस्वती उपनाम श्री टेंबे स्वामी का जन्म मनगांव में 13 अगस्त 1854 (रत्नागिरी तालुका) में हुआ। वे प्रभु दत्तात्रेय के परम भक्त थे। उन्होंने दत्ता की महिमा 'श्री दत्ता महत्वमय' प्राकृत भाषा में और श्री दत्ता पुराण संस्कृत में लिखी है, साथ ही 'श्री गुरूलीलामृत' की भी रचना की है। श्री टेंबे स्वामी ने 24 जून 1914 नर्मदा नदी के तट गुरूदेश्वर में अपना पार्थिव शरीर त्यागा।

श्री मेहरबाबा वर्ष 1915 में शिरडी आये थे। उन्होंने न केवल बाबा के दर्शन किये अपितु उन्हें ऐसे अनुभव प्राप्त हुए कि वह कह उठे– आप लोग यह कभी नहीं समझ पाओगे कि साई बाबा कितने महान हैं। वे पूर्णता की अभिव्यक्ति थे। यदि आप उन्हें उतना समझ सको, जितना मैंने जाना है तो आप लोग उन्हें सम्पूर्ण सृष्टि का अधिनायक कहेंगे।' मेहरबाबा, बाबा श्री के परम भक्त उपासनी महाराज के शिष्य थे। मेहर बाबा जी का जन्म 25 फरवरी 1894 में हुआ था उनकी समाधि पूना में है। कहा जाता है कि वे शिरडी में 6 महीने रहे। समाधि लेने से पूर्व उन्होंने कई वर्ष मौन व्रत रखा। 31 जनवरी 1969 में उन्होंने निर्वाण ले लिया।

बाबा हज़रत जान का जन्म 1820 में बलुचिस्तान में हुआ। 1836 में घर-बार त्याग कर उन्होंने बहुत भ्रमण किया। सन 1900 में वे मुंबई पहुंची। पश्चात् हज कर पुनः 1903 में पूना पहुंची। श्री मेहर बाबा को उन्होंने ही आध्यात्मिक उन्नति हेतु शिरडी, साई बाबा के पास भेजा। बाबा ने उनकी आंख में आंख डालकर उन्हें परवरदिगार कहा और उपासनी महाराज के पास भेजा। बाबा हज़रत जान ने मेहर बाबा की भृकुटी (माथा) चूमी थी, अतः उस समय से मेहरबाबा भावावस्था में थे। मेहर बाबा को देखते ही उपासनी जी ने एक पत्थर उठाकर उनके माथे पर मारा जिससे उनकी भावावस्था टूट गई। बाबा जान ने हमेशा लोगों को सत्य पथ पर चलने की शिक्षा दी और अहंकार से दूर रहने की सलाह दी। आइये बाबा हज़रत जान की दो लीलाओं का श्रवण करें, जिससे यह अनुभव होगा कि सब संत एक समान हैं, उनकी लीलाएं भक्तों के कल्याणार्थ ही होती हैं। एक समय एक धनी व्यक्ति ने बाबा जान को एक स्थान पर चलकर चाय पीने का आग्रह किया। बाबा जान ने कहा, वे ही पैसा देंगी। 'नहीं मैं पैसे दूंगा, ऐसा कहकर उन्होंने अपनी जेब को हिलाया, उसमें सिक्के खनक रहे थे। चाय पीकर उस धनी व्यक्ति ने जेब में हाथ डाला तो जेब खाली थी। उसकी हालत देख बाबा हज़रत जान ने भुगतान किया। महान आश्चर्य जैसे ही वे बाहर आये उस महाशय की जेब सिक्कों से भरी थी।

एक बार एक अंधे बच्चे को उनके पास लाया गया तो बच्चे के मुंह पर फूंक मारी बच्चे की आंखों की रोशनी लौट आई। बाबा जान को भूत-भविष्य वर्तमान का ज्ञान था। एक बार वे रात को ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगीं– 'आग, आग, लोग जल रहे हैं, दरवाज़ा बंद है।' उस समय लोग कुछ समझ नहीं पाये, परन्तु अगले दिन पता चला कि शेगांव में एक थियेटर में आग लगने से लोग जल गये। साई बाबा की तरह वे अपने पूणे निवास के समय भक्तों के लिये भोज का आयोजन करती थीं, जिसे सब लोग प्रसाद रूप में ग्रहण करते थे। बाबा जान इतनी सिद्धावस्था में थीं कि वे बाबा ताज्जुद्दीन व अपने समकालीन संतो को अपना बालक कहती थीं। 110 वर्ष की आयु में अपने अल्लाह मालिक से मिलने की इच्छा रखते हुए सन् 1931 में शरीर का त्याग कर दिया। 21 सितम्बर 1931 को उन्होंने महासमाधि ली।

बीसवीं शताब्दी की शुरूआत में कल्याण व भिवंडी (उपनगर मुंबई) में श्री राम मारूति नामक एक संत प्रसिद्ध थे, वे नाथ परम्परा के थे और राम भक्त थे। वे समान्यता 'विठोबा-रामा-रामा, मारूति रामा रामा' का उच्चारण करते रहते थे। राम मारूति जी साई बाबा को अपना गुरू कहते हुए उन्हें बाबा आदिनाथ कहते थे। वर्ष 1910 में इन महान संतो, श्री साई बाबा व श्री राम मारूति का अद्भुत मिलन हुआ। राम मारूति महाराज के आने से पहले बाबा बोले, 'कल मेरे लिये सुनहरा दिन है, कल मेरी दिवाली है, मेरा भाई मुझसे मिलने आ रहा है।' यह बात कई बार बाबा ने दोहराई। राम मारूति जैसे ही बाबा के श्री चरणों पर झुके, बाबा ने उन्हें गले लगा लिया। बाबा ने उन्हें अपने पास, अपने आसन पर बिठाया और आरती शुरू करने को कहा।

इसी यात्रा के समय एक दिन राम मारूति नैवेध के लिये शीरा तैयार कर रहे थे। इसमें कुछ देरी हो रही थी। अन्य भक्त अपना-अपना नैवेध ले आये थे। जैसे ही नैवेध बाबा को अर्पित करने लगे, बाबा ने तुरंत कहा, 'रूको, मेरे राम मारूति को नैवेध पहले लाने दो।' जैसे ही राम मारूति जी शीरा लेकर आये, बाबा ने उसमें से कुछ ग्रहण किया और अन्य भक्तों का नैवेध फिर स्वीकार किया। उस समय कल्याण के त्रिबंकराव कार्णिक, नाना साहेब और भक्त मर्तण्ड वहां उपस्थित थे। राम मरूति जी ने कल्याण में 28 सितम्बर 1918 को समाधि ली और इसी दिन बाबा बीमार हुए और 17 दिन बाद उन्होंने 15 अक्टूबर 1918 को महासमाधि ली।

सोनगिरी के गुरू गोबिंद महाराज 1860 में सोनगिरी में प्रकट हुए। वे पूर्ण दिगम्बर अवस्था में थे। वे कौन हैं? कहां से आये? कोई नहीं जानता था। प्रकट होने के बाद उन्होंने बीस वर्ष मौन-व्रत रखा। वर्ष 1881 में लोगों ने उन्हें गोविंद महाराज कहना शुरू कर दिया। मौन व्रत तोड़ने पश्चात् वे भक्तों को समझाते कि ईश्वर सब प्राणियों में है चाहे वह पशु-पक्षी हो। गुरू गोंविद महाराज श्री साई बाबा व गजानन महाराज के समकालीन थे। साई बाबा व गुरू गोविंद में अद्भुत समानता थी। वे धूनी प्रज्जवलित रखते तथा हाथ में एक डंडा, जैसे बाबा हाथ में सटका रखते थे। कुछ अवसरों पर वे भक्तों को डंडे से पीटते 'प्रसाद' के रूप में और क्रोधित हो भक्तों को अपशब्द कहते। महासमाधि से पूर्व बाबा तेज़ बुखार से पीड़ित थे तो दूसरी तरफ गुरू गोविंद भी बुखार से पीड़ित थे। गुरू महाराज के भक्तों को आभास हो रहा था कि महाराज अब शरीर त्याग देंगे। गुरू महाराज ने भक्तों से कहा, तीन महात्मा हैं, एक ज्योति चन्द्रमा में समा जायेगी। बजरंग जी ने कहा 'तुम अभी रूको'। यह सुनने पर जब भक्तों ने पूछा, दूसरे महात्मा कौन हैं? महाराज ने कहा कि उनका मतलब शिरडी के साई बाबा हैं।

दशहरे के दिन 15 अक्टूबर को बाबा ने 2:15 बजे शरीर त्यागा, ठीक उसी समय गुरू महाराज ने कहा, 'ज्योति और चन्द्रमा एक हो गये हैं।' बाबा श्री की महासमाधि के बाद 21 महीने पश्चात् 6 जून 1920 को गुरू गोविंद महाराज ने समाधि ले ली। वर्ष 1910 में जब गजानन महाराज ने समाधि ली तो ठीक उसी समय बाबा ने कहा था– 'मेरा गजानन चला गया।' दत्तात्रेय परम्परा में गजानन महाराज का नाम भी गिना जाता है। लगभग 23 वर्ष की आयु में 23 फरवरी 1879 को शेगांव में प्रकट हुए थे। उस समय वे पूर्ण दिगम्बर रूप में थे। उनके माता पिता आदि का किसी को भी मालूम नहीं है। दासगणु महाराज ने उनकी जीवनी लिखी है, 'श्री गजानन विजय' के नाम से। गजानन महाराज ने 8 सितम्बर 1910 को समाधि ली। उस समय द्वारकामाई में साई बाबा बहुत उदास लग रहे थे और कहा कि मेरा भाई चला गया है। वहां बैठे भक्त कुछ नहीं समझ सके। काका साहेब उस समय वहां बैठे थे, बाद में बूटी साहेब के पत्र से पूर्ण सच्चाई सामने आई। दोनों महान संतों में भी अद्भुत समानता थी। जैसे साई बाबा ने चिमटे को ज़मीन में घूसाकर अंगारा निकाल अपनी चिलम जलाई, वैसे ही गजानन महाराज ने चिलम पर तिनके को रख, बिना आग के चिलम सुलगाई। बाबा ने पानी से दीये जलाये तो शिरडी वासियों को बाबा की सर्वव्यापकता का अनुभव हुआ। गजानन जी ने गंदे नाले से तुंबा भर पानी लाने को किसी को भेजा। नाले में न के बराबर पानी था परन्तु जैसे ही तुंबा रखा वह शुद्ध पानी से भर गया। दोनों महान संतों ने अपना अवतारी रूप प्रकट नहीं किया। जिस प्रकार बाबा कोचवान बन नाना साहेब के घर जामनेर गये और रामगीर बुवा के हाथों उदि भिजवाई, ठीक ऐसी ही एक लीला, महाराज के एक भक्त डॉक्टर भाऊ कंवर खामगांव में फोड़े से पीड़ित हो गये। पीड़ा असहनीय हो गई। कोई उपचार काम नहीं आया। उन्होंने भावपूर्ण होकर गजानन से याचना की और रोने लगे। रात दो बजे एक ब्राह्मण बैलगाड़ी में आया और उदि व चरणामृत दिया और 'मैं जल्दी में हूं' कहते हुए चले गये। उदि को जैसे ही फोड़े पर रखा, फोड़ा फट गया। बहुत कोशिश करने पर न बैलगाड़ी, न ब्राह्मण मिला। ठीक होने पर जब वे शेगांव गये, गजानन महाराज ने हंसते हुए कहा, मेरे बैलों को तुमने चारा भी नहीं दिया। भाऊ की आंखों से आंसू बहने लगे।

साई बाबा जी के महासमाधि से कुछ समय पूर्व श्री शंकर महाराज सोनमबापू गीते के साथ साई बाबा से मिलने शिरडी गये। उस समय बाबा लेंडी बाग में बैठे थे। साई बाबा ने शंकर महाराज को देख उनकी आंखों से आंख मिलाई। इन दो महात्माओं ने लगभग 15 मिनट तक एक दूसरे से नज़र मिलाई रखी। कोई भी शब्द इन महान योगियों ने नही बोला। गीते व अन्य भक्त हैरान हो रहे थे। पश्चात् श्री शंकर व गीते खमोशी से वापस चले गये। रास्ते में गीते ने पूछा, 'महाराज आप दोनों ने बात क्यों नहीं की? तब महाराज ने कहा, 'यद्यपि शरीर से हम दो हैं परन्तु वास्तव में एक हैं। हमारी इस मुलाकात का बयान शब्दों से नहीं किया जा सकता है।

एक जिज्ञासा है, आखिर साई बाबा में वह कौन सी विशेषता है जिससे करोड़ों लोग उनके श्री चरणों में जा रहे हैं। उत्तर है– लाखों अपने जीवन की डोर उनके हाथ में सौंप कर निश्चित हो जाते हैं। उनकी समाधि के दर्शन कर सुकून पाते हैं। सत्य में, उनके दरवाज़े से कोई खाली नहीं लौटता। हम उनमें विष्णु की गारिमा, श्रीराम की मर्यादा, श्री कृष्ण की लीला, बुद्ध की करूणा, ब्रह्म के सृजन, संतों के उपदेश, सद्गुरू के मार्गदर्शन, सूफियों के मिज़ाज आदि एक ही जगह देख पाते हैं। इस कारण हमारे साई का कोई मुकाबला नहीं। जय श्री साई।

संकलन: **साई दास योगराज मनचंदा**
साभार: साई शरणम् साई कृपा

श्री साई सुमिरन टाइम्स की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें–
Ph: 9818023070
9212395615
For Daily Shirdi Darshan, Experiences of Sai Devotees & Latest News Subscribe Youtube Channel of Shri Sai Sumiran Times

श्रद्धा और सबुरी से बनते बिगड़े काम

श्रद्धा और सबुरी दोनों एक दूसरे के पूरक है। आज मैं अपनी कुछ आप बीती आप लोगों के समक्ष रखने जा रहा हूं। साल 2015 से पहले मैं एक बेहद सामान्य एवं अज्ञानी व्यक्ति था। जब सन् 2015 जुलाई में मेरा स्थानांतरण दिल्ली से कोयम्बटूर हो गया तो मैं अपने 85 साल की माता जी, पत्नी एवं दो बच्चों के साथ कोयम्बटूर (तमिलनाडू) पहुंच गया। वहां पर accomodation को लेकर गंभीर समस्या हो गयी। पता नहीं कहां से मेरे मन में मेरी वृद्ध माता जी को लेकर असुरक्षा की भावना घिर गयी, कि अगर मेरी मां को कुछ हो गया तो मैं 3000 किलोमीटर उन्हें लेकर बक्सर, बिहार कैसे जाऊंगा या फिर मेरे सगे रिश्तेदार इतनी दूर भला क्यों आएंगे और कैसे आयेंगे। इसके अलावा वहां बोल चाल की भाषा की भी बहुत समस्या थी। मैं अन्दर ही अन्दर परेशान रहने लगा और खुद को कमज़ोर समझने लगा। फिर क्या था मैं डिप्रेशन (अवसाद) में आ गया। कोयम्बटूर में मेरा 9 महीने तक मनोचिकित्सक से इलाज चला। इन 9 महीनों में मैं नित्य 'श्री साई सच्चरित्र सार' का पाठ करता रहा। अतः मैं बाबा के और करीब आ गया। जब डिप्रैशन से निकल कर मैं बाहर आया तो स्वयं को पहले से और ऊर्जावान महसूस किया। बाबा को कोटि-कोटि धन्यवाद है।

मेरी परीक्षा अभी बाकी थी। पुनः साल 2022-23 में एक property के कानूनी विवाद को सुलझाने में मैंने खुद को इतना involve कर लिया कि मैं फिर से डिप्रैशन में चला गया। बाबा ने मेरी घोर परीक्षा ली। मेरी परीक्षा बहुत कठिन थी, हर रोज़ हर क्षण मैं बाबा का ही नाम जाप करता रहता था और उदि को जल में मिलाकर सेवन करता और मस्तक पर लगाता। तब मैंने श्रद्धा और सबुरी के मंत्र का संयम से पालन किया और मैं सबुरी की डोर थामें हुए था। इस कठिन परिस्थिति में परिवार और 'श्री साई सुमिरन टाइम्स' का साथ 'अतुलनीय' था। दुर्भाग्यवश मुझे फिर से मनोचिकित्सक के शरण में जाना पड़ा। डेढ़ साल तक दवाई चली। श्रद्धा और सबुरी के सहारे मैंने बाबा के चरणों में प्रीति बनाए रखी। मैं अवसाद से फिर उभरा और ज़्यादा ताकतवर बनकर। मैं जब भी किसी समस्या में उलझा तब बाबा ने ही मेरी समस्या को सुलझाया और मैंने खुद को अन्दर से और भी ताकतवर महसूस किया। बाबा के आशीर्वाद से मेरी Legal battle में मुझे जीत मिली।

जीवन में हर दिन एक नयी चुनौती लेकर आता है और यदि श्रद्धा और सबुरी का पालन किया जाए तो हर चुनौती आसान हो जाती है। चुनौती और जीवन तो चोली दामन का साथ है पर यदि बाबा साथ हों तो हमारी समस्या अवश्य सुलझ जाती है। ओम साई राम। –**बलराम गुप्ता**, बक्सर

श्रद्धालय धाम में आचार्य श्रवण जी महाराज द्वारा श्रीमद्भागवत कथा

दिल्ली: दिनांक 8 सितम्बर से 15 सितम्बर 2025 तक श्रद्धालय धाम मंदिर, महादेव चौक, सैक्टर-30, रोहिणी, दिल्ली में सात दिवसीय श्रीमद्भागवत महापुराण कथा का आयोजन किया गया। कथा के प्रथम दिन 8 सितम्बर को प्रातः 9 बजे कलश यात्रा निकाली गई जिसमें कई महिलाऐं कलश लेकर चलीं और बहुत से भक्तगण भी इस यात्रा में शामिल हुए।

श्रद्धालय धाम पीठाधिश्वर आचार्य श्रवण जी महाराज (चित्रकूट वाले) ने प्रतिदिन दोपहर 3 बजे से सायं 6 बजे तक मंदिर प्रांगन में अपने मुखारविंद से कथा का वाचन किया। कथा के दौरान उन्होंने बीच-बीच में अनेक ज्ञानवर्धक किस्से सुनाकर भक्तों को आनन्दित किया। आचार्य जी ने भक्तों को पितृ दोष निवारण के विषय में भी विस्तार से बताया। कथा के दौरान उन्होंने अपनी मधुर आवाज़ में अनेक भजन भी सुनाए जिससे कथा और भी रोचक बन गई। हर रोज़ बड़ी संख्या में भक्तों ने मंदिर पहुंच कर कथा का आनन्द लिया। इस दौरान दिल्ली सरकार के कैबिनेट मंत्री श्री रविन्द्र इंद्राज सिंह जी ने भी कथा में शिरकत की और श्रवण जी महाराज का आशीर्वाद लिया। सभी भक्तों ने आचार्य श्रवण जी महाराज जी की कथा का सातों दिनों भरपूर आनन्द लिया और उनकी कथा शैली की बहुत सराहना की। कथा के समापन पर दिनांक 15 सितम्बर को हवन किया गया जिसमें वहां उपस्थित सभी भक्तों ने भाग लिया। हवन के बाद विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया। हज़ारों संख्या में आए भक्तों ने भंडारा प्रसाद ग्रहण किया। –**गायत्री सिंह**

श्रीराम मंदिर हरि नगर में भजन

दिल्ली: दिनांक 28 सितम्बर 2025 को श्रीराम मंदिर, CB ब्लाक, हरि नगर में सांय 6 बजे से रात्रि 8:30 बजे तक मासिक साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। महिला परिवार के सदस्यों ने भजनों का गुणगान किया। सभी भक्तों ने उनके भजनों का खूब आनंद लिया। आरती के बाद सभी भक्तों को बाबा का प्रसाद बांटा गया। कार्यक्रम का आयोजन श्रीमती पूनम सचदेवा जी द्वारा अन्य भक्तों के सहयोग से किया गया। श्रीराम मंदिर में हर महीने के आखिरी रविवार को भजन कीर्तन का आयोजन किया जाता है जिसकी शुरूआत स्वर्गीय राजेन्द्र सचदेवा जी ने की थी। अब उनकी पत्नी श्रीमती पूनम सचदेवा जी इस कार्य को आगे बढ़ा रही हैं। –**गायत्री**

पिछले अंक से आगे...

साई के चरण कमलों में

-नीति शेखर

डा. मोतीलाल गुप्ता की जीवनी- साई धाम की यात्रा

मैंने अक्सर ये आलोचनाएँ सुनी हैं कि हमारे देश के गरीब-वर्ग ही जनसंख्या वृद्धि के सबसे बड़े अपराधी हैं। उन लोगों से मैं पूछती हूँ कि अपने परिवार में झाँक कर देखो कि हमारे बाप-दादा कितने भाई-बहन हुआ करते थे? उदाहरण के तौर पर मेरे दादा-दादी तथा नाना-नानी सभी के छह से सात भाई-बहन थे। इस बात पर ज़ोर देना चाहिए कि आधुनिक शिक्षा (जो समृद्ध लोगों को ही प्राप्त होती थी) ने ही यह चेतना जगाई कि कम बच्चे होने के कितने फायदे हैं। अच्छी शिक्षा तथा आधुनिक चिकित्सा की वजह से समृद्ध परिवारों की आगे की पीढ़ी ने 'हम दो हमारे दो' की उक्ति को अपनाने में सफल हुए। परन्तु जो वर्ग शिक्षा से वंचित रहे और अच्छी स्वास्थ्य व्यवस्था भी नहीं मिली उन्हें इस बात को समझने का मौका ही नहीं दिया गया। फिर उस दिहाड़ी मजदूर के परिवार को, जिसके पाँच बच्चे हैं, उसके प्रति हीन भावना रखना एक आडम्बर कहलाएगा। इस स्थिति में यह हम सबकी जवाबदेही हो जाती है कि हम अपने गरीब नागरिकों को अज्ञानता से बाहर निकालें जिसमें वे जीवन-यापन कर रहे हैं। बिरले ही ऐसे लोग होते हैं जो डा. मोतीलाल गुप्ता की तरह निरक्षरता, भूख तथा बेरोज़गारी के विरूद्ध जंग में सबसे सामने तैनात हैं। अन्य लोगों को, कम-से-कम, इन योद्धाओं को हर-संभव सहयोग देना चाहिए। हमें समझाना होगा कि भारत का दोहरा चेहरा नहीं हो सकता एक विकासशील तथा एक वह जो मात्र जीने के लिये जद्दोजहद कर रहा हो।

डा. मोतीलाल गुप्ता के व्यक्तित्व सरीखे लोग हमारे समाज में दुर्लभ हैं। परन्तु कुछ लोग जो उनकी तरह हैं, उन्हें हमारे समाज की सहायता की आवश्यकता है। यह सत्य है कि कई नकली स्वयंसेवी संस्थाएं अस्तित्व में हैं जो खुले आम अपने फ़र्ज़ी परोपकारी कार्यों का दावा करती हैं। हम इस विषय पर समय व्यर्थ नहीं गंवाएँगे कि ऐसे संगठन अस्तित्व में क्यों हैं तथा उन्हें कौन चलाता है? महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि सच्चे तथा फर्ज़ी एन.जी.ओ. में फर्क कैसे करें? अगर मैं अपने शहर के सर्वश्रेष्ठ 10 एन.जी.ओ. के नाम 'गूगल' से जानना चाहूँ तो उनमें से कितने सही हैं और कितने फ़र्ज़ी यह बात नेट से पता लगाना मुश्किल हो सकता है। एक तरीका यह हो सकता है कि हम निर्णय लें कि हमें किस क्षेत्र में अपना योगदान देना हैं- जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य-सम्बन्धी क्षेत्र, अनाथों की रक्षा, नारी सशक्तिकरण, वस्त्र-भोजन वितरण या पर्यावरण संबंधी कार्य। इस विषय पर निर्णय लेने के बाद हम किस एन.जी.ओ. से जुड़ें, इसे तय कर पाना आसान हो पाएगा। अगर किसी एन.जी.ओ. से हमारे मित्र, साथी या पड़ोसी जुड़े हैं तो हम भी उस संस्थान से जुड़ने का प्रयास कर सकते हैं। यदि यह संस्थान उस क्षेत्र में कार्य नहीं करता जिससे कि आप जुड़ना चाहेंगे तब भी प्रारंभ करने के लिये आप वहां जाएँ। उदाहरण के लिये अगर आप साई धाम से जुड़ते हैं परन्तु अगर आप बुज़ुर्गों की देखभाल करने वाली संस्थान से जुड़ना चाहते हैं तो यह संभव है कि साई धाम के किसी सदस्य के द्वारा आपको दूसरे संस्थानों के बारे में जानकारी मिल सके जहाँ आप अपना योगदान देना चाहेंगे। इसका कारण यह है कि ऐसे संस्थानों में आप उन लोगों से जुड़ पाते हैं जो आपकी ही तरह परोपकार करने को आतुर हैं। मेरा यह दृढ़ विश्वास है अगर हमें परोपकार करना है या वंचितों के लिये कर्त्तव्य निर्वहण करना है तो निश्चित तौर

पर देर-सवेर हम अपने मनोकूल संगठन से जुड़ ही जाते हैं।

मेरा परिवार भी साई धाम से परोपकार में विश्वास रखने वालों के सम्पर्क से जुड़ पाया। 2010 में श्री आनंद कुमार, मेरी माता जी के छोटे मौसा जी, जो इंडियन आयल कोरपोरेशन में निर्देशक (रिसर्च एण्ड डेवेलपमेंट) के पद पर कार्यरत थे, उन्होंने साई धाम का दौरा किया। हमारे प्रिय मणी नाना (ऐसे हम उन्हें संबोधित करते हैं) अपने आप में एक परोपकारी व्यक्ति हैं जिन्होंने बहुत छात्रों को परामर्श दिया है तथा उनके मार्गदर्शक बने हैं। कई गरीब वंचित छात्रों को ज़रूरत पड़ने पर उच्च शिक्षा के लिये छात्रवृति भी दी है। आई.ओ.सी.एल उन पी.एस.यू (PSU) में से है जिसने शिरडी साई बाबा स्कूल को अपने सी.एस.आर (CSR) के तत्वाधान के अंतर्गत सहयोग दिया। नई कक्षाओं के निर्माण में सहयोग हेतु एक मुलाकात निर्धारित की गई जिससे श्री आनंद कुमार एवं श्रीमती मधु कुमार को डा. गुप्ता से मिलने का मौका मिला। यह दम्पति साई धाम के परोपकारी कार्यों से बहुत प्रभावित हुआ। उनकी कम्पनी से निर्गत की गई राशि से एक कक्षा का निर्माण संभव हो सका।

हमारी मधु मौसी, साई धाम के आध्यात्मिक पहलू तथा डा. गुप्ता की साई बाबा के प्रति अनन्य भक्ति से बहुत प्रभावित हुईं। उन्होंने अपना अनुभव मेरे माता-पिता को बताया तथा वहाँ जाने का प्रबंध भी करा दिया। इस तरह मेरे माता-पिता तथा मेरे भाई को गुरू जी के चरण-स्पर्श का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस मुलाकात के दौरान गुरू जी ने हमारे परिवार को सर्वोच्च उपहार से आशीर्वादित किया जिसका कोई सानी नहीं है और वह है श्री साई सच्चरित्र। हम सदा के लिये श्रीमती मधु तथा श्री आनन्द कुमार के अनुगृहित रहेंगे जिन्होंने हमें साई धाम का रास्ता दिखाया तथा गुरू जी से हमारा परिचय करवाया।

डा. गुप्ता सक्रिय तौर पर साई धाम के लिये पी.एस.यू., मल्टी नैशनल कंपनियों तथा प्राइवेट लिमिटेड कम्पनियों से योगदान लेने की कोशिश करते रहते हैं। सरकार ने कम्पनियों को अपनी आय का एक न्यूनतम हिस्सा सामाजिक कल्याण के लिये निर्गत करने का निर्देश दिया है। डा. गुप्ता जैसे समाज-सेवकों को कम्पनियों के पास जाकर योगदान के लिये निवेदन करना पड़ता है, बजाय कि कम्पनी स्वयं सक्रिय होकर अपने सी.एस.आर का भाग साई धाम जैसी संस्थानों को दान करें। कम्पनियों की ऐसी ढिलाई ने कई तरह के फर्ज़ी एन.जी.ओ. को सी.एस.आर. का फायदा उठाने का अवसर दे दिया है, जिसके कारण वैध संस्थान अनुदान से वंचित रह जाते हैं। प्राइवेट लिमिटेड कम्पनियों के पास अथाह संसाधन है। देश के प्रबुद्ध लोगों को आगे आकर कोई तरीका तय करना होगा जिससे कि कम्पनियों के सी.एस.आर के तहत के योगदान को वैध संस्थानों तक पहुँचाया जा सके। डा. गुप्ता अपने को एक पेशेवर भिक्षुक कहते हैं। उन्हें कई कम्पनियों के दरवाज़ों को खटखटाना पड़ता है, अधिकारियों को साई धाम आने का आग्रह करना पड़ता है और उनके योगदान के लिये कई बार दफ्तरों के चक्कर लगाने पड़ते हैं जिसके वे असली हक़दार हैं। उनका निवेदन स्वीकार हो या अस्वीकार परन्तु डा. गुप्ता का यह प्रयास सदैव ही चलता रहता है। साई धाम के संस्थापक के अथक प्रयास की वजह से वे कुछ बड़े पी.एस.यू. के आत्मविश्वास तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल हुए हैं। श्रेय उन उद्यमी तथा कर्त्तव्यनिष्ठ पी.एस.यू. के अधिकारियों को भी जाता है जिन्होंने व्यक्तिगत तौर पर साई धाम को सहायता पहुँचाने की मुहिम में साथ निभाया।

-क्रमशः

- हिंदी अनुवादः डा. नीरजा प्रसाद

आभारः साई के चरण कमलों में

टिहरी गढ़वाल में साई मंदिर

श्री मदन गेरोला जी ने गांव भांगला, ज़िला टिहरी, गढ़वाल में एक पर्वत के शिखर पर साई मंदिर की स्थापना की है। इसकी भव्यता देखते ही बनती है। यहां साई भक्त श्री मदन गेरोला जी के द्वारा की जा रही निस्वार्थ सेवा भी साई भक्तों को अपनी और आकर्षित करती है। इस

साई मन्दिर में गेरोला जी ने लेंडी बाग का भी निर्माण किया हुआ है जहां पर आम, अमरूद, लीची, जामुन, केले, बेल, नाशपती आदि के बड़ी सख्या में वृक्ष लगा रखे हैं तथा उसके साथ-साथ अंगूर की बेल भी देखने को मिलती है। जिस वृक्ष के पत्तों पर प्रभु राम वनवास के समय में भोजन ग्रहण करते थे वही मालु के वृक्ष भी उन्होंने लेंडी बाग में लगा रखे हैं तथा आने वाले साई भक्तों को उन्ही मालू के पत्तों में भंडारा परोसते हैं।

इस साई मंदिर के निमार्ण की प्रेरणा साई बाबा ने श्री मदन गेरोला जी को सपने में दी थी कि आप अपने गांव में साई मंदिर बनवाओ। आर्थिक रूप से कमज़ोर होते हुए भी उन्होंने अगले दिन सुबह ही मंदिर का निर्माण प्रारंभ करवा दिया। बाबा के नाम का झंडा लगाते ही वहां पर करीब 8 मीटर चौड़ी सड़क सरकार की तरफ से पास हो गई। पहले वहां पहुंचने के लिए छोटी सी पगडंडी से जाना पड़ता था।

ये मंदिर ऋषिकेश से करीब 40 किलोमीटर दूर है। रास्ते में बहुत सुंदर-सुंदर प्राकृतिक दृश्य भी देखने को मिलते हैं। चारों तरफ हरे भरे पहाड़ हैं रास्ते में पानी के झरने भी बहते हुए मिलते हैं। भक्त लोग उन झरनों का पानी पीते भी हैं तथा अपने साथ भरकर भी ले जाते हैं।

अब बड़ी संख्या में साई भक्त इस साई मंदिर में पहुंचने लगे हैं। **-राज मल्होत्रा**

साई धाम मंदिर भोपाल में मूर्ति स्थापना दिवस पर महोत्सव

भोपालः दिनांक 16 सितम्बर 2025 को साई धाम मंदिर, लहारपुर, भोपाल में बाबा की मूर्ति का 17वां प्राण प्रतिष्ठा एवं स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रातः 7 बजे मंगलस्नान एवं पूजा अर्चना के बाद बाबा की काकड़ आरती की गई। 12 बजे बाबा की मध्यान्ह आरती के बाद सबको प्रसाद वितरित किया गया। मंदिर में महिलाओं द्वारा रंगोली सजाई गई। महिला मण्डल की सदस्यों ने दोपहर 1 बजे से सांय 4:30 बजे तक भजनों का गुणगान किया। सांय 5 बजे से पंडित संदीप पाण्डेय जी ने साई कथा का वाचन किया जिसमें उन्होंने साई बाबा

के बारे में बताया। सांय 5 बजे बाबा की पालकी शोभा यात्रा ढोल-नगाड़ों के साथ निकाली गई। सांय 7 बजे बाबा की धूप आरती की गई। रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक 'ओम साई हनुमंतः नमो नमः' का जाप किया गया। अंत में सभी भक्तों को प्रसाद वितरण किया गया। **-सुरेन्द्र पटेल**

**किसी ने ईश्वर से पूछा
कि किस प्रकार के इंसान
आपके नज़दीक होते हैं?
ईश्वर ने जवाब दिया,
वे इंसान जो बदला लेने की
क्षमता रखने के बावजूद
दूसरों को माफ कर देते हैं।**

साई मंदिर बीकानेर में नये लंगर हॉल का निर्माण

बीकानेरः बीकानेर में कैमल फॉर्म रोड पर स्थित सुप्रसिद्ध शिरडी साई बाबा मंदिर भक्तों की श्रद्धा का केन्द्र है, जिसकी स्थापना 25 वर्ष पहले श्रीमती पूर्णिमा तन्खा एवं स्वर्गीय श्री वी.बी. बक्शी जी द्वारा की गई थी। इस मंदिर में अक्सर भक्तों का मेला लगा रहता है। मंदिर की संस्थापक श्रीमती पूर्णिमा तन्खा जी ने बताया कि अब मंदिर के साथ एक बड़े लंगर हॉल का निर्माण किया गया है जहां भक्तगण आराम से बैठकर लंगर प्रसाद ग्रहण कर सकते हैं। इस मंदिर में हर त्यौहार हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है और दिनांक 20 एवं 21 फरवरी को वार्षिक उत्सव अत्यन्त धूमधाम से मनाया जाता है। इस मंदिर

की कार्य व्यवस्था मंदिर के साधु पंडित जी एवं उनकी पत्नी श्रीमती संगीता जी अत्यन्त कुशलता से संभालते हैं। दो वर्ष पहले इस मंदिर में हनुमान जी की अत्यन्त सुंदर प्रतिमा की स्थापना की गई और साथ ही शिव दरबार की स्थापना भी की गई। मंदिर के बाहर विशाल द्वारकामाई है जहां हर वक्त बाबा की धूनि प्रज्वलित रहती है। अक्सर लोग यहां श्रद्धा भाव से नारियल, देसी घी एवं लोबान, अगरबत्ती आदि धूनि में अर्पित करते हैं और उनकी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सभी भक्तों से अनुरोध है कि इस मंदिर में आकर बाबा के दर्शन अवश्य करें व उनका आशीर्वाद प्राप्त करें।

-पूनम धवन

श्रद्धा सबुरी संस्थान पंचकूला में स्थापना दिवस पर भजन एवं भंडारा

पंचकूला: श्रद्धा सबुरी संस्थान, सैक्टर–20 पंचकूला में साई बाबा जी का मूर्ति स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सैक्टर–20 स्थित काली माता मंदिर परिसर में भजन संध्या और भंडारे का आयोजन किया गया। भजन संध्या के दौरान भक्तगण साई बाबा के भजन सुनकर भावविभोर हो गए और पूरा वातावरण भक्तिमय हो गया। कार्यक्रम के अंत में सबके लिए भंडारे का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। संस्थान के प्रधान मुकेश मेंदीरत्ता ने बताया कि ऐसे धार्मिक आयोजन समाज को एकजुट करने और आध्यात्मिक मूल्यों को बढ़ावा देने का कार्य करते हैं। इस अवसर पर अमित नारंग, श्याम सहजी, नरिंदर बोगरा, शकुंतला, अंजु मेंदीरत्ता, रूचिका नारंग, वर्षा वर्मा, राकेश गोयल, भावना गोयल, विनोद रावल, सतीश वर्मा और बी.आर. खन्ना, संस्थान के सदस्य व पदाधिकारी मौजूद रहे। श्रद्धालुओं ने संस्थान की इस पहल की सराहना की। **–मुकेश मेंदीरत्ता**

श्रद्धालय धाम में गणेश उत्सव

दिल्ली: दिनांक 4 सितम्बर 2025 को श्रद्धालय धाम मंदिर, महादेव चौक, सैक्टर–30, रोहिणी में श्री गणेश चतुर्थी उत्सव के अवसर पर सांय 5 बजे से 7 बजे तक विशाल भजन संध्या का आयोजन किया गया जिसमें सुप्रसिद्ध भजन गायक साईदास श्री अंकित अरोड़ा जी ने भजनों की अमृतवर्षा की। उन्होंने अपने निराले अंदाज़ में कई लोकप्रिय मधुर भजन सुनाए जिससे पूरा माहौल भक्तिमय हो गया। पूरे मंदिर को रंगबिरंगे फूलों और गुब्बारों से अति सुंदर सजाया गया। पूरा मंदिर भक्तों से भरा हुआ था। भजनों के बाद आरती की गई और उसके पश्चात् सभी को प्रसाद वितरित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन आचार्य श्रवण जी महाराज के मार्गदर्शन में भक्तों के सहयोग से किया गया। **–गायत्री सिंह**

साई भक्ति

बाबा समर्पण की मूरत, दया की सूरत निश्छल भक्तों पर प्यार लुटाते। साई ने सदा सद्भाव, परस्पर भाईचारा अपनेपन का संदेश दिया। बाबा ने कभी अपने बच्चों को किसी संशय में नहीं डाला। सदा नाम जाप, स्मरण और अच्छे कर्म करने की ओर अग्रसर किया। बाबा ने कभी भक्ति करने के लिए भी कोई नियम नहीं बनाए। अपनी लीलाओं द्वारा दुनिया को सुंदर संदेश दिए। फिर जो बाबा का हुआ, वो बाबा का ही हो गया। साई सान्निध्य से जीने का अर्थ मिल जाता है। यूं ही तो नहीं लाखों करोड़ों लोगों का मेला लगा रहता है मेरे साई के दरबार में। साई का साथ, प्यार पाकर कब आपके जीवन में शुभ बदलाव होते जाते हैं, समझ ही नहीं आता। बाबा के ममतामयी स्वरूप से हर प्रश्न का हल मिल जाता है। चाहे पूरी दुनिया एक तरफ हो जाये, मेरा साई उस पल भी गले लगाता है। साई की भक्ति, साई जी का प्यार पाने से समझो आपका जीवन सफल हो गया। कुछ लोग साई जी के लिए भ्रांतियां फैलाते हैं। नादां हैं वो, साई शक्ति को नहीं जानते। ये भी सब साई जी की लीला ही है।

'जन्नत है इस जहां में जहां मेरा शिरडी वाला रहता है, साई का हर दीवाना उसे शिरडी धाम कहता है।'

–**संगीता ग्रोवर**, कवियित्री, लेखिका, गायिका

अन्नदान महादान

आदरणीय भक्तों को ऊँ साई राम। अन्नदान को समस्त दानों में उत्तम माना गया है। अन्नदान को भारतीय परम्परा में महादान माना जाता है, जो न केवल भूखे व्यक्ति को तृप्त करता है अपितु दानकर्ता को पुण्य, सामाजिक वैभव एवं आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग भी प्रशस्त करता है। शादी–विवाह, वास्तु शांति, गृह प्रवेश, छेका–रोका, श्राद्ध कर्म एवं अन्य सभी धर्मो के रिति रिवाज़ में सामूहिक भोज–भंडारा या फिर लंगर का प्रबंध होता है। इसके बिना काम अधूरा माना जाता है, ऐसी मान्यता है। हम नयी गाड़ी खरीदते हैं तो किसी को मिठाई बांटते हैं या फिर एक्ज़ाम में उत्तीर्ण हों तो मिठाई बांटते हैं या फिर जन्मदिन में पार्टी करते हैं इत्यादि यह अन्नदान का ही एक प्रारूप है। लेकिन यदि खुशी के मौके पर गरीबों को मिठाई बांटी जाय तो उसका महत्व बढ़ जाता है। साई बाबा ने 60 साल तक शिरडी की पावन धरती पर निवास किया। अपने इस दिव्य जीवन काल में उनका भंडारा नित्य चलता था। गरीब, दीन–दुखी, पशु भी उनके भण्डारे का लाभ उठाते थे। श्री साई सच्चरित्र ग्रन्थ में वर्णित है कि हांडी में पुलाव पकाते समय बाबा खौलती हांडी में हाथ डालकर पुलाव चलाते थे। इतना ही नहीं अन्नदान पितृदोष और अन्य ग्रहों के दोषों को कम करने, दिवंगत आत्माओं को शांति देने एवं समाज तथा परिवार में एकता एवं सद्भाव बढ़ाने में भी सहायक होता है।

आइये अब हम शिलांग स्थित श्री राम मंदिर की बात करते हैं। इस मंदिर में श्री साई बाबा भी विराजमान हैं। अतः यह मंदिर मेरे लिए शिरडी है। जबसे हम पति–पत्नी को इस मंदिर का प्रधान सेवक नियुक्त किया गया है हम हर मंगलवार को सुंदरकाण्ड पाठ के पश्चात् रात्रि में भंडारा आयोजित करते हैं। हर सप्ताह मंगलवार को कोई ना कोई भक्त यजमान होते हैं, कभी–कभी दो–तीन भक्त संयुक्त रूप में भी भंडारा कराते हैं। भंडारे में जो भी खर्चा होता है वो उस दिन के यजमान द्वारा वहन किया जाता है। अब तो लोगों को मंगलवार का इंतज़ार रहता है और हमें सेवा का इंतज़ार रहता है। लगभग 150–200 लोग मंदिर प्रांगण में भंडारे का आनंद लेते हैं। कभी–कभी 300 लोग भी हो जाते हैं। भण्डारे में हलवा, कड़ी, चने, आलुदम एवं पूड़ी तथा साथ में प्रसाद एवं चरणामृत वितरित किया जाता है। भंडारे के राशन की व्यवस्था उस दिन के यजमान द्वारा की जाती है। उस दिन की आरती यजमान द्वारा करायी जाती है। हमारा ये प्रयोग सफल साबित हो गया है एवं समस्त लोगों के आशीर्वाद से यह प्रयास सार्थक साबित हो रहा है। अपनी लेखनी को विराम देते हुए संक्षेप में मैं कहना चाहूंगा कि अन्नदान एक ऐसा कार्य है जो न केवल एक व्यक्ति के जीवन को बचाता है बल्कि समाज में परस्पर प्रेम, समरसता एवं सकारात्मक उर्जा का संचार भी करता है। ऊँ साई राम।

–बलराम गुप्ता, शिलांग

गणेश उत्सव पर हर्ष साई द्वारा भजन

दिल्ली: दिनांक 3 सितम्बर 2025 को महावीर एनक्लेव पार्ट 3, बिजली घर के पास रवि जी एवं उनके मंडल के सदस्यों द्वारा गणेश उत्सव मनाया गया जिसमें दिल्ली के सुप्रसिद्ध भजन गायक हर्ष साई जी को भजनों के गुणगान के लिए आमंत्रित किया गया। हर्ष जी ने गणपति महाराज के चरणों में हाज़री लगाई और उन्होंने अपने ही अंदाज़ में गणपति बप्पा के भजनों की स्वर लहरी पेश की। वहां मौजूद सभी भक्तों ने खूब नाच गाकर भजनों का आनंद लिया। सभी ने हर्ष जी के भजनों की तारीफ की और उनको चुनरी ओढ़ा कर उनका सम्मान किया।

गुरूजी ने जीवन दान दिया

मेरा नाम उमा है, मैं दिल्ली के पटपड़गंज की रहने वाली हूं। मैं अपना एक अनुभव पहले भी श्री साई सुमिरन टाइम्स में लिख कर आप सभी को बता चुकी हूं जो दिल्ली में रहने वाले हमारे गुरु जी श्री सुशील कुमार मेहता जी द्वारा साई कृपा से किया हुआ अद्भुत चमत्कार था। गुरुजी से हम करीब 15 वर्षों से जुड़े हुए हैं और इन 15 वर्षों में उनके द्वारा हम पर किये हुए चमत्कारों के सैकड़ों किस्से हैं। मैं आपको हाल ही में मेरे साथ हुए एक चमत्कार का खुलासा करती हूँ जिसकी वजह से मैं मौत के मुंह से बचकर बाहर आ गई। हुआ यूं कि हर बार की तरह इस बार भी हम गुरुजी की शरण में 1 साल बाद पहुंचे। जैसा कि मैं पहले अनुभव में बता चुकी हूँ कि वैसे तो हम गुरूजी से पिछले 15 वर्षो से जुड़े हैं मगर इन 15 वर्षो में हम गुरूजी को करीब 4 बार धोखा दे गए, जैसे ही हमारा कोई काम बनता हम लोगों के बहकावे में आकर किसी और जगह जाने लगे मगर जब वहां से कुछ न होता और मुसीबतों में घिर जाते, फिर शर्मिंदा होकर हमें गुरूजी की शरण में जाना पड़ता। मगर उनकी महानता यह है कि वह फिर हमें बड़े प्यार से अपनी शरण में लेते और रोग मुक्त करते। जैसा कि एक बार हम गुरूजी को छोड़कर टीवी पर आने वाले एक बाबा जिनका बहुत बोलबाला सुनकर उनकी शरण में जा पहुंचे। वहां सुबह से शाम हो जाती मगर समागम की पूरी फीस देने के बावजूद न तो माइक सामने आता न ही अपनी फरियाद किसी को सुना पाते। वक्त बीतता गया कुछ राहत न मिली और इसी दौरान हमारी मम्मी को एक भयंकर रोग ने जकड़ लिया। हमने उन्हें गंगाराम हॉस्पिटल, मेदांता हॉस्पिटल सब जगह दिखाया मगर कहीं कोई समाधान नहीं मिला। अंत में फिर गुरूजी का ध्यान आया। मगर जायें तो जायें कैसे उनको छोड़कर टीवी वाले प्रसिद्ध बाबा के यहाँ जाने लगे थे मगर मरता क्या न करता बड़े शर्मिंदा होकर फिर गुरूजी के पास रात करीब 12 बजे पहुंचे और गुरूजी ने दरवाज़ा खोला और बिना कुछ कहे हमें बैठाया और हमारी मम्मी के सिर पर हाथ रखकर भेज दिया। उसके बाद से हमारी मम्मी बिलकुल ठीक ठाक हैं। यह घटना करीब 8 साल पुरानी है मगर मेरी मम्मी उसके बाद कभी गुरूजी के पास उनका शुक्रिया करने भी नहीं गई।

अब मैं आपको यह चमत्कार बताने जा रही हूँ जिसने मुझे मौत के मुँह से निकाला। मेरी उम्र 55 वर्ष की है। मेरे कान में बचपन से ही दर्द रहता था। मेरे कान में पस पड़ गई थी। जिसको मैंने नज़रअंदाज़ कर रखा था। अब इस उम्र में आकर जब तकलीफ ज़्यादा बढ़ गई तो मैंने दिल्ली के AIIMS हॉस्पिटल से इलाज करवाना शुरू किया, उन्होंने मेरा ऑपरेशन किया जिससे मेरी तकलीफ और बढ़ गई। जब डॉक्टरों ने जवाब दे दिया फिर गुरूजी याद आये। मगर उनके सामने जायें कैसे? क्योंकि हम उनके पास जाना छोड़ चुके थे। लेकिन फिर शर्मिंदा होकर गुरूजी की ही शरण लेनी पड़ी और इधर मेरी बहनों ने मुझपर ज़ोर डालकर मुझे फिर से AIIMS में भर्ती करा दिया। वहाँ डॉक्टरों ने कहा कि इन्फेक्शन skull में फैल चुका है और हमें नाक की सर्जरी करनी पड़ेगी और मुझे दोबारा 12 अप्रैल को भर्ती करेंगे। मैंने गुरुजी को यह सब फोन पर बताया तो उन्होंने कहा कि आप सर्जरी करवाइए और सर्जरी नाक से ही होगी मुंह से नहीं होगी। ऐसा ही हुआ मेरी सर्जरी बिल्कुल ठीक हो गई और पस नाक तक नहीं पहुंची। उसके बाद गुरूजी मुझे मिलने दो बार AIIMS आये। डॉक्टर ने करीब एक महीना AIIMS में ही रखा। मेरे लाख कहने पर भी मुझे छुट्टी नहीं मिल रही थी मगर गुरुजी का कहना था कि अब आप ठीक हो गए हैं और घर जाइए। डक्टर ने मुझे यह कहकर छुट्टी नहीं दी कि आपको जो चार इंजेक्शन लग रहे हैं वह 6 महीने और चलेंगे और यहीं पर रहकर लगवाने होंगे। उन दवाइयों और इंजेक्शन की वजह से मेरे शरीर का संतुलन बिगड़ गया और मैं चलने फिरने से मोहताज हो गई और व्हीलचेयर पर आ गई। डॉक्टर ने भी यह कहकर पल्ला झाड़ लिया कि हमने जो दवाइयां और इंजेक्शन दिए हैं उसकी वजह से आपके शरीर की ऐसी हालत हो गई है। मेरी ऐसी हालत देख गुरूजी ने मुझे हॉस्पिटल से घर बुला लिया और मुझे हर वर्ष की तरह जून में संगत के साथ शिरडी चलने को कहा। वह अपने संग मुझे जून 2025 में श्री साई बाबा जी के दर्शन करने के लिए लेकर गए। वहां उनके बेटे ने मुझे व्हीलचेयर पर बिठाकर साई समाधि मंदिर के दर्शन व अन्य सभी मंदिरों के दर्शन करवाए। एक सप्ताह बाद हम यात्रा करके 30 जून को दिल्ली पहुंचे। दिल्ली आते ही अगले दिन से मैं अपने पैरों से चलने लगी और आज तक मैं बिल्कुल स्वस्थ हूं। मुझे कान में, सिर में कोई दर्द नहीं है और ना ही चलने में कोई परेशानी है। यह सब साई बाबा और गुरूजी का ही कमाल है जिन्होंने मुझे डाक्टरों के चंगुल से बचाया और टांगों से लाचार होने से बचाया। ऐसे गुरु को चरण स्पर्श। जय साई राम।

–**उमा कालिया**, दिल्ली

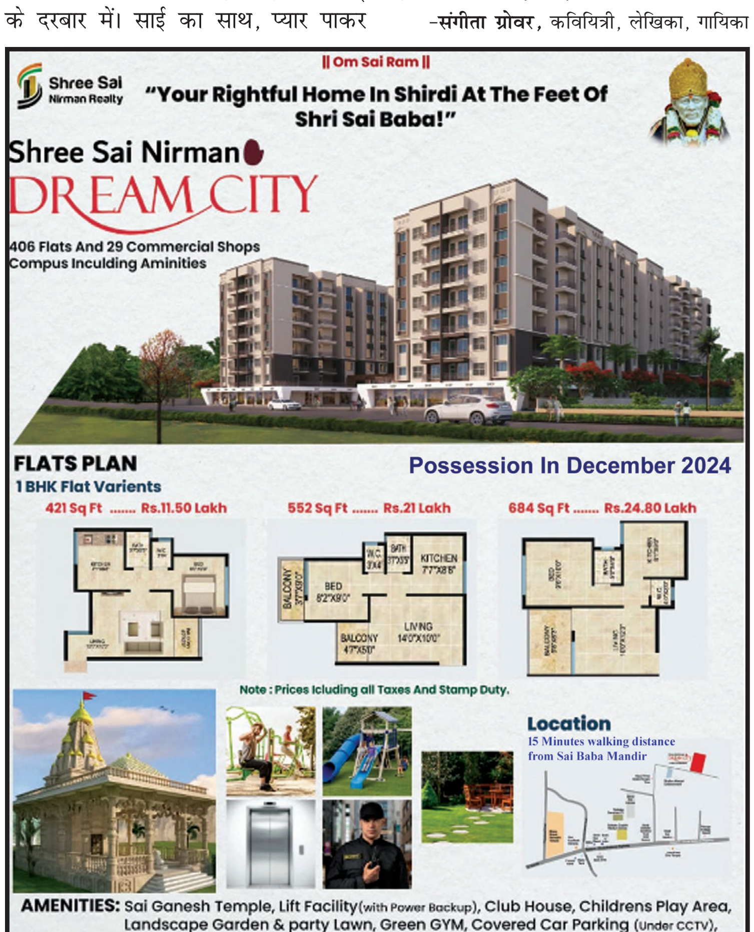

शिरडी में घर जैसे खाने का आनन्द लेने के लिए आऐं
Hotel Sai Krishna
One Minute Walking Distance from Dwarkamai
& For Room Booking in
Hotel Sai Nityanand
Contact:
Monu Agrawal
Ph: 8171521277, 9373447866

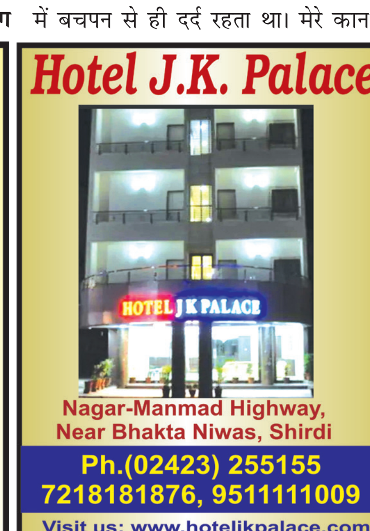

श्रद्धा सबूरी
साई की रसोई
शिरडी से जाने वाले भक्तों के लिए घर का बना शुद्ध व स्वादिष्ट भोजन पैक कराने के लिए सम्पर्क करें
रश्मि वाही
Ph 8587058762

Sri Sai Spiritual Centre Bangaluru Celebrates Samadhi Diwas

Bangaluru: On 28th September 2025, Sai Baba's Mahasamadhi Day was celebrated at Sri Sai Spiritual Centre, Sai Baba Temple Road, NR Colony, Basavangudi, Bangaluru. A memorable program was organized in the temple hall, which was beautifully decorated with colourful fresh flowers and electric lights. The program started at 6 PM sharp with the lighting of lamp. After that well known singers Sri Narsimhan Kannan and Mrs. Divya Raghvan recited bhajans in their melodious voice. All devotees were mesmerized after listening to their soulful bhajans. After bhajans, the chairman of Sri Sai Spiritual Centre Mr. Srichand Rajpal gave a welcome speech and informed everyone about activities of the temple & also spoke about glory of Radhakrishna Swami ji. He said that it has been a tradition every year to release our new year Wall Calendars, Table Calenders and Dairies. After that beautiful Calenders and Dairies of 2026 were unveiled by The Chief Guest Guruma Smt. Shubha Didi, along with Mr. Srichand Rajpal Chairman, and Sri M.S. Jothiraghavan, President, Sri Sai Spiritual Centre. The Calendars and Dairies are made of world class quality with very attractive 12 pictures of Sai Baba. The Quarterly Magazine 'Saipadananda,' and a book titled 'Sri Radhakrishna Swamiji And His Devotees', written by Rangaswamy P Ram Mohan and published by Sterling Publishers, was also released on this occasion. In the end Guruma Smt. Shubha Didi, gave a very motivating speech and also spoke about the glory of Shri Sai Baba.

Many distinuished guests were honored by Mr. Srichand Rajpal and Guruma Smt. Shubha Didi. Mr. Venkatesh Krishnarao gracefully anchored the whole program.

After aarti very delicious prasad was served to all devotees. All the devotees were given a gift of beautiful wall calendar, table calender, Diary, book- Sri Radhakrishna Swamiji And His Devotees, Newspaper- Shri Sai Sumiran Times, Magazine- 'Saipadananda,' Aagarbattis & prasad.

Many dignitaries from Bangaluru, Guruma Smt. Shubha Didi from Chennai, Mr. Sujay Khandelwal, Ms. Priti from Kolkata, Mr. S.K. Ghai & Anju Tandon from Delhi, Mrs. Bindu Midha from Ahmedabad attended this program. It was well attended function which had many dignitaries from different walks of life.

Everyone thanked Mr. Srichand Rajpal Chairman, Mr. M.S. Jothiraghavan President, Mr. D.L. Chandrashekar, Secretary, Mr. Venkatesh Krishnarao, Treasurer and Mr. C. Raveendra, Joint Secretary who arranged the wonderful and unforgettable program.

-Venkatesh Krishnarao

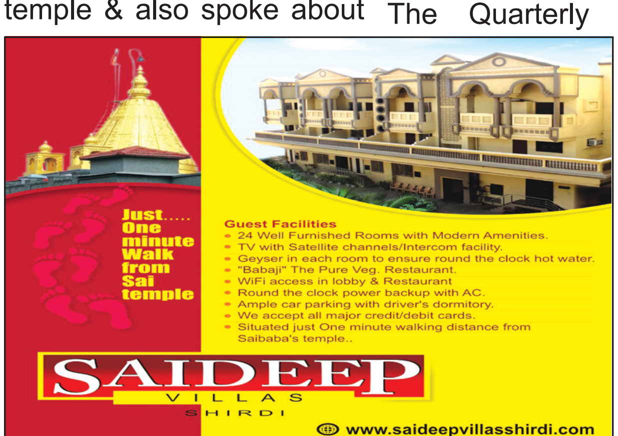

The Holy Trinity

-Tish Malhotra

Our loving Mother Shirdi Sai Baba has His unique way to get His work done by choosing us as His instrument. To accomplish His assigned task, He alone guides and provides all necessary support. Suddenly on one of these days Baba in His unknowable divine play gave the call to describe the lives and teachings of the holy trinity of Shri Ramakrishna Paramhans, Holy Mother Sri Saradadevi and Swami Vivekananda for the good of all His devotees. The immediate question that came to mind why so during this time. The right answer is that the Omniscient Sainath knew that Sri Ramakrishna had entered Mahasamadhi on 16 August in 1886. Similarly, the Holy Mother and Swamiji had entered the Mahasamadhi on 21 July 1920 and 4 July in 1902, respectively. So this is the high time to write about the Holy Trinity in this series on the spiritual heritage of India.

The focus of this article is on Sri Ramakrishna, born on 18 February 1936 in the village Kamarpukur, district Hooghly, West Bengal. Before his birth, his father Khudira Chattopadhyay had a dream that Lord Vishnu would like to be born as his son. His mother too had a divine experience in Lord Shiva temple that the Lord had entered her womb as a luminous light. In due course the child was born and he was named Gadadhar.

During his early days at Kamarpurkar there was ample evidence of his spiritual greatness. Once seeing the sight of white cranes flying across the sky he lost himself in ecstasy. Likewise, when called upon to enact the role of Lord Shiva on the Shivratri day in a play, he passed into deep trance and could not perform the role.

At the age of 16 he came to Calcutta with his brother. He became a priest in the Kali temple at Dakshineswar temple. As a true seeker of the truth, he looked at the image of the Goddess verily as an embodiment of the spirit and not merely as a stone image. When the desire to see Mother Kali became intense and he was ready to behead himself, the Mother revealed Herself to him. Over the years his spiritual austerities got further deepened and his devotion got all the more strengthened.

The greatness of Sri Ramakrishna can be gauged from what Swami Vivekanand said about the message of his Master to the modern world: "Do not care for doctrines, do not care for dogmas or sects or churches or temples; they count for little compared with the essence of existence in each man, which is spirituality; and the more this is developed in a man, the more powerful is he for good. Earn that first, acquire that and criticise no one for all doctrines and creeds have some good in them. Show by your lives that religion does not mean words or names or sects, but that it means spiritual realisation. Only those who can understand, who have felt it. Only those who have attained spirituality, can communicate it to others, and can be great teachers of mankind. They alone are the powers of light.

"The more such men are produced in a country, the more that country will be raised and that country where such men absolutely do not exist is simply doomed, nothing can save it. Therefore, my Master's message to mankind is, "Be spiritual and realise the truth for yourself." To proclaim and make clear the fundamental unity of religions was the mission of my Master. Other teachers have taught special religions which bear their names; but this great teacher of the nineteenth century made no claim for himself. He left every religion undisturbed because he had realised that, in reality they are all part and parcel of the one eternal religion."

In due course, Sri Ramakrishna was guided in the Tantric path, learnt the mysteries of Rama worship, and communed with God through the divine relationship of father mother, friend and beloved. He was instructed in the Vedantic Truth of Brahman, initiated in sannayas and realised complete oneness with Brahman. He also had visions of Prophet Mohammad and Jesus Christ. Thus, it was on the basis of his own personal experiences and realisation of the Truth of various religions, he verified the saying of the ancient Vedic dictum: "Truth is one; sages call it by various names."

Owing to remaining absorbed in deep sadhana at Dakshineswar Sri Ramakrishna could hardly take care of his health. Sleep had totally left him. So, his mother and brother got him married to Saradamani. She being a pure and noble soul, understood her husband's aspirations and sympathised with them. On his part, Sri Ramakrishna regarded her as an embodiment of the blissful Mother of the Universe. On an auspicious day he worshiped her in place of the Divine Mother. From that day she came to be known as Holy Mother Sarada Devi, not only to the devotees of Sri Ramakrishna, but also to the whole of humanity in the true spirit of Motherhood of God.

The thrust of the spiritual teachings of Paramhansa can be comprehended and imbibed from some of the following quotations and their echoes reverberating in the similar benevolent teachings of Sai Baba, which we come across time and again in Shri Sai Satcharitra:

It is God alone who has become everything. But in man He manifests Himself the most. God is directly present in the man who has the pure heart of a child and who laughs, cries dances and sings in divine ecstasy. He is born in vain, who, having attained the human birth, so difficult to get, does not attempt to realise God in this very life.

Do all your duties, but keep your mind on God. Live with all - wife, children, father and mother and serve them. Treat them as if they were very dear to you. But know in your heart of hearts, that they do not belong to you.

A man who spends his time discussing the good and bad qualities of others, simply wastes his own time. For, it is time spent neither in thinking about one's own self nor about the Supreme Self, but in fruitless thinking of others' selves. Don't find fault with anyone, not even with an insect. As you pray to God for devotion, so also pray that you may not find fault with others.

Duties of householders are kindness to living beings, service to devotees and chanting of God's holy name. Repeat God's name, sing His glories and keep holy company; now and then visit God's devotees and holy men.

He who has faith has everything and he who lacks faith lacks everything. It is faith in the name of the Lord that works wonders. Faith is life and doubt is death.

By acquiring the conviction that all is done by the will of God, one becomes only a tool on His hand. Then one is free, even in this life.

Pray to Him in any way you will. He is sure to hear you, for He hears even the footfall of an ant.

One cannot realise God without sincerity and simplicity. God is far, far away from the crooked heart.

A truly religious man should think that other religions are so many paths leading to the Truth. One should always maintain an attitude of respect towards other religions. Knowledge leads to unity; ignorance to diversity.

A tree laden with fruits always bends low. If you wish to be great, be lowly and meek.

Sri Ramakrishna's foremost discipline was Narendranath, who afterwards became known as the world-renowned Swami Vivekananda. The greatness of Swami Vivekanand and the Holy Mother Sarda Devi needs to be described in detail. Therefore, we will know more about him and her later in this series on the spiritual heritage of India.

Sri Ramakrishna suffered from prolonged illness, but for this he never complained or prayed to God for recovery. In the early hours of Monday, the 16 of August 1886 he departed from the world, leaving behind a host of grief-stricken devotees & admirers. But his spiritual legacy shall ever live to guide us on the right path. Readers must find time to study the books available on Sri Ramakrishna to know more about his life, time & his divine message for the spiritual upliftment of human kind.

Bowing down to Lord Sainath we pray to him to always keep us in the holy company. This alone will enable us to remain alert in our efforts to achieve the true aim of human life, that is realization of God.

Shree Sainatha Gnyana Mandira Bhatrenahalli

Bangalore: Shree Sainatha Gnyana Mandira, Bhatrenahalli, Mallur, Bangalore is famous temple. The 20th anniversary of this temple was celebrated on 12th, 13th and 14th September 2025. On 12th September cow puja, Ganga puja and Sai puja was performed. On 13th September in the morning Lalit Sahastra Homa, Sai Homa, Gana Homa, Iyappan Swami Homa, Subramanium Swami Homa and Ishwar Swami Homa was performed. At 9:30 a.m. Laxmi Narayana Ruda Rasya Homa started which continued till 2 p.m. Many devotees attended the homa and got blessings of Sai Baba & Shrimata Appa ji. At night bhajans were recited, all devotees enjoyed the bhajans sung by the singers. On 14th morning at 6 a.m. Gana Homa, Sai Homa, Iyappan Swami Homa, Subramanium Swami Homa, Ishwar Swami Homa, Rudra Homa, Rudra abhishek & Shri Sai Baba panchamirt abhishek was performed. At 10 a.m. a huge procession was taken out in gold chariot and silver chariot. Sai baba was seated in gold chariot and Shrimata Appa ji was seated in silver chariot in the procession. Around 2-3 thousand devotees came in this procession with diyas in their hands. The procession started from Sai Baba temple and went till Narsimha Swami Temple and came back to Sai Baba temple. After that kumbha abhishek was performed and Mahaprasad was distributed to all devotees. In Shri Mata Appaji darbar program, a beautiful & very powerful brass shrichakkra yantra was gifted to around 600 devotees. Devotees keep this shrichakkra yantra in their puja room where they performed kumkum archana along with lalita sahastranama.

Thousands of devotees participated in these programs. The devotional bhajans were also sung at night. In this temple all the programs are organised by members of temple committee, Venketramana, Junior Ghansala, Company Devraj, Nagbhushan, Veena Devi and all sewa kartas of the temple.

-M. Narayanaswamy

Sahasranama Respects Divinity in Everybody

Without some special bonds of past lives no one comes to us. May it be a dog, a pig or a fly. So do not repulse anybody. –Shri Sai Satcharita

We have two aspects within, the unchanging essence which is the ground of our being and the variable. The unchanging is the infinite, non-local, cosmic or universal Self with which we were born and in which we ultimately merge. The other is the finite, local, rigid, yet changing, ego-self which we accumulate and deeply identify with.

Self is one, but appears dual. For example, if we squeeze an inflated balloon in the middle with two fingers, it deforms and appears as two, but when released, restores to its original shape of a single balloon. The same applies to Self. When the singular Self identifies itself with mind–body complex, it gives birth to the ego-self. When the ego-self subsides, what remains is pure Self.

The ego-self constitutes deep, invisible desires, intents, motivations, as well as visible actions and behaviours. Possessed by desires, the ego demands gratification. It sees others as separate and considers disagreement as a threat to its own existence. It persistently demands submission and derives pride in authority and pleasure in subjugation. Therefore, giving reverence to the ego only inflates it. The same applies to self-respect. By holding our ego-self in high esteem, we reinforce our deep intentions, attitudes, beliefs, and become more rigid. The 22nd shloka of Vishnu Sahasranama is: *Amrutyuhu Sarvadhrik Simhah Sandhata Sandhiman Sthiraha Ajo Durmarshananh Shastha Visrutatma Surariha*

Lord Vishnu is Amrutyu– free from death, Sarvadhrik – one who sees everything, Narasimha– combination of human and lion (simha), Sandhata– the regulator, Sandhiman– ordainer, Sthira– stable and firm, Aja– one who is birthless, Durmarshana– unbearable, Shastha– ruler & punisher, Visrutatma– of renowned Self and Surari– the destroyer of the foes of good persons.

Since respect represents both plain observation and reverence, it's pertinent to ascertain what in a person is worth revering or simply observing. We must observe an ego without judgement or reverence. However, reverence is something deep. It flows from the core of our being as a consequence of heartfelt appreciation for the other. Revering ego is futile, but we can certainly revere the underlying, unchanging reality, the infinite Self, of which ego is only a shadow. For this, we have to first free ourselves from clutches of self-image to which we relentlessly cling and defend. We are the prisoners of our ego. It's the crust we have accumulated over our uncontaminated Self that has created a void within and left us isolated like an island, in relation to others. We have to penetrate this crust of ego to reach our deepest core. We can then see and experience the singular Self that pervades everyone.

Once Mrs Khaparde came with a tray of food as an offering for Baba after the noon prayer. On seeing her, Baba yelled with pain, 'O mother, I am dying, I am dying.' He started rubbing His right shoulder and right leg as if someone had beaten Him. Mrs Khaparde kept the tray aside and started massaging Baba's leg carefully. After some time, Baba said, 'Mother, I went to eat curd and got a thrashing on my shoulder and leg.' Baba had not even moved out from the mosque. How could he have gone to eat curd? Baba pointed at a Brahmin in the crowd and said, 'Well brother, are you happy? You have beaten me on my shoulder and leg for no fault of mine.' That Brahmin was frightened. He said nervously, 'How can I ever beat you, Baba? It is unthinkable.' Baba raised his gown and showed fresh, swollen marks on His shoulder and right leg. Baba told the Brahmin, 'I came to you some time ago to eat your curd.' The Brahmin virtually wept, 'Oh God, was it you, Baba, in the form of a cat?' He recollected the entire episode. He was suffering from asthma and Baba had advised him not to eat curd. But he was very fond of curd. To protect it from a cat who came frequently, he hung the vessel from the ceiling. That day he had caught the cat eating the curd and hit it on its right shoulder & right leg. And he missed Sai Baba in the cat.

Seeing this great leela, Mrs Khaparde recollected what had happened a while ago. On her way, she had come across a pig. She offered a chapatti to it, mentally considering it to be a form of Sai Baba. Baba referred to this and told Mrs Khaparde, 'Mother, always remember me. I am in every living being, whether animal or human. Just as you love me here, love everybody else everywhere.' He asked her to come closer. In her ears he said, 'Mother, whatever you may be doing any time, remember to recite the name of Prabhu Ram. Let "Rajaram, Rajaram" be on your lips always. Surely he will look after you.'

Mrs Khaparde was extremely happy. She felt she had achieved everything in life. Placing her head on Baba's, feet she prostrated before Him to receive His blessings. Baba said, softly, 'Allah Malik' and immediately ate all the food she had brought. Shama protested that Baba has favoured Mrs Khaparde. Usually Baba would taste bits of everyone's offering after aarati. Today he had eaten the entire food brought by Mrs Khaparde and may not eat after aarati.

Baba replied, 'Shama, you do not know the sweet taste of this mother's food. In the previous birth, she was a fat cow, full of milk, belonging to a Bania. Everybody was pleased with her sweet milk. Then, as a human, she was born in a Mal family. When she married, her husband he cherished the food she cooked so much that he would forget even his job. Later, she was born as a Kshatriya. And in this birth she is a Brahmin lady. Shama, everybody cooks food, but she puts her heart and love in it. With great affection she serves food to all who come to her door, servants, beggars and poor, as well as dogs, crows, sparrows. I met her after a long time and that is why I ate so much from her plate. Tell me, was it wrong?' Madhava Rao had no answer to this question.

-to be contd...

-Dr. Vijayakumar

Courtesy: An Insight into Vishnu Sahasranama through Sai Baba. Published by: Sterling Publishers P.Ltd.

Ashok Gupta & Veena Ma Falicitated In Shirdi

Shirdi: Mr. Ashok Gupta and Veena Ma were felicitated by Shirdi Sai Baba Sansthan during their visit to Shirdi on 8th September 2025. They visited Shirdi along with Mrs. Kavita Makhija and Mrs. Varsha Sethi. Mr. Ashok Gupta and Veena Ma had donated Rs.1,00,000/- to Shirdi Sansthan during their visit to Shirdi last year. **-Saina**

Gold Kada Offered To Shri Sai Baba

Shirdi: On 30th September 2025, Smt. Sadhana Sunil Kasbe, a resident of Narayangaon, Pune, offered an attractive gold Kada weighing 123.440 grams to Shri Sai Baba. The price of the Kada is Rs.13,12,538. This beautifully Nakkashi Kada was offered at the lotus feet of Shri Sai Baba and later handed over to Sansthan's Chief Executive Officer Shri Goraksh Gadilkar. Shri Gorkash Gadilkar felicitated the donor Sai devotees on behalf of Shri Sai Baba Sansthan. **-G.R. Nanda**

Contd...

Pujyashri Narasimha Swamiji - Ramanujacharya analogy (Part-II)

Ramanujar is considered as an incarnation of Thiruvallikeni Sri Parthasarathy Perumal. So, in Thiruvallikeni Acharya Utsavam is celebrated in a grand manner for 10 days. Usually in Thiruvallikeni no Azhwar or Acharya has a separate veedhi purppadu (procession). They go in front of Perumal facing the Perumal with folded hands. But since Ramanujar is revered as the incarnation of Sri Parthasarathy He has a separate procession. Sri Ramanujar always goes side by side with him and not in front of Parthasarathy Perumal. During the utsavam days every afternoon abhishekam is done to the Pratima of Sri Ramanujar. On the birth star of Ramanujar, a special abhishekam is done along with Sri Parthasarathy Perumal and in the evening Ramanujar rides in the chariot.

Devotees, The Lord will be greatly pleased and joyful when His holy servants are revered and worshipped by His devotees. Pujyashri Narasimha Swamiji is a great saint, sacrificed 20 years of His life only in the service of Shri Sai Baba. We might not have been directly influenced by Narasimha Swamiji, but he has laid the foundation for the Sai movement. It was because of his untiring efforts that we see Shri Sai Baba temples in every city. His books inculcated faith in the minds of people that transformed them into devotees. His life breath was Shri Saibaba. His only goal was to spread the glory of Shri Sai Baba from Kanyakumari to Kashmir. Should He not be honored as the greatest Sai pracharak? Are we not supposed to celebrate and honor Him in Shri Sai temples? Are we being grateful for the astounding services He has rendered to Shri Sai Baba?

Hence, I humbly appeal to the temple trustees and founders of Shirdi Sai temples that just like how Ramanujacharya's and other Azhwars Pratimas are placed in the Divya Desams (temples dedicated to Lord Vishnu) and as the pratimas of the holy servants of Lord Shiva (Nayanmars) are kept in the Jyotirlingams (shrines dedicated to Lord Shiva) likewise we must install and worship the Pratima of Narasimha Swamiji. If not at least a divine portrait of Narasimha Swamiji must be kept in the temples of Shri Sai Maharaj, with a brief description explicating the services of Swamiji. As we prostrate at the lotus feet of Shri Sai Maharaj, we must pay our humble pranams to Narasimha Swamiji. But unfortunately, many devotees are not even

aware of the exceptional services of Swamiji which is heart breaking.

Narasimha Swamiji was used as an instrument by Shri Sai Baba to propagate His glory all over India and outside. The easiest way to reap the divine grace of Shri Sai Baba is by singing the praise of His apostles.

As directed by Shri Sai Baba, a wall hanging has been printed to pass on to all the Sai temples. I humbly request the Sai temples to place this wall hanging in a spot conducive for the devotees to read so that they would get a gist of Narasimha Swamiji.

With all respects I make a plea to Shri Sai Samsthan to please play the audio of Shri Sainatha Mananam every day. At every Sai temple devotees must sing or play the audio of Stavana Manjari and Shri Sainatha Mananam because these are the soulful renditions by the great apostles of Shri Sai Maharaj which when listened will penetrate the heart of devotee and kindle the loving devotion to Shri Sai Baba. Temples willing to take the wall hanging (image attached) kindly send the complete temple address to saiasha14@gmail.com and I shall arrange to send it for free of cost- I have Kuberanche Kubera my Shri Sai Baba why do I need anything from anyone.

Is Narasimha Swamiji my guru- My life breath is Shri Sai Baba, He is my helmsman these are not mere statements, all my wants and needs of the materialistic life are taken care of and about spiritual life, you name it I have been granted that blessing or state of consciousness by my Shri Sai Maharaj. With all humility I would say that I am under His direct guidance and command. I am not here to promote any temple.

My connection with Narasimha Swamiji- My first encounter with Bhairava Shirdi Sai Baba was as astounding as it was for Shri Narasimha Swamiji at Shirdi Samadhi mandir.

We all are greatly indebted to Narasimha Swamiji because His Sai prachar gave rise to so many temples. I was blessed to be drawn to my Sadguru when I first visited Shri Bhairava Saibaba mandir, at Chennai. Otherwise, I wouldn't have known (30 years ago) in which corner of the India map the hamlet Shirdi was. I got the most precious gem Shri Sai Baba in my life who out of compassion has granted all the material and spiritual welfare that one would aspire for. I can't imagine what I would be today if Shri Sai Baba had not pulled me towards Him. I consider it as my duty and responsibility to share the greatness of Shri Sai Baba and His apostle to the world for everyone to reap His unbounded grace. Humbly submitting at the lotus feet of Sadguru Shri Sainath Maharaj. Aum Sairam

-Sai Asha

https://www.youtube.com/@saiasha1825

For Daily Shirdi Darshan, Experiences of Sai Devotees & Latest News
Subscribe and Like Youtube Channel of Shri Sai Sumiran Times
https://youtube.com/@shrisaisumirantimes3022

Shri Sai Samiti Sector-40 Noida

Way back in 1989, the idea of having a temple in the developing township of Noida was conceived by a small group of dedicated Sai devotees. Initially, the group started spreading awareness of Shirdi Sai Baba by

holding Puja- Archana and bhajan at the residence of devotees, culminating into the formation of a registered society, Shri Sai Samiti Noida, in 1991. The samiti got a plot allotted by the Noida Authority in 1995. On 13th of April 1995 a small murti of Baba was installed under the shade of a shed, now, this beautifully built up annexe is Gurusthan. At the same time we started a dispensary for needy people. On 23rd November 1999, the eventful day came when the dream of devotees materialized by coming up of the Mandir. Baba's statue was installed and 'Pran-pratishtha' was performed. Thus came into existence the first magnificent Shirdi Sai Mandir in Noida. Beginning of 21st century saw the completion of the temple building with an imposing four and half storyed main temple along with the Dwarkamai, Gurusthan and other adjuncts such as Seva kaksh, Prasadalay, Service Center and the like.

Shri Sai Samiti serves all devotees with daily Bhandara (free meal service) three times a day: morning 8 AM, noon 12:30 & evening 7:00 PM.

Additionally, Sai Ki Rasoi is organized on Thursdays and Sundays at 12:30 PM, where around 2000 to 2500 devotees take the blessed prasadam. The Samiti also extends its Mid-Day Meal Seva to Sai Vidya Niketan, other schools and hospitals, ensuring nutritious food reaches those in need.

Sai Dharmarth Chikitsalaya

Shri Sai Samiti Noida runs a dispensary 'Sai Dharmarth Chikitsalaya' for the needy people of our society. We provide medical care to 150-200 patients daily with free medicine. Currently 28 medical practitioners are in service covering all specialities like Generel Medicine, Gynaecology, Eye Care, ENT, Pediatrics, Orthopaedic, Cardiology. A separate Dental Clinic is also a part of the chikitsalaya. We also have a well equipped Pathology Lab including X-ray & Ultrasound. We also undertake Physiotherapy.

Medical Camp: The 'Sai Dharmarth Chikitsalaya' also arranges Health Check-ups, Blood Donation & Eye care camps frequently with the assistance of local hospitals and social organizations like Rotary and Lion clubs. 'Sai Dharmarth Chikitsalaya' is also a recognized center for cancer detention & T.B.

Sai Vidya Niketan School:

A Charitable Middle School, Sai Vidya Niketan, recognised by the U.P. Government, is already functioning and providing education upto 8th Standard. It is an English Medium school and follows the syllabus of NCERT. The school is currently providing free education to around 350 students. The students are not charged any fees and are provided with free uniforms, socks/shoes, Books, Copies, Bags, Sweaters and stationery, alongwith free breakfast and lunch. All educational expenses are borne by the Samiti from Mandir funds.

Let us work together- Teacher, Parents, the wider community and our Sai Samiti to foster an environment of equality, empathy and excellence. Together, we can uplift lives and create a future where every student can thrive and succeed.

New School Building project: A new building for the school is under construction on a two-acre (8094 sqm.) plot in Sector-2, Greater Noida West. The plan is to impart free education to at least 1200-1500 students, including classes up to the 12th standard.

Construction Details:

The building will be constructed in 2 phases. Phase 1 has a total estimated cost of 19 crores, out of which 9 crores have already been spent to complete the structure. The building will have a single basement and 6 floors. It is designed with special facilities for CBSE standards and multipurpose educational use post school hours. At present 10 crores are urgently required, and we appeal to all devotees and well-wishers to kindly extend their support in this noble cause.

Appeal for Donation:

We humbly appeal to all devotees and kind-hearted individuals for generous donations to help us complete the school building at the earliest.

Donations can be made in F/o Shri Sai Samiti Noida, in State Bank of India, Account No: 52007663089, IFSC Code: SBIN0031811, Branch Sector-18, Noida,

Management Committee Members:

Brig. G.K. Manucha, Patron, Sh. V.R. Raghavan, immediate Past President, Sh. Neeraj Prakash, President, Dr. Neeraj Kumar, Vice President, Sh. Dev Raj Goel, General Secretary, Sh. Brij Lal Garg, Treasurer, Smt. Renu Fotedar, Joint Secretary, and Members: Sh. Pradeep Kumar Jindal, Capt. Vinod Kumar Berry, Sh. Sunil Bhan, Sh. Mahesh Chandra Gupta, & Sh. Shruti Kant Sharma, Kanak Lata Gaur, Principal, Principal cum Administrator, Pradeep Srivastav, Accountant, Manjesh Jha, Admin, Bhoopendra Singh, Social Media & Website.

-Shri Sai Samiti Noida

Anniversary Celebration of Sai Temple Rangat

Andaman Island: On September 4, 2025 Shree Shirdi Sai Baba Temple in Rangat marked its 7th anniversary with a grand celebration that drew innumerous Sai devotees and members of the general public. The event commenced with the traditional Kakad Aarti, followed by Madhyan Aarti, setting the tone for a spiritually uplifting day.

The highlight of the celebration was the Palki Yatra, which began from the Sai Temple and proceeded to the Zilla Parishad Auditorium via Hawa Mahal. Devotees were blessed with the divine presence of Baba during this procession, filling their hearts with devotion and joy.

The Nirman Orchestra Group from Rangat organized an enchanting orchestra program, featuring Sai Baba songs and devotional tunes. The performance, themed "Aaj Ki Sham Sai Ke Naam," resonated deeply with the audience, creating an atmosphere of spiritual fervor. Serving the devotees as a gesture of gratitude

and service, annadanam was served to all Sai devotees and members of the general public who attended the function. This selfless act embodied the spirit of compassion and community that defines the Sai philosophy.

The 7th anniversary celebration of Shree Shirdi Sai Baba Temple was a testament to the enduring legacy of Sai Baba's teachings and the devotion of his followers. The event served as a reminder of the power of faith and community in bringing people together.

-Senthil Kumar, Rangat, Andaman Island

108 Names of Shri Saibaba

by Satya Shri Sant Vivek Ji

It is my staunch belief that reading or listening of Sai Sanjeevni (108 names of Sai Baba) will dispel all doubts of devotees & remove miseries and sorrows from their lives. They will definitely realise the Self and be One with Shri Sai.

Om Shri Sai Adbutaanant-Charyaay Namah

Sai, the performer of marvelous and blissful deeds, He did so many miracles. Even today he is doing so many miracles. He is the Supreme Self who has taken birth in human form out of love towards his devotees. He was capable of performing infinite and marvelous deeds. It is said that he used to take out his intestines from his body and clean it with water and hang on the tree for drying. Many people in Shirdi saw him doing this. His ways are very peculiar. He would himself attract his devotee and relieve him from distress and motivate to realise the Self. Sai, is a real preceptor who can produce blissful sensation in the body of the disciple by his sight, touch, or instructions. He is the symbol of existence, consciousness and bliss. He says that I am always present near you, it is you who forgets me. My humble salutation to Shri Sai who can perform infinite and marvelous deeds.

Our Associates

Agra - Sandhya Gupta
Aligarh- Seema Gupta
Ashok Saxena, D.P. Agarwal
Ambala - Ashok Puri
Amritsar- Amandeep
Ahmedabad - Arjun Vaghela
Aurangabad-Ashok Bhanwar Patil
Assam - Bidyut Sarma
Badayun - Varinder Adhlakha
Bhilwada - Kailash Rawat
Banas - P.K.Paliwal
Bareilly - Kaushik Tandon
Sapna Santoria, Prathmesh Gupta
Bhopal
Ramesh Bagre, Surendra Patel
Bangalore-Chandrakant Jadhav
Bathinda-Govind Maheshwari
Bikaner- Deepak Sukhija
Surender Yadav, Pt. Sadhu Ji
Purnima Tankha,
Bihar- Balram Gupta
Bokaro - Hari Prakash
Bhagalpur - Anuj Singh
Bhuvneshwar (Odisha)
Pabitra Mohan Samal
Chandigarh - Puneet Verma
Chennai - M. Ganeson
Chattisgarh- Nikhil Shivhare
Dehradun - H.K. Petwal,
Akshat Nanglia, Mala Rao
Dhanaula - Pradeep Mittal
Faridabad - Nisha Chopra
Ashok Subromanium,
Firozpur - P.C. Jain
Goa - Raju
Gurgaon - Bhim Anand,
Chander Nagpal
Ghaziabad - Bhavna Acharya
Usha Kohli, Dinesh Mathur
Gujarat - Paresh Patel
Gwalior - Usha Arora
Haridwar - Harish Santwani
Hissar - Yogesh Sharma
Hyderabad - Saurabh Soni,
T.R. Madhwan
Indore- Dr. R. Maheshwari
Jalandhar - Baba Lal Sai
Jabalpur
Chandra Shekhar Dave
Jagraon - Naveen Khanna
Jaipur - Puneet Bhatnagar
Kolkata - Sushila Agarwal,
D. Goswami
Kapurthala - Vinay Ghai
Korba - T.P. Srivastava
Kurukshetra - Yash Arora
Pradeep Kr. Goyal
Kaithal - Naveen Malhotra
Lucknow - Gayatri Jaiswal,
Sanjay Mishra, Rajiv Mohan
Ludhiana - Umesh Bagga,
Rajender Goyal, Sai Puja,
Sanjiv Arora
Mandi Govind Garh
Shunti Bhaji, Rajiv Kapoor
Mawana - Yogesh Sehgal
Meethapur - Shrigopal Verma
Meerut - Kamla Verma
Mumbai-Anupama Deshpandey
Kirti Anurag, Sunil Thakur
Moradabad - Ashok Kapur
Mussoorie- R.S. Murthy,
Surinder Singhal
Nagpur - Pankaj Mahajan,
Srinivasan, Narendra Nashirkar
Noida - Amit Manchanda
K.M. Mathur, Kanchan Mehra,
Panipat- Raj Kumar Dabar,
Sanjay Rajpal
Patiala - P.D.Gupta,
Dr. Harinder Koushal
Panchkula - Anil Thaper
Palampur - Jeewan Sandel
Parwanoo - Satish Berry,
Chand Kamal Sharma
Pune - Bablu Duggal
Sapna Lalchandani
Port Blair
J.Venkataramana, Ghanshyam
Pundri - Bunty Grover
Patna - Anil Kumar Gautam
Ranchi - Deepak Kumar Soni
Rewari- Rohit Batra
Rishikesh- S.P. Agarwal,
Ashok Thapa
Raigarh - Narinder Juneja
Roorkee - Ram Arya
Rudrapur-Naresh Upadhyaye
Shirdi - Sandeep Sonawane
Nilesh Sanklecha, H.P. Sharma
Sonepat- Rahul Grover
Sangrur - Dharminder Bama,
Sirsa-Komal Bahiya, Bunty Madan
Surat - Sonu Chopra
Udaipur - Dilip Vyas
Ujjain - Ashok Acharya
Vidisha - Sunil Khatri
Zeera - Saranjeet Kaur

साई तुम हो

साई तुम हो
तुम सत्य में विश्वास में
भक्तों की हर एक आस में

साई तुम हो
तुम रूह में
तुम सांस में
जीवन की हर
इक राह में
साई तुम हो
तुम साधना साई
तुम आराधना
प्यार भरे स्पर्श से भक्तों को बांधना
साई तुम हो
तुम धर्म में साई तुम कर्म में
जीवन के इस मर्म में मेरे साई तुम हो

-संगीता ग्रोवर
गायिका लेखिका कवियत्री

एक साई

इस ज़माने ने जीवन में,
भरोसे के कई शून्य लगाए
अनायास अनजाने में,
मोती समझ मैंने माथे लगाए
फिर जीवन में आया, कठिनाईयों का ऐसा दौर

खिंचा चला आया मैं,
थका हारा शिरडी
की ओर,
साई ने प्रेम से बिठाया,
अपने गले से लगाया,
हाथ थाम कर बोले,
मैंने खुद तुझे है बुलाया,
वह मुश्किलों का दौर,
मेरा ही था तुझे निमंत्रण,
क्यों चिंता करे है पगले, जब आया है मेरी शरण,
'एक' सद्गुरु साई ने मुझे,
'एक' रास्ता है दिखाया,
सेवा का 'एक' दिया, और शून्य के आगे लगाया,
अब साई सेवक बनकर, ज़माने से छुटकारा पाया,
एक साई को समझा,
साई लीला का दर्शन पाया।

-विनोद भाटिया

शिरडी डायरी

श्रीगणेश श्रीकृष्ण खापर्डे ने शिरडी में अपनी दिनचर्या डायरी में लिखी। प्रस्तुत हैं उसी डायरी से कुछ अंश:

24 जनवरी 1912: आज सुबह मैं ज़्यादा सो गया। इससे मुझे हर चीज़ में देर हुई। मुझे अपनी दिनचर्या में सब कुछ जल्दी-जल्दी करना पड़ा। श्री दीक्षित को भी देर हुई, और हर कोई इसी परेशानी में घिरा हुआ लगा। हमने साईबाबा के दर्शन उनके बाहर जाते हुए किए और फिर उपासनी, भीष्म और बापू साहेब जोग के साथ परमामृत का पाठ किया।

उसके बाद मैं साईबाबा के दर्शन के लिए मस्जिद गया। लक्ष्मीबाई कौजलगी हमारी परमामृत की कथा में उपस्थित हुई और मेरे पहुंचने के बाद मस्जिद गई। साईबाबा ने उन्हें अपनी सास कहा और उनके द्वारा प्रणाम करने पर हास-परिहास किया। इससे मुझे ऐसा विचार आया कि बाबा ने उन्हें शिष्य रूप में स्वीकार कर लिया है। मध्यान्ह आरती सामान्य रूप से बल्कि बहुत शांति से सम्पन्न हो गई।

मेरे वहां से लौटने के बाद मैंने कोपरगांव के मामलेदार श्री साने को बरामदे में बैठा हुआ पया। वे गावोत्थान के विस्तार कार्य और कब्रिस्थान और मरघट को हटाने के संबंध में लगान का कार्य कर रहे थे। भोजन के बाद मैंने कुछ पत्र लिखने चाहे लेकिन फिर श्री साने के साथ बातचीत करने बैठ गया। फिर श्री दीक्षित ने रामायण पढ़ी और बाद में साई साहेब के दर्शन के लिए मस्जिद गया, लेकिन क्योंकि सभी को जल्दी ही भेज दिया गया इसीलिए उदि ली और चावड़ी के पास खड़ा हो गया। वहां मैं एक मुस्लिम कबीरपंथी सज्जन से मिला जो कुछ समय पहले साठे और असणारे के साथ अमरावती आए थे। शाम को वाड़े में आरती हुई और फिर चावड़ी में शेज आरती हुई। मैंने हमेशा की तरह चंवर पकड़ा।

किसी भी विज्ञापन पर अमल करने से पहले उसकी सत्यता की जांच स्वयं कर लें। प्रकाशक व सम्पादक इसकी प्रमाणिकता के लिए किसी तरह से ज़िम्मेदार नहीं होंगे। विज्ञापन एवं लेखकों की राय से सम्पादकीय का सहमत होना अनिवार्य नहीं।

साई का हमसे जन्मों का नाता है

माटी जैसा हो बदन, बस लेता नया आकार।
माटी को नये रूप में, ढाले ज्यों कुम्हार।।

साई जन्म-जन्मांतर के बंधन में बेहद यकीन रखते थे। हमारे दर्शन में लिखा भी है कि आत्मा कभी मरती नहीं, बस शरीर बदलती है। दरबसल, इस बात को कई लोग इसलिए नकारते हैं, क्योंकि उन्होंने ऐसा होते नहीं देखा। उन्हें याद नहीं होता कि उनकी आत्मा पिछले जन्म में किस शरीर में मौजूद थी। लेकिन ज़रा सोचिए, देख तो हम साई को भी नहीं पाते, तो क्या यह मान लेते हैं कि साई जैसी कोई वस्तु है ही नहीं! जैसे साई की उपस्थिति को महसूस किया जाता है, वैसे ही आत्मा का नया अवतार भी आभास करने की ही चीज़ है।

हम अपने जन्म में जो सुख-दु:ख भोगते हैं, वे हमारे पूर्व जन्मों के कर्मों का ही प्रतिफल होते हैं। इसलिए यह मान लीजिए कि इस जन्म में हम जो भी काम करेंगे, जैसा भी कर्म करेंगे, धर्म करेंगे उसका प्रतिफल हमें अगले जन्म में भोगना ही होगा। यानि वही असली स्वर्ग और नरक होगा, बाबा इस बात को अच्छे से जानते थे।

कर्म तो अपने आप में एक बेहद वृहद विषय है, लेकिन हमें यह जानना ज़रूरी होगा कि कर्म तीन प्रकार के होते हैं: (1) क्रियमाण, (2) संचित और (3) प्रारब्ध। क्रियमाण कर्म वो होते है जो अभी हुए नहीं है और इसी कारण से हमारे अधिकार में होते है। संचित कर्म वो कहलाते है जो पूर्व में हो चुके हैं लेकिन उनका फल निर्धारण अभी हुआ नहीं है। इन कर्मों का फल अभी पका नहीं है। प्रारब्ध वो कर्म होते हैं जो पूर्व में हमारे द्वारा किये जा चुके हैं और उनका फल जो हमें भोगना है, निर्धारित हो चुका है और हमारे भाग्य निर्माण में उसका अंश पूर्णत: समाहित हो चुका है।

अमेरिका में एक बड़े साईको थैरेपिस्ट हैं। उनका नाम है डॉ. ब्राइन वाइस। उन्होंने पुनर्जन्म पर बहुत सारी किताबें लिखी हैं। ये हिप्नोसिस के भी मास्टर रहे हैं और लोगों को उनके पूर्व जन्म में ले जाते हैं। जब डॉ. ब्राइन लोगों को पूर्व जन्मों में ले जाते हैं, तो उनका संपर्क कुछ ऐसी अच्छी आत्माओं से हो जाता है, जिन्हें वो मास्टर कहते हैं। जब इनका उनसे संवाद हो जाता है, तो यह बन जाता है 'वाइस ऑफ मास्टर'।

डॉ. ब्राइन वाइस ने अपनी एक पुस्तक, मैसेजेस् फ्रॉम द मास्टर्ज़, में लिखा है कि एक बार उनका संपर्क एक मास्टर से हो गया जिसने डॉ. ब्राइन को एक संदेश दिया। यह संदेश था-आवर टॉस्क इज़ नॉट टू फॉलो साई बाबा, बट बी साई बाबा, यानी कि बाबा का अनुसरण न करो, खुद साई बन जाओ। यह सच भी तो है, क्योंकि बाबा भी तो यही चाहते हैं।

तब की बात....

नाना साहेब चांदोरकर को उन्होंने कैसे बुलवाया इसकी कथा भी रोचक है। नारायण गोविंद चांदोरकर उर्फ नाना साहेब डिप्टी कलेक्टर के निजी सहायक थे। शिरडी से करीब 15 कि.मी. पर कोपरगांव में वह सीमांकन करने आए हुए थे। अप्पा कुलकर्णी शिरडी के ही रहने वाले थे और उनके रैवेन्यू डिपार्टमेंट में थे। नानासाहेब ने जामाबंदी के कार्य में अपनी मदद के लिए अप्पा को बुलवाया। अप्पा कुलकर्णी ने बाबा से अनुमति ली क्योंकि शिरडी से बिना बाबा की अनुमति लिए कोई जा नहीं सकता था और बिना बाबा की अनुमति के कोई भी द्वारकामाई की सीढ़ी चढ़ नहीं सकता था।

अप्पा कुलकर्णी बाबा के पास गए। बाबा ने कहा-ठीक है जाओ और वहां नाना से कहना कि मैंने उसे बुलाया है। अप्पा कुलकर्णी हतप्रभ कि यह नाना कौन हैं? बाबा ने कुलकर्णी के चेहरे के भाव पढ़ लिए। वे फिर बोले-अरे जाओ भई, वहां तुम्हारा एक अफसर है उसका नाम है नाना।

अप्पा कुलकर्णी तो ठहरे मुलाज़िम! बेचारे उनको क्या मालूम साहिब का नाम। वहां गए, तो पता चला नारायण गोविंद चांदोरकर को नाना साहेब के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने बाबा का संदेश नानासाहेब को दे दिया। नानासाहेब ने अहंकार में सवाल किया, वह फकीर क्यों मिलना चाहता है मुझसे? मैं ऐसे फकीरों से नहीं मिलता। कुलकर्णी ने बाबा को संदेश पहुंचा दिया कि नाना ने तो आपसे मिलने से स्पष्ट मना कर दिया है। बाबा ने कहा, कोई बात नहीं। बाबा ने सवाल किया, अगली बार जामाबंदी याने की सीमांकन कब होने जा रहा है। अप्पा ने कहा-बाबा! अब तो यह कोई छह महीने बाद ही होगा। बाबा ने कहा, ठीक है तुम जाओ तो मुझसे पूछ कर जाना और नाना को साथ लेकर ही आना।

अप्पा अगली बार भी गए, बाबा ने फिर वही बात दोहराई। अप्पा फिर नाना के पास पहुंचे और साई की बात दोहराई। नाना ने फिर जाने से मना कर दिया। इस तरह कुछ समय बीत गया। बाबा ने बुलाना नहीं छोड़ा और नाना भी न आने की ज़िद पर अड़े रहे। कुछ समय बाद फिर अप्पा बाबा के पास गए। बाबा ने उन्हें फिर से नाना को बुलाने भेजा।

इस बार तो बाबा ने वजह भी तैयार कर रखी थी। अहमदनगर ज़िला कलेक्टर का आदेश था कि चेचक के प्रकोप से बचने के लिए सभी शासकीय कर्मचारी चेचक का टीका लगवाये। चूंकि प्रमुख कर्मचारियों को यह टीका पहले लगवाना था और इसके बारे में पहले से किसी को ठीक-ठीक पता भी नहीं था, इस कारण से नाना तनाव में थे। अप्पा के इस बार फिर बाबा के संदेश के बाद नाना के मन में भाव जगे। उन्हें लगा कि ये फकीर ही मुझे इस मुसीबत से बचा सकता है। मेरा नाम भी जानता है ये तो? लिहाज़ा मन में कई सवाल लिए आखिरकार इस बार नाना जा पहुंचे बाबा के दरबार में। नाना ने जाते ही प्रश्न किया-आपने मुझे क्यों बुलाया। बाबा ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया-मेरा और तेरा चार जन्मों का रिश्ता है। दुनिया में कई नाना हैं, मैंने तुझे ही क्यों बुलाया सोच ज़रा? बाबा ने नाना के संशय का समाधान उनको आश्वस्त करके किया कि इस टीके को लगवाने में कोई नुकसान नहीं है।

इसके बाद देखिए कि नाना साहेब ने बाबा के संदेश वाहक का कार्य किया। संपूर्ण महाराष्ट्र, विदर्भ और खानदेश में बाबा की ख्याति फैलाई। बाबा के वे भक्त जो बाद में खुद भी अपने-अपने कर्मों के कारण प्रसिद्ध हुए उन सभी को नानासाहेब शिरडी लाए थे। स्वयं नाना की आध्यात्मिक उन्नति में भी बाबा के साथ उनके संसर्ग का पूर्ण योगदान रहा।

साई से सीधी सीख...

हम लोग अपने स्वार्थवश ही किसी तीर्थ-स्थल अथवा धाम को जाते हैं। जब तक हम किसी तनाव या परेशानी में नहीं घिरते तब तक हम भगवान की ज़रूरत महसूस नहीं करते हैं। यदि हम अपने सुख के क्षणों में साई को धन्यवाद देते हुए लगातार, उन्हें हर वक्त याद करते रहें तो दु:खी करने वाली परिस्थितियां अगर हमारे समक्ष आती भी है तो हमें दु:ख नहीं होगा। अपने आध्यात्मिक विकास और मानसिक स्थिरता के लिए हमें परमपिता परमात्मा या अपने साई में पूर्ण श्रद्धा रखते हुए अपने सुख के समय में उन्हें याद करते रहना होगा। कबीरदास ने लिखा भी तो है:

दु:ख में सुमिरन सब करें, सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करें, तो दु:ख काय को होय।

श्यामा और श्रीमती खापर्डे का किस्सा...

बाबा के परमभक्त थे श्यामा, जो एक स्कूल मास्टर थे। एक बार अचानक बाबा ने उनके गाल पर चिमटी काट ली। श्यामा तो कभी बाबा से नाराज़ होते नहीं थे लेकिन उस दिन उन्होंने बाबा से कहा, बाबा, तुम कैसे देव हो। ये सब हरकतें मत करो मुझे यह सब पसंद नहीं। बाबा ने हंसते हुए कहा, तुम्हें कैसा देव चाहिए? श्यामा ने कहा, ऐसा देव जो रोज़ हमें मीठा-मीठा और अच्छा-अच्छा खाने को दे। रोज़ नए कपड़े दे, और आखिर में बोल पड़े, हमें सुख से रखें। बाबा ने तपाक से कहा, इसीलिए तो मैं यहां आया हूं। श्यामा, मेरा-तेरा 72 जन्मों का नाता है।

ठीक ऐसा ही किस्सा श्रीमती खापर्डे के साथ हुआ। जब बाबा रोज़ दोपहर में खाना खाते थे तब एक बार यदि पर्दे गिर जाएं, तो फिर किसी को भी बाबा के कक्ष में जाने की अनुमति नहीं होती थी। कुछ खास लोग जैसे बड़े बाबा, तात्या, श्यामा ही बाबा के साथ भोजन करते थे। एक दिन श्रीमती खापर्डे ने अचानक परदा हटा दिया। दरअसल, उन्हें बहुत इच्छा थी बाबा को नैवेद्य चढ़ाने की। पर्दा हटाकर उन्होंने थाली बाबा के सामने रख दी। बाबा ने बाकी सारा भोजन अलग रख दिया और उसी थाली से स्वाद लेकर खाने लगे। इस पर श्यामा ने उनसे पूछा- बाबा यह क्या है? बाकी भक्त इतने प्यार से तुम्हारे लिए भोजन लेकर आए और तुमने सब परे कर इस बाई की थाली में से ही खाना पसंद किया? बाबा ने तात्या और श्यामा की ओर देखते हुए श्रीमती खापर्डे को जवाब दिया, मेरा इसका कई जन्मों का नाता है। यह कुछ जन्मों पहले साहूकार के यहां मोटी गाय थी। फिर इसका जन्म एक क्षत्रिय परिवार में हुआ और अब ब्राह्मण परिवार में यह जन्मी है। हर जन्म में मेरा इसका नाता रहा है।

साई से सीधी सीख...

बाबा का मानना था कि यदि तुम्हारे पास कोई आता है तो तुम्हारा उसका ज़रूर कोई पुराना ऋणानुबंध है। यह ऋणानुबंध किसी पूर्व जन्म के लेन-देन का परिणाम हो सकता है। यदि सड़क पर भी कोई भिखारी आता है, तो उसका भी तुमसे पुराने जन्म का कोई ऋण रहा है, जिससे वह तुम्हें मुक्त करने आया है। यदि तुम उसकी मदद न भी करना चाहो, तो उसे दुत्कारों मत। कितनी अच्छी सीख देते हैं बाबा। यदि कोई हमारे पास मदद के लिए आया है तो इसे खुदा की नेमत समझो कि उसने हमें इस लायक बनाया है। हम उसकी मदद करें या न करें ये हमारी सद्बुद्धि पर निर्भर करता है। यदि हम मानसिक शांति चाहते हैं तो हमें इस ऋणानुबंध से मुक्ति पानी होगी। हमारा हाथ सिर्फ देने के लिए उठे, लेने के लिए नहीं। लेने से यह ऋणानुबंध और आगे के लिए बढ़ जायेगा। जब भी हम पर कोई दु:ख या तकलीफ आये तो अपने साई से ही मदद मांगनी चाहिए। किसी और से मदद मांगने पर अहसास होता कि परेशानी तो शायद कुछ पल की थी पर अहसान पूरी ज़िंदगी का चढ़ जाता है।

बाबा भली कर रहे। **-सुमीत पोंदा**
आभार-सबके जीवन में साई बातें एक फकीर की

पुरानी चोट अथवा दर्द के इलाज हेतु तेल तथा लेप श्री साई मंदिर, एच ब्लॉक, सरोजनी नगर, नई दिल्ली से प्राप्त किया जा सकता है।
सम्पर्क करें- प्रीति भाटिया
फोन: 9899038181

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी व सम्पादक अंजु टंडन ने वीबा प्रैस प्रा. लि., C-66/3, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली से छपवा कर F-44-D, MIG फ्लैटस, G-8 एरिया, हरि नगर, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित किया।
PRGI No. DELBIL/2005/16236

पृष्ठ 1 का शेष भाग

मेरी शरण आ खाली जाये...

पंडित जी ने बाबा की समाधि से दो फूल उठाकर मेरी पत्नी को दिए। बाहर निकलकर गुरु स्थान पर जैसे ही हमने बाबा के दर्शन किये, पंडित जी ने अपने हाथ में रखा, बिना हमारे मांगे ही एक नीम का पत्ता मेरी पत्नी को दिया। उसके बाद हम donation काउन्टर पर गए वहां जो सज्जन रसीद काट रहे थे उन्होंने रसीद के साथ उदि के पैकेट दिए जैसे ही हम चले उन्होंने कहा ये कुछ एक्स्ट्रा पैकेट हैं जो मेरी तरफ से। मैंने उनसे कहा कि आज मेरी पत्नी को जन्मदिन के बहुत उपहार मिल गए। उन्होंने एक बहुत अच्छी बात कही कि हम सब यहां यंत्रवत ही कार्य करते हैं सभी आदेश बाबा की और से ही आते हैं। किसको क्या और कितना देना है ये बाबा ही बताते हैं। हम सब साई भक्तों के अलावा और लोगों को भले ही यह सब साधारण सी बात लगे पर हमारे लिए यह किसी चमत्कार से कम नहीं था। एक तो हम कोई VIP नहीं थे, ना पंडित जी हमें जानते थे। बस हम तो साधारण भक्त हैं जो अभी बाबा का नाम लेना सीख ही रहे हैं, फिर भी बाबा ने हमें अमूल्य उपहार दिए। बाबा ने सच ही कहा है- मुझे सदा जीवित ही जानो, अनुभव करो सत्य पहचानो। बाबा आप हम सभी पर अपनी कृपा बनाए रखें।

-मनोज चोपड़ा, गाज़ियाबाद

अंधेरे में अपनी छाया भी साथ नहीं देती, बुढ़ापे में अपनी काया भी साथ नहीं देती, सारा जीवन दांव पर लगा दिया जिसके लिए, अन्त समय में वो माया भी साथ नहीं देती।

बाबा एक किस्से अनेक

यूं तो बाबा के किस्से अनगिनत हैं, कॉपी और कागज़ खत्म हो जाए मगर बाबा के किस्से खत्म नहीं होंगे। उन किस्सों में से चन्द किस्से आप सभी साई भक्तों के साथ शेयर करूंगा। शिरडी में 28 अगस्त 2025 को मैंने जो महसूस किया, उससे यह साबित हो गया कि बेशक बाबा शरीर रूप में हम सबके बीच मौजूद नहीं हैं मगर वो शिरडी के हर कोने में अब भी वास कर रहे हैं। इससे पहले कि मैं आपको अपनी इस यात्रा के बारे में लिखूं। मैं आपको बाबा के विदेश के भक्तों और मन्दिर के बारे में कुछ बताऊंगा। मैं और मेरी पत्नी उमा U.K. में तीन महीनों की गर्मियों की छुट्टियों में बेटे से मिलने गए। हमने 22 मई 2025 वीरवार बाबा के दिन यात्रा की शुरूआत की और हमारी वापसी भी 22 अगस्त वीरवार की थी। वहां 3-4 दिन के बाद Leaister (U.K.) बाबा के मन्दिर माथा टेकने गए। हम जब भी U.K. जाते हैं तो बाबा के मन्दिर ज़रूर माथा टेकने जाते हैं। वहां बाबा के खूबसूरत स्वरूप को देखकर दिल बहुत खुश हुआ और वहां भक्त भी काफी आ-जा रहे थे। फिर आया 'गुरू पूर्णिमा' का दिन। उस दिन हम सभी मैं, मेरी पत्नी, बेटा और बहु साथ में दोनों पोतों को लेकर बाबा का आशीर्वाद लेने मंदिर पहुंचे। मन्दिर की सजावट देखने लायक थी। लग रहा था कि हम U.K. नहीं शिरडी में हैं। बाबा के भक्तों से पूरा दरबार भरा हुआ था। दिल को वहां जाकर बहुत सुकून मिला और कुछ देर वहां रूक कर हम वापस घर आ गए। मेरे बेटे का पूरा परिवार भी साई भक्त है। कुछ दिनों बाद हमारे घर के नज़दीक जो गुजराती परिवार रहता था, उनके माता-पिता भारत से आए। उन्होंने एक दिन रात को हमारे परिवार को dinner पर बुलाया। वहां मैंने उनके घर बाबा की मूर्ति देखी तो उनसे पूछा कि आप बाबा को मानते हैं, वे लोग मेरी ही उम्र के थे, 69 साल के, वो बोले जब से मैंने होश संभाला है तभी से बाबा को मानता हूं। गुजरात से शिरडी ज़्यादा दूर नहीं है, हम अक्सर वहां से बाबा के दर्शन करने के लिए शिरडी जाते हैं। हमारे सारे परिवार की बाबा पर बहुत आस्था है। उन्होंने मुझे साई सच्चरित्र जो गुजराती में था दिखाया तो मैंने कहा मैंने भी साई सच्चरित्र सावन मास में पढ़ना शुरू किया है और उसको बताया कि मैं इंडिया से श्री साई सुमिरन टाईम्स न्यूज़पेपर लाया हूं, पिछले महीने की। मैंने पढ़ ली है, वो मैं आपको दूंगा, आप उसे ज़रूर पड़ना और देखना कि बाबा के बारे में भक्तों के क्या अनुभव हैं और इसे पढ़कर इंडिया जाकर किसी बाबा के भक्त को दे देना ताकि बाबा का घर-घर प्रचार हो। हम बहुत देर तक बाबा के विषय में बातें करके घर लौट आए। अगले दिन मैंने उनको श्री साई सुमिरन टाइम्स पेपर भेज दिया। मुझे खुशी हुई कि विदेश में मुझे बाबा के भक्त मिले।

आखिरकार हमारे इंडिया वापस आने का समय करीब आने लगा और बाबा के दरबार शिरडी जाने की दिल में कशिश बढ़ती जा रही थी क्योंकि मैं 2008 से लगातार जा रहा था, दो साल कोरोना के छोड़कर। पिछले साल मैं पहली बार 400 साई भक्तों के साथ शिरडी गया था। जो एक यादगार यात्रा थी। इस साल उस जत्थे की शिरडी जाने की तारीख अभी तय नहीं हुई थी। पिछले साल 4 सितम्बर की तारीख थी। मैंने जालन्धर अपनी साली जी के बेटे दीपक को फोन किया वो पिछले साल मेरे साथ गया था। उसने बताया कि जत्था 25 अगस्त सोमवार को जा रहा है। मैंने कहा मैं इंडिया 22 अगस्त को पहुंच जाऊंगा। तुम मेरी टिकट की बात करो। कुछ देर बाद उसका फोन आया कि अपना आई. डी. प्रूफ भेजो। मैंने भेज दिया। फिर उसने बताया कि हमारी टिकट 12000 रूपये में तत्काल में होगी जो आमतौर पर 10000 रूपये में होती थी। मैंने कहा कोई बात नहीं तुम करवा दो। कुछ दिनों बाद फोन आया कि उसकी बात हो गई है वो कह रहे हैं आप अपनी तैयारी रखें। आ गया 21 अगस्त, वीरवार का दिन हमारी वापसी का। रात की फ्लाईट थी हम 3 बजे वहां से ज्यों ही निकलने को तैयार हुए, घर के मंदिर में बाबा की मूर्ति के सामने माथा टेकने को जैसे ही खड़ा हुआ तो मेरी फोन की घंटी बजी। दीपक का फोन था उसने कहा कि मेरी टिकट हो गई है। 12000 की जगह 10000 में। जिस व्यक्ति का जाना कैंसल हुआ वो मेरी ही उम्र, मेरे ही नाम परवीन की है। फर्क सिर्फ इतना है कि आप आदमी है और वो औरत है। उसके बात से मेरी आंख भर आई और सभी घर वाले जो पास ही बैठे थे बोले, देखा आपने, आपको इंडिया जाने से पहले बाबा ने बहुत बड़ी खुशखबरी दे दी है, शिरडी आने का न्यौता। इससे पता चलता है कि बाबा में जितनी आपकी लगन है उतना ही बाबा को आपका ध्यान है। जैसे आप बाबा को नहीं भूलते वैसे ही बाबा आपको नहीं भूलते हैं। बाबा की कृपा से हम 22 अगस्त रात को अपने घर पंजाब पंहुच गये। फिर आया वो भाग्यशाली दिन 25 अगस्त, जिस दिन लगभग 400 लोगों के साथ मैंने शिरडी जाना था। ट्रेन का जालन्धर से शिरडी जाने का समय

सुबह 6:40 का था। उस दिन बारिश इतनी थी कि कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था। मुझे मेरा बेटा और पत्नी 42 किलोमीटर दूर बटिंडा से स्टेशन छोड़ने आये और हमारी शिरडी यात्रा आरम्भ हुई। बाबा की पालकी ट्रेन में साथ लेकर हम सब 26 अगस्त को करीब 11:30 बजे शिरडी पहुंचे। होटल में जाकर नहा धोकर बाबा के दर्शन को चले गए। हम शिरडी में तीन दिन रहे और उन तीन दिनों में 9 बार बाबा के दर्शन किए। क्योंकि मेरे और दीपक का सिर्फ एक ही मकसद था कि जितना टाईम मिले बाबा के दर्शनों का आनन्द उठायें, क्योंकि किसी और जगह हमें घूमने की तमन्ना नहीं थी। हमारी यही सोच है कि सभी तीर्थ यहां बाबा के चरणों में हैं। पहले दिन होटल के कम्पाउंड में स्टेज लगाकर बाबा के प्रवचन और भजनों का कार्यक्रम रात 10 बजे तक चला। अगले दिन तपोभूमि कोपरगांव में माथा टेकने गए और शाम को बड़ी धूमधाम से साई भजन संध्या हुई जो रात 11 बजे तक चली। सभी भक्त मस्ती में बाबा के आगे नृत्य कर रहे थे। शिरडी की धरती स्वर्ग है और बाबा शिरडी के हर कोने में अब भी हैं, बेशक शारीरिक रूप से अब वो हमारे बीच नहीं हैं, मगर उनका एहसास पूरी शिरडी में है। उसी दिन शाम को बाबा की पालकी निकलनी थी। पहले बारिश हो रही थी,मगर ठीक शाम 5:30 बजे बारिश बन्द हो गई और 350 से भी ज़्यादा साई भक्त बाबा की मस्ती में नाचते गाते हुए पालकी के साथ चल रहे थे। रास्ते में जब मैं पालकी को अपने कन्धे पर लेने के लिए आगे बढ़ा तो पालकी इतनी भारी थी मानो कि इसमें कोई बैठा हो। कोई इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता कि ऐसा भी हो सकता है, ये सभी साई भक्तों ने महसूस किया। मैंने दीपक की ओर देखा तो वो बोला उस समय बाबा पालकी में विराजमान थे और फिर मैंने संजीव महाजन जी की तरफ देखा जो जत्थे के मैम्बर भी हैं, वो बड़ी दूर से पालकी को कंधा देकर चल रहे थे मगर उनके चेहरे पर कोई शिकन नहीं थी। ऐसा लग रहा था कि बाबा की उन पर विशेष कृपा है। बाद में मेरी संजीव जी से बात हुई कि जो हम महसूस कर रहे हैं क्या यह सच है, तो वो बोले बाबा उस समय पालकी में विराजमान थे क्योंकि यह पालकी इतनी भारी नहीं है। पिछले साल इसी पालकी को उठाकर मैं कुछ दूर चला भी था। तब भी यह उतनी भारी नहीं थी कि मैं कुछ पल पालकी को उठा न सकूं। संजीव महाजन जी ने मेरी टिकट बुकिंग में मदद की थी। क्योंकि दीपक का कज़न जो साथ गया था उनसे उनकी काफी पहचान थी और बाबा के प्रति उनकी बहुत ही निष्ठा है और मुझे वो भक्त बहुत अच्छे लगते हैं जो बाबा से दिलों जान से प्यार करते हैं। एक दिन हमें वी.आई.पी. पास मिले जिससे पांच लोग आरती के समय बाबा की समाधि मंदिर में खड़े हो सकते हैं। हम दो थे। मैंने संजीव महाजन के तीन मैम्बरों के साथ शाम को धूप आरती में बाबा के बिल्कुल करीब से दर्शन किये और एक घंटा बाबा की ओर देखते रहे। मैं अपने साथ बहुत ही सुन्दर फ्लावर की दो बास्केट लेकर दरबार में गया था और दिल ही दिल में बाबा से प्रार्थना कर रहा था कि ये बाबा के चरणों में पहुंच जाएं। जैसे ही मैंने वहां बैठे पुजारी को वो बास्केट दी और कहा कि आप इसे बाबा के चरणों में रख दें तो उसने एक दाई ओर और दूसरी बायें ओर रख दी। मेरा दिल बहुत खुश हो गया कि मेरी मनोकामना पूरी हो गई। इस दौरान हम एक दिन सुबह 3:50 बजे बाबा की काकड़ आरती में गये और पूरी आरती का आनन्द लिया। फिर नाश्ता करके सकोरी धाम जो बाबा के परम भक्त श्री उपासनी महाराज का स्थान है वहां माथा टेकने गए। फिर हम बाबा के समय के साई भक्तों के निवास स्थान पर गए। खण्डोबा मंदिर में महाल्सापति जी के पढ़पोते से मुलाकात हुई। उन्होंने बाबा के बारे में कई बातें बताई। पांच साल पहले मैं उनके पिता मनोहर लाल जी से भी मिल चुका था जो अब नहीं रहे। हम महाल्सापति कुटीर उनके घर भी होकर आए जहां बाबा जाया करते थे। शामा जी का घर तो अब बन्द पड़ा था क्योंकि उनकी बहु जो 98 साल की थी उनका तीन साल पहले देहान्त हो गया था। फिर बायजा मां के घर बाहर से खिड़की में जाकर झांका कभी वहां सभी की तस्वीरें हुआ करती थी मगर अब वो मकान एक मारवाड़ी ने खरीद लिया था। दरवाज़ा वही बाबा के समय का था और कुण्डी भी जिसको बाबा स्पर्श करते थे। हमने उसको चूमा और लक्ष्मी शिन्दे जिनको आखिरी समय में बाबा ने 9 सिक्के दिए थे, उस घर को बाहर से माथा टेका। आखिर में अप्पा जी कोते पाटिल जी के घर पहुंचे। जो हमें सदा आज तक बन्द ही मिलता रहा था। मगर इस बार दरवाज़ा खुला था। हम दोनों ने अन्दर प्रवेश किया। सामने गणेश जी की बड़ी मूर्ति थी। माथा टेककर दीवार पर लगी तस्वीरों को माथा टेक कर हम ने वहां बैठी एक महिला को देखा जो टेबल पर बैठी थी, उससे मैंने कहा मैं जब भी आता हूं तो यह बायजा मां का घर बन्द ही होता था। इस बार खुला मिला। वो बोली यह घर बायजा मां का नहीं है उसने फोटो की ओर इशारा किया और और बोली, यह फोटो अप्पा जी कोते पाटिल की है। बायजा मां और तात्या का घर उस छोटी सी गली के अन्दर था जो अब बिक चुका है यह जो साथ की तस्वीर है यह अप्पा कोते जी के बेटे की है यह सभी बाबा के परम भक्त थे और इनके आगे दो बेटे थे जिनमें से एक की मैं बहू हूं। मेरा नाम मीनाक्षी है। मैं ऊपर रहती हूं। जब कभी आपको यह दरवाज़ा बन्द मिले तो आप मुझे ऊपर से बुला लिया करें। मीनाक्षी जी ने बताया कि उनके पूर्वजों ने यह बताया था कि बाबा ने उस समय कहा था, तुम देखना एक समय ऐसा आएगा जब शिरडी में लोग चींटियों की तरह नज़र आऐंगे और आज ऐसा लग रहा है कि बाबा की वह बात बिल्कुल सच साबित हुई है। फिर हम वहां उस चौखट पर माथा टेक कर वापस लौट आए। दिल में बहुत खुशी हुई कि मुझे बाबा के परम भक्तों के वंशजों को मिलने का मौका मिला। बाबा की एक-एक बात बारीकी से जानकर दिल को शांति मिलती है। बाबा के म्यूज़ियम में जब भी जाता हूं तो एक-एक चीज़ को बड़े गौर से देखता हूं और सोचता हूं कि यह चीज़े कितनी भाग्यशाली हैं जिनको कभी बाबा ने स्पर्श किया था। जिसकी बाबा पर सम्पूर्ण आस्था है उनको वहां सिर्फ चार चीज़ें ही मिलनी चाहिए। बाबा के दर्शन, उदि, लड्डू प्रसाद और नीम के मीठे पत्ते, इसे पाकर भक्त धन्य हो जाते हैं। फिर आया वापसी 29 अगस्त का दिन, भारी दिल से विदा लेने का। जैसे कोई मायके से सुसराल वापस आने को होता है। सुबह बाबा के दरबार में माथा टेक कर हम दोपहर 12 बजे वहां से बहुत सी यादें लेकर वापस लौट आए। अब इन यादों के सहारे पूरा साल बीतेगा कि कब फिर हम बाबा के दर्शनों को जाएगें। ऐसे साईनाथ महाराज जी को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम। **-परवीन आनन्द,**

बाबा के बच्चे

दिल्ली: कई बच्चे बाबा की भक्ति विरासत में लेकर आते हैं। ऐसा ही एक बाबा का नन्हा भक्त दैविक शर्मा जो बीकानेर में रहता है, बाबा का दिवाना है। वो तीसरी

कक्षा में पढ़ता है और वो अक्सर अपने मम्मी पापा के साथ मंदिर आता है अगर कभी उसकी मम्मी उसको घर में छोड़कर मंदिर चली जायें तो वो हंगामा खड़ा कर देता है। 9 वर्षीय दैविक ने अपनी कल्पना से अपनी कॉपी में बाबा का एक चित्र बनाया जो बाबा के उस नन्हे भक्त की भक्ति को दर्शाता है। बाबा का आशीर्वाद उस पर सदा बना रहे। **-पूर्णिमा तन्खा**

साई मंदिर सारसौल अलीगढ़ का 25वां स्थापना दिवस

अलीगढ़: उत्तर भारत के प्रसिद्ध सिद्धपीठ मंदिर श्री साई बाबा सारसौल, अलीगढ़ का 25वां स्थापना दिवस रजत जयंती स्थापना वर्ष के रूप में मनाया गया। संस्थापक

अध्यक्ष धर्मप्रकाश अग्रवाल और सचिव राजकुमार गुप्ता ने बताया कि मंदिर प्रांगण में पांच दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अंतिम दिन गुरुवार को श्री साई राम भजन मंडल के साई भक्त अमित उपाध्याय, संदीप नक्षत्र और राजीव उपाध्याय ने अपने सहयोगियों के साथ एक से बढ़कर एक भजन, हारा हूं बाबा, मुझे तुझ पर भरोसा है, साई नाथ तेरे हज़ारों हाथ, हे साई नाथ प्रणाम आपके चरणों में आदि भजन सुनाए, जिस पर भक्तों के साथ अतिथि भी जमकर झूमे। मंदिर के रजत जयंती वर्ष के अंतिम दिन मुख्य अतिथि महापौर प्रशांत सिंघल रहे। समिति के रवि प्रकाश अग्रवाल और प्रदीप अग्रवाल ने बताया कि रजत जयंती वर्ष के आयोजनों में नि:शुल्क नेत्र परीक्षण व मोतियाबिंद ऑपरेशन रजिस्ट्रेशन शिविर, शिव विवाह, संगीतमयी सुंदरकांड पाठ, माता की चौकी और अंतिम दिन गुरुवार को भव्य साई भजन संध्या का आयोजन हुआ। इस दौरान प्रमुख रूप से रमेश चंद्र अग्रवाल, रमन गोयल, राजीव जैन, पंकज धीरज, ललित अग्रवाल मुंबई, राकेश बतरा, प्रमोद गुप्ता, रोहित कोचर, संदीप सागर आदि उपस्थित रहे।

मेरा प्यारा साई

साई के मंदिर के सामने मेरा घर हो,
कभी मैं साई से मिलने जांऊ,
कभी साई मुझसे मिलने आये,
यह आना जाना यूं ही लगा रहे,
साई से मेरा लगाव यूं ही बढ़ता रहे,
साई का हाथ मेरे सिर पर यूं ही बना रहे,
साई मेरे, शिरडी में मुझे बुलाते रहें,
और अपना प्यार मुझ पर लुटाते रहें।

-भव्या दत्ता, शिव नगर

क्यों डरें ज़िंदगी में क्या होगा?
हर वक्त क्यों सोचे
कि बुरा होगा,
बढ़ते रहें मंज़िलों की ओर हम,
कुछ भी न मिला तो क्या?
तजुर्बा तो नया होगा।

प्रतियोगिता नम्बर 239

नीचे लिखी पंक्तियां श्री साई सच्चरित्र से ली गई हैं, आपको बताना है कि ये कौन से अध्याय से हैं। सही जवाब भेजने वाले को मिलेगा इनाम। अपने जवाब हमें 9818023070 पर whatsapp करें या saisumirantimes@gmail.com पर ई-मेल करें। अपना पता व फोन नंबर अवश्य लिखें।

1. भक्त तीन प्रकार के हैं- (1) उत्तम (2) मध्यम और (3) साधारण।
2. केवल मेरे वे गुरू ही जानते हैं कि किस प्रकार उनके द्वारा कुएं में मुझे उलटा लटकाना मेरे लिए परमानंद का कारण सिद्ध हुआ।

ईनाम- कंचन मेहरा के सौजन्य से शिरडी आने जाने की स्लीपर क्लास की दो टिकटें। (शिरडी टिकट तीन महीने तक ही मान्य है)

पिछले माह की प्रतियोगिता के सही उत्तर: 1. अध्याय- 9, अध्याय- 10

सही जवाब भेज कर शिरडी यात्रा की 2 टिकटों (स्लीपर क्लास) का पहला इनाम जीता है उत्तम नगर दिल्ली से मनोज कुमार ने आपको जल्द ही ईनाम भेजे जायेंगे।

सम्पादन मण्डल

मुख्य संरक्षक -सी.एल. टिक्कू, स्वामी बलदेव भारती, राकेश जुनेजा, सुमित पोंदा, मोतीलाल गुप्ता, पवार काका, सर्वेंट्स ऑफ शिरडी साई
मुख्य सलाहकार -स्वामी सत्यानंद महाराज, संदीप सोनवणे, सुरेन्द्र सक्सैना, भरत मेहता, अशोक सक्सैना, सुनील नागपाल, नीरज कुमार, जी.आर. नंदा, अशोक खन्ना, मुकुल नाग, मंजु बवेजा
सलाहकार -महेन्द्र दादू, भीम आनंद, मीता साई, के.बी. शर्मा, के.सी. गुप्ता, नरेश मदान, अमित माथुर, सचिन जैन, सुरेन्द्र सेठी, संदीप अरोड़ा
विशेष सहयोग -अमित सरीन, महेन्द्र शर्मा
सम्पादक -अंजु टंडन
सह सम्पादक -शिवम चोपड़ा
उप सम्पादक -पूनम धवन,
डिज़ाइनर -गायत्री सिंह
कानूनी सलाहकार -प्रेमेन्द्र ओझा
सहयोगी -ज्योति राजन, कृष्णा पुरी, मीरा साव, अंजली, कंचन मेहरा, मीनू सिंगला, साईना पुरी, दिनेश माथुर, सुनीता सग्गी, विवेक चोपड़ा, सीमा सौंधी, आंचल मारवा, संजय उप्पल, शैली सिंह, किरण, विशाल भाटिया, सुषमा ग्रोवर, गुरबचन सिंग, उषा अरोड़ा, योगेश शर्मा, उषा कोहली, रूपलाल अहूजा, राजीव भाटिया, प्रेम गुलाटी, योगेश बहल, नीलम खेमका, सीमा मेहता, वर्षा शर्मा, नीलू जग्गी, गीतांजलि छाबड़ा।

-प्रशासनिक कार्यालय-
F-44-D, MIG Flats, G-8 Area, Hari Nagar,
New Delhi -110064, Ph- 9818023070, 9212395615
(सभी पद अवैतनिक हैं)

Publication date- 5th October 2025, Posting date- 9th/10th October 2025, Place of posting- Naraina

साई धाम ज्ञान पुरस्कार से शिक्षाविद सम्मानित

फरीदाबाद: दिनांक 4 सितम्बर को सेक्टर 86 स्थित साई धाम में सह संस्थापक स्व. कांता गुप्ता के जन्मदिन के अवसर पर 10 विद्यालयों के प्रधानाचार्यो और निर्देशकों को साई धाम ज्ञान पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम का प्रारम्भ मुख्य अतिथि IAS अधिकारी अनुपमा अंजली, शिरडी साई बाबा स्कूल की प्रधानाचार्या डॉ. बीनू शर्मा, साई धाम के वरिष्ठ उपाध्यक्ष संदीप गुप्ता, उपाध्यक्ष पूनम गुप्ता, कोषाध्यक्ष प्रदीप सिंघल व सचिव ममता गुप्ता द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। तत्पश्चात शिरडी साई बाबा स्कूल के छात्र-छात्रओं द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिसने सभी का दिल जीत लिया। साई धाम के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. मोतीलाल गुप्ता ने सभी पुरस्कृत प्रधानाचार्यो व निर्देशकों को शुभकामनाऐं देते हुए कहा कि एक शिक्षक समाज के लिए प्रेरणा स्त्रोत होता है। शिक्षकों का सम्मान मात्र शिक्षक दिवस वाले दिन नहीं बल्कि वर्ष के 365 दिन होना चाहिए। मुख्य अतिथि IAS अधिकारी अनुपम अंजलि ने साई धाम के कार्यो की प्रशंसा करते हुए कहा कि डॉक्टर मोतीलाल गुप्ता का जीवन हम सबके लिए प्रेरणादायक है। उम्र के इस पड़ाव में भी आप जिस प्रकार समाज कल्याण के लिए कार्य कर रहे हैं, वंचित छात्रों को जिस प्रकार शिक्षा दे रहे हैं इससे हम बहुत कुछ सीखते हैं। साथ ही उन्होंने कहा कि यदि साई धाम जैसी शिक्षा सरकारी स्कूलों में भी दी जाये तो शिक्षा का स्तर और ऊँचा हो सकता है। साई धाम एडवाइज़री बोर्ड के सदस्य सी. के. मिश्रा द्वारा कक्षा दसवीं के 4 मेधावी छात्रों को भी पुरस्कृत किया गया। साई धाम द्वारा रावल इंटरनेशनल स्कूल के प्रधानाचार्य सी.वी. सिंह, मार्डन डेल्ही इंटरनेशनल स्कूल के निर्देशक राजीव गिरधर, ग्रैंड कॉलम्बस इंटरनेशनल स्कूल की प्रधानाचार्या रूपम सचदेवा, अग्रवाल पब्लिक स्कूल की प्रधानाचार्या रचना भल्ला, श्री जी स्कूल की प्रधानाचार्या संध्या तिवारी, महादेव देसाई सीनियर सेकेंडरी स्कूल की प्रधानाचार्या नीलम दुरेजा, आईडियल पब्लिक स्कूल की निर्देशक व प्रधानाचार्या सुदेश भड़ाना, लेखक व मोटीवेटर ए.डी. भट्ट और सतयुग दर्शन संगीत कला केंद्र के प्रधानाचार्य दीपेंद्र कांत को साई धाम ज्ञान पुरस्कार से सम्मानित किया गया। रोटरी क्लब फरीदाबाद संस्कृति द्वारा शिरडी साई बाबा स्कूल की सभी शिक्षकों को सम्मानित किया गया। पुरस्कृत प्रधानाचार्यो की ओर से बोलते हुए सी. वी. सिंह ने साई धाम द्वारा किये जा रहे कार्यो की और इस पहल की सराहना की। धन्यवाद ज्ञापन साई धाम के वरिष्ठ उपाध्यक्ष संदीप गुप्ता ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम संचालन आज़ाद शिवम् दीक्षित, चित्रिता विश्वास और नोबिता ने सुचारु रूप से किया। कार्यक्रम में डॉ सबिता कुमारी, ममता अरोड़ा, विधु ग्रोवर, सुमन सिंह, गगन दीप कौर, सी.के. मिश्रा, रश्मी मिश्रा, संदीप सिंघल, यू.एस. अग्रवाल, शशि बंसल, डी.एन. कथूरिया, अमित आर्या, बी.एस. जैन, दीपक कपिल, नरेंद्र जैन, विजय लक्ष्मी राघवन, ईशा गुप्ता, एम.एल. मेहता, इन्दु वर्मा, रवि गर्ग, सुनील खंडूजा, रूपा खंडूजा, अलका सिंघल, मनोहर पुण्यानी, मोना सिंगला, विनीता सिंगला, दिव्या भारती, सोनिया भारती, संचित, के. ए. पिल्ले, विकास मल्होत्रा आदि सम्मानित अतिथि शामिल हुए। **-के.ए. पिल्ले**

संगीता ग्रोवर सम्मानित

दिनांक 14 सितम्बर 2025 को हिन्दी दिवस के अवसर पर काव्योत्सव 2025 के अन्तर्गत अक्टूबर 2024 से सितम्बर 2025 तक हिंदी भाषा की पुस्तक के प्रकाशन में सहभागिता के लिए श्रीमती संगीता ग्रोवर जी को 'श्रेष्ठ हिन्दी सेवा सम्मान' से सम्मानित किया गया। ये सम्मान संगीता ग्रोवर जी को हाल ही में प्रकाशित उनकी पुस्तक 'एहसास ए दिल' के लिए दिया गया। साई भक्त संगीता जी एक बेहतरीन गायिका, लेखिका एवं कवियत्री भी हैं और साई भजनों का गुणगान भी करती हैं। **-गायत्री सिंह**

साई अमृत पत्रिका का वार्षिक महोत्सव

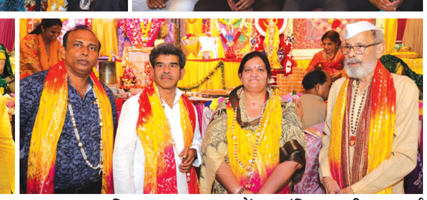

गाज़ियाबाद: दिनांक 14 सितम्बर 2025 को साई अमृत मासिक पत्रिका के 21वें वर्ष में प्रवेश करने के शुभ अवसर पर साई अमृत परिवार सेवा समिति गाज़ियाबाद एवं श्री शिरडी साई सेवा समिति, गाज़ियाबाद द्वारा वार्षिकोत्सव का आयोजन सामुदायिक केन्द्र, नेहरू नगर, गाज़ियाबाद में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सायं 6 बजे दीप प्रज्वलित करके किया गया। उसके बाद भजनों का गुणगान आरंभ हुआ। सर्वप्रथम भजन सम्राट हेमकुश अनेजा जी ने अपनी अत्यन्त मधुर आवाज़ में एवं सूफी अंदाज़ में भजनों का गुणगान किया। उनके मस्ती भरे भजनों का सभी भक्तों ने खूब आनन्द लिया और कई भक्तों ने नृत्य भी किया। उनके बाद भजन सम्राट प्रमोद मेढ़ी एवं राधा राठौर जी ने अपने-अपने निराले अंदाज़ में भजनों की प्रस्तुति दी। उनके भक्तिमय भजनों से पूरा माहौल साईमय हो गया। मंच संचालन श्री राम शिशौदिया एवं श्री हरीश अनमोल द्वारा बखूबी किया गया।

इस दौरान महेन्द्र पंडित जी ने साई अमृत पत्रिका के 21वें वर्ष के प्रवेशांक का विमोचन किया। उसके बाद वहां आमंत्रित सभी अतिथियों का स्वागत किया गया जिनमें श्री डी.पी. यादव, श्री डॉ. भीष्म कपूर जी, श्री राकेश जुनेजा, श्री प्रशान्त चौधरी, श्री जितेन्द्र यादव, श्रीमती वर्षा यादव, श्री जे.पी. शिशौदिया, श्री वी. के. शर्मा, श्री अशोक थापा, श्री जे.के. गौड़, श्री प्यारे लाल जाटव, श्री अनिल शर्मा, श्री विकास अरोड़ा, श्री दामोदर असोपा, श्री रवि वर्मा, श्री संजय गुप्ता व श्री राज नारायण यादव शामिल रहे।

कार्यक्रम का आयोजन श्री महेन्द्र पंडित जी के मार्ग दर्शन में साई अमृत परिवार के सदस्यों श्रीमती पूनम यादव, श्री विकास खुल्लर, श्री शरद मित्तल, श्री नरेश भाटिया, श्री विजय अग्रवाल, श्री राजकुमार करवाल, श्री विवेक चतुर्वेदी, श्री सतीश धवन, श्री अशोक शर्मा एवं श्री मनोज कुमार गुप्ता द्वारा किया गया। महेंद्र पंडित जी बधाई के पात्र हैं जिन्होंने सफलता के साथ साई अमृत पत्रिका के 21वें वर्ष में प्रवेश किया। महेंद्र पंडित जी ने 20 वर्ष पत्रिका को दिए हैं। उसी का ही फल है कि आज साई अमृत पत्रिका साई भक्तों में लोकप्रिय है। श्री साई सुमिरन टाइम्स की तरफ से महेंद्र पंडित जी और उनकी पूरी टीम को हार्दिक शुभकामनाऐं एवं बधाई। **-उषा कोहली**

शिरडी धाम साई मंदिर विकासपुरी में साई भजन

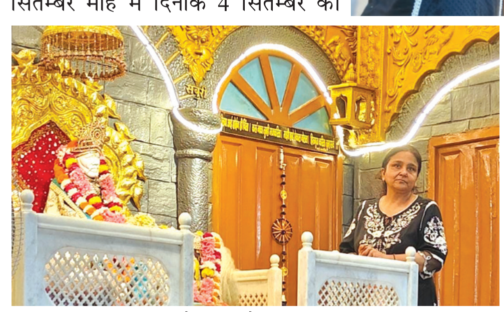

दिल्ली: शिरडी धाम, केजी-1-केजी-2, डिस्पेंसरी रोड, विकासपुरी में शिरडी साई बाबा का अति सुंदर मंदिर है जहां बाबा की प्रतिमा सबको अपनी तरफ आकर्षित करती है। इस मंदिर में हर वीरवार को साई भजन संध्या एवं पालकी का आयोजन किया जाता है। सितम्बर माह में दिनांक 4 सितम्बर को परमजीत सिंह जी ने भजनों का गुणगान किया, 11 सितम्बर को अनुभूति अनुभूति ने, 18 सितम्बर को सौरभ जी एवं साथी ने और 25 सितम्बर को साहिल वर्मा जी ने भजनों का गुणगान किया। हर वीरवार को भजनों का आनन्द लेने बहुत से भक्त यहां आते हैं और मंदिर का आंगन भक्तों से भरा रहता है। सभी भक्त भजनों का आनंद लेते हैं और बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। भजनों के अंत में मंदिर परिसर में बाबा की पालकी निकाली जाती है। अंत में आरती की जाती है। इस मंदिर में बच्चे भी भक्तों को तिलक लगा कर, जल एवं फूल वितरित कर अपनी सेवा देते हैं। भजनों का आनन्द लेने के बाद सभी भक्त पंक्तिबद्ध होकर प्रसाद एवं स्वादिष्ट भंडारे का आनन्द लेते हैं। सर्वप्रथम आस पास के गरीब बच्चों को प्रसाद एवं भंडारा दिया जाता है उसके बाद अन्य सभी भक्तों को प्रसाद वितरित किया जाता है।

मंदिर के संस्थापक स्व. श्री विक्रम महाजन जी ने अपने जीवन काल में गरीबों और ज़रूरतमंद लोगों की सदा मदद की है, सभी भक्त उनकी कमी को हमेशा महसूस करते हैं। उनकी पत्नी डा. मीनू महाजन जी उनके द्वारा शुरू किये गये हर कार्य को कुशलता से आगे बढ़ा रहीं हैं जो उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

कार्यक्रम का आयोजन मंदिर की संस्थापक डॉ. मीनू महाजन एवं श्री विशाल सेठ द्वारा किया जाता है। **-कृष्णा पुरी**

साई धाम हंबड़ा रोड लुधियाना द्वारा मानव सेवा

लुधियाना: दिनांक 28 सितम्बर 2025 को साई धाम ट्रस्ट, हंबड़ा रोड, लुधियाना एवं गर्ग परिवार की तरफ से सीनियर सीटिज़न्स को और बाल भवन के बेसहारा व अनाथ बच्चों को मंदिर की तरफ से लंगर करवाया गया। इस अवसर पर स्वादिष्ट लंगर लेकर सभी सीनियर सिटीज़न्स एवं बच्चे बहुत खुश नज़र आए। सभी ने लंगर का पूरा आनन्द लिया। लुधियाना शहर के कई गणमान्य व्यक्ति भी इस आयोजन में शामिल हुए। सभी बच्चों ने बाबा से आशीर्वाद भी लिया। संजीव अरोड़ा ने बताया कि साई धाम ट्रस्ट द्वारा हर महीने सीनियर सिटीज़न्स और बेसहारा व अनाथ बच्चों के लिए लंगर लगाया जायेगा। साई धाम ट्रस्ट मानव सेवा के कार्यो में हमेशा आगे रहती है और समय-समय पर ज़रूरतमंद लोगों की हमेशा ही मदद करती आई है जो अत्यन्त सराहनीय है। **-संजीव अरोड़ा**

साई धाम मंदिर
उप्पल साउथएण्ड कालोनी सैक्टर-49, गुरूग्राम में शुभ कार्यों के लिए 2 हाल एवं 5 कमरे उपलब्ध हैं।
सम्पर्क करें:
श्री अरूण मिश्रा
फोन: 9350858495, 0124-2230021

SAI DHAM
OFFERS
HOME LIKE STAY & HOME LIKE FOOD
GUEST FACILITIES IN SAIDHAM
- 45 Well Furnished AC Rooms with Modern Amenities
- TV with Satellite channels/Intercom facility
- Geyser in each room to ensure round the clock hot water
- "Babaji" The Pure Veg. Restaurant & 3 Hall for Function
- Round the clock power backup with AC
- Ample car parking
- Situated just 10 minute walking AIIMS/ Safdarjung Hospital.

Address : No.- 2 August Kranti marg Hauz Khas, New Delhi
Contact No. : 011-41656601, 9650053654